सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 13, नई दिल्ली । सोमवार, 24 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कष्ट सहने पर ही हमें अनुभव होता है और दर्द हो, तभी हम सीख पाते हैं।

03 दिल्ली हाईकोर्ट के जज के यहां नोटों के बंडल नहीं, न्यायपालिका की...

06 सूर्य की रोशनी से सेहत से टूटता रिश्ता

08 सोनयोदिया में दो मंत्रियों के खिलाफ प्रदर्शन, लोगों ने डिप्टी कलेक्टर को हिरासत में लिया

दिल्ली यातायात पुलिस ने जारी की एडवाइजरी

रिंग रोड पर लग सकता है 2 दिन जाम

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली में रिंग रोड पर एम्स से लाजपत नगर जाने की दिशा में मरम्मत कार्य किया जा रहा है। इसकी वजह से इस रास्ते पर अगले दो दिनों तक ट्रैफिक जाम की संभावना है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में रिंग रोड पर एम्स से लाजपत नगर जाने की दिशा में मरम्मत कार्य किया जा रहा है। इसके लिए मूलचंद अंडरपास के ऊपर खुदाई की गई है। इसकी वजह से एम्स से लाजपत नगर जाने की दिशा में वाहन चालकों को जाने में जाम का सामना करना पड़ रहा है। इस कार्य के चलते अगले दो दिनों तक यहां यातायात प्रभावित रहने की संभावना है। ट्रैफिक पुलिस ने लोगों से वैकल्पिक मार्गों का इस्तेमाल करने की सलाह दी है।

सोहना रोड पर मरम्मत कार्य शुरू इस बीच फरीदाबाद के हार्डवेयर सोहना रोड का मरम्मत कार्य शनिवार को शुरू कर दिया गया। पहले दिन वाहन चालकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। दिनभर सड़क की खुदाई और

मरम्मत कार्य जारी रहने के कारण कई जगहों पर यातायात प्रभावित रहा। हालांकि, सुबह के समय ट्रैफिक सामान्य था, लेकिन शाम होते-होते स्थिति बिगड़ गई।

एफ.एम.डी.ए. की ओर से की जा रही मरम्मत हार्डवेयर-सोहना रोड कई सालों से खस्ताहाल अवस्था में है। सीमेंटेड सड़क कई स्थानों पर बीच से टूट चुकी है। चौक-चौराहों के ब्रेकर जर्जर हालत में है। सड़क के बीच डिवाइडर की ग्रिल टूट गई। इससे सड़क दर्घटनाओं का खतरा बढ़ गया है। इसे देखते हुए एफ.एम.डी.ए. की ओर से सड़क का मरम्मत कार्य शुरू किया गया है। इस दौरान सड़क की एक लेन बंद कर दूसरी लेन से वाहनों की आवाजाही शुरू रहेगी।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

आर.सी.एस.एस. ड्राईवर सेवा एसोसिएशन म.प्र. ने मांग की राष्ट्रीय चालक आयोग के गठन की

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। संगठन ने महामहिम, श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी राष्ट्रपति महोदया, यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह, केंद्रीय परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी से देशभर के 30 करोड़ के आसपास चालकों के भविष्य के मध्य नजर राष्ट्रीय चालक आयोग गठन करने हेतु पत्र लिखकर अपनी मांग रखी। पत्र में बताया संगठन देश के तमाम चालकों के मध्यम से इस गंभीर विषय पर संज्ञान करवाना चाहता है कि देशभर के चालकों के भविष्य एवं परिवार के पालन पोषण हेतु सड़कों पर समस्या आए दिन बढ़ती जा रही हैं। देशभर के सारथी चालकों के लिए गंभीर समस्याएं है पुलिस, ट्रैफिक पुलिस एवम् परिवहन विभाग का अत्याचार एवं शोषण प्रताड़ित किए जाने जैसी घटनाएं आए दिन संगठन के सामने आती रहती हैं। जिस कारण चालक आर्थिक एवं मानसिक प्रताड़ना झेलने के लिए मजबूर है जिसकी वजह से दिल्ली समेत देशभर के चालक अपने परिवार के पालन पोषण हेतु अपनी जिंदगी सड़कों पर अत्याचार एवं असामयिक दुर्घटना के जरिए खत्म हो रहे हैं। जिस पर केंद्र एवं राज्य सरकारों का ध्यान अभी तक केंद्रित नहीं है अर्थात चालकों की इस जटिल समस्या के मध्य

नजर देश की केंद्र सरकार के लिए गंभीरतापूर्वक विषय हैं जिसके मध्य नजर ना तो केंद्र सरकार पहल करने या ना ही सुनने को राजी है और ना ही राज्य सरकारें जबकि देश की दूसरी अर्थव्यवस्था देश के चालकों पर टिकी हुई है। संगठन विनम्र अनुरोध करते हुए कहना चाहता है कि महामहिम राष्ट्रपति जी चालकों के परिवार के पालन पोषण एवं चालकों के उज्जवल भविष्य के लिए केंद्र सरकार को आप अपने माध्यम से आदेश पारित करके राष्ट्रीय चालक आयोग का गठन केंद्र सरकार द्वारा किया जाए एवं राज्य स्तर चालक वेलफेयर बोर्ड पर सरकारों को आदेश दिया जाए जिससे कि देश भर के चालकों को आपके माध्यम से राहत मिल सके।

ड्राइवरों की सुरक्षा व स्वास्थ्य के लिए ए.आई.एम.टी.सी. के सहयोग से टाटा मोटर्स और टीवी9 द्वारा जागरूकता कैंप आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के यूपी बॉर्डर क्षेत्र में भारत की सबसे बड़ी ट्रक निर्माता कंपनी टाटा कमर्शियल व्हीकल्स और टीवी9 ने संयुक्त रूप से ड्राइवरों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और जागरूकता के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण कैंप का आयोजन किया। इस कैंप में टाटा मोटर्स द्वारा मोबाइल वैन स्थापित की गई, जिसे क्लासरूम के रूप में परिवर्तित कर ड्राइवरों को सड़क सुरक्षा, ब्रेक के सही उपयोग, सड़क पर ब्रेकर्स एवं बने निशानों और ट्रैफिक सिग्नल्स को पहचानने और पालन करने के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। ए.आई.एम.टी.सी अध्यक्ष ने किया उद्घाटन

इस कैंप का उद्घाटन **ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस (ए.आई.एम.टी.सी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हरीश सभरवाल** द्वारा किया गया उनके साथ ए.आई.एम.टी.सी की टीम के अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के कई ट्रक व बस मालिक, चालक और ऑपरेटर भी बड़ी संख्या में शामिल हुए और उन्होंने इस कैंप का पूर्ण लाभ उठाया। **स्वास्थ्य परीक्षण और फ्री चश्मा वितरण का वादा** इस अवसर पर ड्राइवरों का शुगर, ब्लड प्रेशर और आई टेस्ट जैसे स्वास्थ्य परीक्षण भी किए गए। जिन लोगों को दृष्टि संबंधी समस्या पाई गई, उन्हें मुफ्त चश्मा उपलब्ध कराने की अनुशंसा की गई। ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस ने वादा किया कि इन ड्राइवरों के लिए मुफ्त चश्मों की व्यवस्था की जाएगी ताकि वे सड़क पर सुरक्षित ड्राइविंग कर सकें।

सुरक्षा व ड्राइवरों के कल्याण पर ए.आई.एम.टी.सी की प्रतिबद्धता डॉ. हरीश सभरवाल ने अपने संबोधन में ड्राइवरों की सुरक्षा का महत्व बताते हुए सरकार द्वारा ड्राइवरों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रयासों को उजागर किया। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि ए.आई.एम.टी.सी ड्राइवरों के कल्याण और इस तरह के सुरक्षा जागरूकता कैंप को देशभर में आयोजित करने के लिए सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करेगा।टाटा मोटर्स और टीवी9 को धन्यवाद। डॉ. हरीश सभरवाल ने टाटा मोटर्स और टीवी9 का इस महत्वपूर्ण पहल के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सड़क सुरक्षा और जान-माल की रक्षा के लिए यह एक अनुकरणीय प्रयास है। इस कार्यक्रम के समापन पर ट्रांसपोर्ट कम्युनिटी ने भी इस कैंप की सराहना की और इसमें शामिल होकर इसका पूरा लाभ उठाया।

कार्यक्रम का सफल समापन चाय-नाश्ते के साथ यह कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें सभी उपस्थित लोगों ने टाटा मोटर्स और ए.आई.एम.टी.सी के इस सामूहिक प्रयास की सराहना की और ऐसे आयोजनों को निरंतर जारी रखने का आग्रह किया।

ट्रेनों के आगमन में देरी को लेकर नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भारी भीड़, अफरा-तफरी का माहौल

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भारी भीड़ और अफरा-तफरी का माहौल देखने को मिला। शिव गंगा एक्सप्रेस स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस जम्मू राजधानी एक्सप्रेस लखनऊ मेल और मगध एक्सप्रेस जैसी ट्रेनों के प्रस्थान में देरी के कारण यात्री प्लेटफॉर्म पर जमा हो गए। भीड़ इतनी बढ़ गई कि स्थिति लगभग भगदड़ जैसी हो गई। पुलिस ने अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात कर भीड़ को नियंत्रित किया।

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 12 और 13 पर रविवार को शिव गंगा एक्सप्रेस, स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस, जम्मू राजधानी एक्सप्रेस, लखनऊ मेल और मगध एक्सप्रेस जैसी ट्रेनों के प्रस्थान में देरी के कारण भारी संख्या में यात्री इकट्ठा हो गए।

ट्रेनों की लगातार देरी से प्लेटफॉर्म पर भीड़ इतनी बढ़ गई कि वहां अफरा-तफरी का माहौल बन गया। स्थिति लगभग भगदड़ जैसी हो गई, जिससे प्रशासन को तुरंत भीड़ नियंत्रण के उपाय करने पड़े।

प्लेटफॉर्म पर अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात

दिल्ली पुलिस ने बताया कि भारी भीड़ को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए गए। हालांकि, किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। पुलिस का कहना है कि भीड़ का दबाव महाकुंभ जैसे आयोजनों में देखी गई भीड़ प्रबंधन चुनौतियों की याद दिला रहा था।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भारी भीड़ और अफरा-तफरी का माहौल देखने को मिला। शिव गंगा एक्सप्रेस, स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस, जम्मू राजधानी एक्सप्रेस, लखनऊ मेल और मगध एक्सप्रेस जैसी ट्रेनों के प्रस्थान में देरी के कारण यात्री प्लेटफॉर्म पर जमा हो गए। भीड़ इतनी बढ़ गई कि स्थिति लगभग भगदड़ जैसी हो गई। पुलिस ने अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात कर भीड़ को नियंत्रित किया।

स्थिति अब सामान्य

पुलिस के अनुसार, कुछ ट्रेनों के रवाना होने के बाद स्थिति पर काबू पा लिया गया है। स्टेशन पर अब भी सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई है ताकि दोबारा कोई अव्यवस्था न हो।

यात्रियों को हुई परेशानी

ट्रेनों की देरी से यात्री काफी परेशान नजर आए। कई यात्रियों ने रेलवे प्रशासन पर अव्यवस्था का आरोप लगाया और कहा कि सूचना के अभाव में उन्हें लंबा इंतजार करना पड़ा। यात्रियों ने रेलवे से ट्रेनों की समय पर आवाजाही सुनिश्चित करने की मांग की।

रेलवे का बयान

रेलवे अधिकारियों का कहना है कि ट्रेनों में देरी तकनीकी कारणों और परिचालन संबंधी दिक्कतों की वजह से हुई। रेलवे ने यात्रियों से धैर्य बनाए रखने की अपील की है। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

साहसी और कर्मठ होते है कुंभ राशि के जातक

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी.)

धनिष्ठा नक्षत्र के तीसरे चरण से लेकर पूर्वा भाद्रपद के तीसरे चरण तक चंद्रमा का गोचर कुंभ राशि में होता है। कुंभ राशि पुरुष

जाति, स्थिर संज्ञक, वायु तत्व वाली, शीर्षोदय, पश्चिम दिशा की स्वामी

है। कुंभ राशि से पेट के भीतरी भागो का विचार किया जाता है।

इस राशि के स्वामी शनि देव है।

गुण और स्वभावः कुंभ राशि के जातक आकर्षक, सुंदर मुखाकृति वाले, वार्तालाप में कुशल, उदार, अन्वेषक, दृढ़ और कठिन परिश्रमी होते है।इनके होंठ मसाल तथा माथा उन्नत होता है। कुंभ राशि के लोग निष्ठावान, जीवन साथी के प्रति वफादार, कामुक तथा आदर्शवादी होते हैं। कभी कभी ये अव्यावहारिक, उकसाने पर झगड़ालू प्रवृति के हो जाते है।

कैरियरः कुंभ राशि के जातक वैज्ञानिक, इंजीनियर, कंप्यूटर प्रोग्रामर, खगोल वैज्ञानिक, विद्युत विभाग, प्रचारक, रेडियोग्राफर, साहित्यकार, नगर निगम, मैनेजर, रेडियो विभाग, आकाशवाणी, अग्निशमन सेवा, साहित्यकार, ज्योतिषी, हथियार खाना आदि में अपना कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

रोग : कुंभ राशि के लोगो को खून की कमी, रक्त विकार, रीढ़ को हड्डी के रोग, पैर के रोग, नसों का फूलना, टखनों में सूजन आदि रोग हो सकते हैं।

भाग्यशाली दिन : मंगल, बुध और शुक्रवार

भाग्यशाली रंग : क्रीम, पीला, लाल और सफेद

भाग्यशाली अंक : 2,3,6,8,7,9

शुभ रत्न : नीलम

उपायः कुंभ राशि के लोगो को शनिवार का व्रत तथा भगवान शिव की उपासना करना अत्यंत लाभकारी होता है। प्रत्येक शनिवार को भगवान शिव पर काले तिल चढ़ाएं और कपूर से आरती करें।

भगवान शनि को तेल अर्पित करें।

शनि ग्रह स्वभाव, प्रभाव एवं लक्षण

ज्योतिषशास्त्र में शनि ग्रह का विशेष स्थान है। शास्त्रों में शनि को संतुलन व न्याय का ग्रह माना गया है। कई ज्योतिशविदों ने शनि को क्रोधी ग्रह भी माना है और यदि किसी व्यक्ति से कुपित हों जाए तो व्यक्ति के हंसते-खेलते संसार को बर्बाद भी कर देता हैं। इस संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो शनि के प्रभाव से अछूता हो। शनिदेव का नाम सुनते ही व्यक्ति में भय उत्पन्न हो जाता है। शनि के प्रति सभी का डर सदैव बना रहता है। शनि के कारण जीवन की दिशा, सुख, दुख आदि सभी बात निर्धारित होती है। वास्तविकता में शनि कुकर्मियों को पीड़ति करता है तथा सुकर्मियों व कर्मठ लोगों का भग्यौदय करता है। यदि किसी व्यक्ति के कर्म अच्छे नहीं हैं तो शनि भाग्य हरकर पापियों को कंगाल बना देता है परंतु किसी भी व्यक्ति पर अपना असर डालने पर व्यक्ति को कुछ संकेत देता है। यह संकेत एक प्रकार की चेतवानी होती है की व्यक्ति अपने कर्म सुधारे और जीवन के मार्ग पर कर्म व धर्म अपनाकर अकर्म व अधर्म का परित्याग करे। शनि व्यक्ति के जीवन में अनेक परेशानियां लाकर निम्नलिखित बदलाव लाता है।

—शनि प्रभावित व्यक्ति के घर की दीवारों में अकस्मात दरारें आना शुरू हो जाती हैं। नियमित सफाई के बावजूद घर की दीवारों पर मकड़ियां अपना जाला बनाना शुरू कर देती हैं।

—शनि प्रभावित व्यक्ति के घर पर बने नमकीन प्रदार्थों में भी चींटियां आ जाती हैं। तथा पूरी सफाई के बावजूद भी चींटियां घर के पलायन नहीं करती हैं। इसे खाना खरण होना कहते हैं।

—शनि प्रभावित व्यक्ति के घर पर काली बिल्लियां डेरा डाल लेती हैं तथा वहीं बिल्ली अपने बच्चों को जन्म भी देती हैं तथा अक्सर दो बिल्लियां मिलकर एक दूसरे से लड़ती हुई भी पाई जाती हैं।

—शनि प्रभावित व्यक्ति के स्वभाव और विचारों में भी बदलाव आता है। व्यक्ति में काम भावना बढ़ जाती है। मन और भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रहता। व्यक्ति के अनैतिक संबंध भी बन जाते हैं।

—शनि प्रभावित व्यक्ति की सूझबूझ खो जाती है। व्यक्ति अर्जित किया हुआधन व कीमती समय लंबी दूरी की यात्राओं में लगा देता है। व्यक्ति को अकारण ही लंबी दूरी की असफल यात्राएं करनी पड़ती हैं।

—शनि प्रभावित व्यक्ति का झूठ बोलना बढ़ जाना। व्यक्ति आकारण झूठ बोलना शुरू करा देता है। उसके आचरण और विचारों में झूठ का वास हो जाता है। व्यक्ति को लगता ही नहीं है को वो झूठ बोल रहा है।

—शनि प्रभावित व्यक्ति अत्यधिक सुस्त हो जाता है। व्यक्ति गंदगी पसंद करता है तथा खुद को साफ़-सुथरा नहीं रख पता। नित्य स्नान का त्याग करता है। व्यक्ति बाल और नाखून काटने से परहेज करता है।

—व्यक्ति के खानपान की पसंद में अकस्मात बदलाव आता है। व्यक्ति मांसाहार भक्षण में अत्यधिक रुचि लेता है। मदिरा के सेवन में भी व्यक्ति की रुचि बढ़ती है तथा बासी व तला हुआ खाना पसंद करता है।

—शनि प्रभावित व्यक्ति को प्रॉपर्टी के विवादों का सामना करना पड़ता है। सगे-संबंधियों से पैतृक संपत्ति को लेकर मतभेद बढ़ता है। घर की कोई दीवार गिर सकती है। गृह निर्माण में धन खर्च करना पड़ता है।

—शनि व्यक्ति की टांगों पर का बुरा प्रभाव शुरु करता तो। इस समय व्यक्ति के घुटनो में जकड़न शुरू हो जाती है तथा व्यक्ति के चमड़े से बने हुए जूते या चप्पल खोने लगते हैं या जल्दी-जल्दी टूटने लगते हैं।

—शनि प्रभावित व्यक्ति को कर्मक्षेत्र में परेशानी आती है। व्यक्ति को पदोन्नति नहीं मिल पाती है। अधिकारियों से संबंध बिगड़ने लगते हैं व नौकरी छूट जाती है। व्यक्ति का अनचाही जगह पर तबादला होता है।

—शनि सर्वदा व्यक्ति के पेट और पीठ पर अपना वार करता है। व्यक्ति के कार्यक्षेत्र में समस्याएं आती हैं। उसका कामकाज ठप पड़ जाता है। व्यक्ति का चलता हुआ कारोबार बंद हो जाता है। व्यवसाय में कानूनी दावपेच आ जाते हैं। जिसके कारण व्यक्ति को न्यायालय के चक्कर काटने पड़ते हैं। शनि प्रभावित व्यक्ति के यहां इन्कम टेक्स औरे सेल टेक्स आदि के छापे भी पड़ते हैं। व्यक्ति के जीवनसाथी के चरित्र का हनन भी होता है। शनि प्रभावित व्यक्ति का लाइफ पार्टनर दूसरे लोगों से शारीरिक रूप से अनैतिक संबंध बनाता है। शनि प्रभावित व्यक्ति के भाई-बहन उससे गद्दारी करते हैं तथा पैसे में ठगी भी करते हैं। शनि प्रभावित व्यक्ति के दोस्त और रिश्तेदार भी व्यक्ति का जीवन खराब करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

धन लाभ में आ रही बाधा दूर करने के लिए असरकारी शनि मंत्र न्यायाधीश भगवान शनिदेव कई अन्य वजहों से भी अदभुत देवता के रूप में पूजनीय हैं। इसी सन्दर्भ में शनि की चाल मंद यानी धीमी मानी जाती है, तो दृष्टि वक्र यानी टेढ़ी। परन्तु उनका न्याय का हिसाब-किताब सीधा ओर सटीक होता है, यानी अच्छे कर्मों पर कृपा व बुरे कर्मों पर दण्ड। यही कारण है कि जहां शनिदेव की शुभ दृष्टि भाग्य बनाने वाली तो वहीं उनकी अशुभ दृष्टि कहर भी बरपाने वाली मानी जाती है। शनिदेव की कृपा के लिए ही शनिदेव की चाल बदलने, शनि महादशा, साढ़े साती या ढैय्या में शनि की कृपा से सौभाग्य, सफलता व सुख की कामना पूरी करने के लिए, शास्त्रों में शनि के सरल और सहज नाम मंत्रों का स्मरण मंगलकारी माना गया है। शनि साढ़े साती या ढैय्या से प्रभावित राशि वालों के लिए शनि का स्मरण विशेषरूप से धन, रोजगार व समृद्धि की बाधा दूर कर देता है।

शनि भक्ति से अपनी कामनाएं पूरी करने के लिए कुछ आसान शनि मंत्र व पूजा के सरल उपाय शनिवार को या फिर प्रतिदिन भी शनि देवालय में शनि देव की काली पाषाण मूर्तियों को सरसो या तिल का तेल, काले तिल, काले वस्त्र, उड़द की दाल, फूल व तेल से बनी मिठाई या पकवान अर्पित कर समृद्धि की कामना से नीचे लिखे सरल शनि मंत्रों का स्मरण करें :

ॐ धनदाय नमः

ॐ मन्दाय नमः

ॐ मन्दचेष्टाय नमः

ॐ क्रूराय नमः

ॐ भानुपुत्राय नमः

पूजा व मंत्र स्मरण के बाद शनि की धूप व तेल दीप से आरती भी करें। दोषों के लिए क्षमा की प्रार्थना करें व प्रसाद ग्रहण करें।

साइनस : कारण, लक्षण व उपचार

साइनस नाक का एक रोग है। आयुर्वेद में इसे प्रतिश्याय नाम से जाना जाता है। सर्दी के मौसम में नाक बंद होना, सिर में दर्द होना, आधे सिर में बहुत तेज दर्द होना, नाक से पानी गिरना इस रोग के लक्षण हैं। इसमें रोगी को हल्का बुखार, आंखों में पलकों के ऊपर या दोनों किनारों पर दर्द रहता है।

तनाव, निराशा के साथ ही चेहरे पर सूजन आ जाती है। इसके मरीज की नाक और गले में कफ जमता रहता है। इस रोग से ग्रसित व्यक्ति धूल और धुवां बर्दाश्त नहीं कर सकता। साइनस ही आगे चलकर अस्थमा, दमा जैसी गंभीर बीमारियों में भी बदल सकता है। इससे गंभीर संक्रमण हो सकता है।

क्या होता है साइनस रोग:

साइनस में नाक तो अवरुद्ध होती ही है साथ ही नाक में कफ आदि का बहाव अधिक मात्रा में होता है। भारतीय वैज्ञानिक सुश्रुत एवं चरक के अनुसार चिकित्सा न करने - से सभी तरह के साइनस रोग आगे जाकर 'दुष्ट प्रतिश्याय' में बदल जाते हैं और इससे अन्य रोग भी जन्म ले लेते हैं। जिस तरह मॉर्डन मेडिकल साइंस ने साइनुसाइटिस को क्रोनिक और एक्यूट दो तरह का माना है। आम धारणा यह है कि इस रोग में नाक के अंदर की हड्डी का बढ़ जाती है या तिरछा हो जाती है जिसके कारण श्वास लेने में रुकावट आती है। ऐसे मरीज को जब भी ठंडी हवा या धूल, धुवां उस हड्डी पर टकराता है तो व्यक्ति परेशान हो जाता है।

चिकित्सकों के अनुसार साइनस मानव शरीर की खोपड़ी में हवा भरी हुई कैविटी होती हैं जो हमारे सिर को हल्कापन व श्वास वाली हवा लाने में मदद करती है। श्वास लेने में अंदर आने वाली हवा इस थैली से होकर फेफड़ों तक जाती है। इस थैली में हवा के साथ आई गंदगी यानी धूल और दूसरे तरह की गंदगियों को रोकती है और बाहर फेंक दी जाती है। साइनस का मार्ग जब रुक जाता है अर्थात बलगम निकलने का मार्ग रुकता है तो 'साइनोसाइटिस' नामक बीमारी हो सकती है। वास्तव में साइनस के संक्रमण होने पर साइनस की झिल्ली में सूजन आ जाती है। सूजन के कारण हवा की जगह साइनस में मवाद या बलगम आदि भर जाता है, जिससे साइनस बंद हो जाते हैं। इस वजह से माथे पर, गालों व ऊपर के जबड़े में दर्द होने लगता है।

इसका उपचार इस रोग में सर्दी बनी रहती है और कुछ लोग इसे सामान्य सर्दी समझ कर इसका इलाज नहीं करवाते हैं। सर्दी तो सामान्यत: तीन-चार दिनों में ठीक हो जाती है, लेकिन इसके बाद भी इसका संक्रमण जारी रहता है। अगर वक्त रहते इसका इलाज न कराया जाए तो ऑपरेशन कराना जरूरी हो जाता है। लेकिन इसकी रोकथाम के लिए योग में क्रिया और प्राणायाम को सबसे कारगर माना गया है। नियमित क्रिया और प्राणायाम से बहुत से रोगियों को 99 प्रतिशत लाभ मिला है। इस रोग में बहुत से लोग या सिकाई का प्रयोग करते हैं और कुछ लोग प्रतिदिन विशेष प्राकृतिक चिकित्सा अनुसार नाक की सफाई करते हैं। योग से यह दोनों की कार्य संपन्न होते हैं। प्राणायाम जहां स्टीम का कार्य करता है वही जलनेती और सूत्रनेती से नाक की सफाई हो जाती है। प्रतिदिन अनुलोम विलोम के बाद पांच मिनट का ध्यान करें। जब तक यह करते रहेंगे साइनस से आप कभी भी परेशान नहीं होंगे। शुद्ध भोजन से ज्यादा जरूरी है शुद्ध जल और सबसे ज्यादा जरूरी है शुद्ध वायु। साइनस एक गंभीर रोग है। यह नाक का इंफेक्शन है। इससे जहां नाक प्रभावित होती है वहीं, फेंफड़े, आंख, कान और मस्तिष्क भी प्रभावित होता है इस इंफेक्शन के फैलने से उक्त सभी अंग कमजोर होते हैं।

.एक चम्मच मेथी दाने को एक कप पानी में पांच मिनट तक उबालें। इसके बाद इस पानी को छान लें। चाय की तरह पानी को पिएं। फायदा होगा।

आधा कप पानी में कुछ बूंदे युकेलिप्स तेल की डालें। इस पानी को ढककर उबालें। फिर स्टीम लें। यह साइनस सिरदर्द से तुरंत राहत देने वाला नुस्खा है।

इसके अलावा सिकाई भी की जा सकती है. करना ये होगा कि गर्म पानी की बोतल गालों के ऊपर रखकर इसे प्रकिया को कुछ देर तक दोहराएं। ऐसा करने से आपको काफी राहत मिलगी।

जब साइनस की समस्या ज्यादा परेशान करने लगे तो सहजन की फली का सूप लहसुन, प्याज, काली मिर्च और अदरक डालकर बनाएं। इस सूप को गर्मा गर्म पीने से बहुत लाभ होता है।

एक कप पानी गुनगुना कर लें। इस पानी में अदरक को बारीक काटकर डाल लें। कुछ देर बाद छानकर धीरे-धीरे इस पानी को पी जाएं। राहत मिलेगी।

गाजर में प्राकृतिक रूप से ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो साइनस रोग में लाभकारी होता है। इसे आप चुकंदर, खारे पालक के रस के साथ भी ले सकते हैं और अकेले भी। इसके लिए आप जीरा लेकर किसी कपडे.में बांध लें। इसके बाद इसे नाक के करीब ले जाकर तेज-तेज सांस लें। ऐसा करने से आपको तुरंत राहत मिलेगी। साइनस और नाक से जुड़ी सभी बीमारियों के लिए जैसे नाक की हड्डी बढना, नजला, सिरदर्द, छींकें इत्यादि के लिए बेहद ही सरल सा रामबाण उपाय है। शुद्ध देशी गाय का घी इसकी २-२ बूद गुनगुना करके रात्रि में सोने से पहले दोनो नासिकाओ में डाले और बहुत हल्का सा पिछे की ओर खींचे जैसे सास लेते हैं जब पहला नाक में डाले तो दूसरी नाक को बंद करके हल्का सा ऊपर खींचे। इसी तरह जब दूसरी नाक में डाले तो पहली, नाक बंद रखे और हल्का सा ऊपर खींचे। बिना तकिया लिए 15 मिनट तक लेटे रहे फिर तकिया लगाकर से जाये, बिना किसी से बात किये।

योग को अपनाएं:

योग में हर बीमारी का इलाज होता है। साइनसाइटिस एक सांस से संबंधित बीमारी है। इसलिए इस रोग को ठीक करने के लिए कपालभाती प्राणायामकरना चाहिए। जो साइनसाइटिस की समस्या को को जड़ से ठीक कर देता है।

साइनस की बीमारी में अजवाइन एक कारगर घरेलू औषधि है। कैसे करें अजवाइन का प्रयोग: सबसे पहले आप अजवाइन की तीन बड़ी चम्मच लें और उसे एक तवे पर भूने। अब किसी सूती कपड़े में इन भुने हुए अजवाइन के दानों को डालकर इसे बांध लें और इसे थोड़ा सा ठंडा होने दें। साइनस की वजह से आपको चेहरे व जबड़े में जिस भी हिस्से में दर्द हो रहा हो उस जगह पर हल्का हल्का इसे रखें। इस उपाय से साइनस के दर्द से बहुत ज्यादा आराम मिलता है।

मेथी की चाय:

मेथी की चाय में मौजूद गुण साइनस की बीमारी की रोकथाम करते हैं। चाय आप जैसे बनाते हैं वैसे ही बनाएं बस उसमें मेथी के कुछ दानों को भी डाल लें। और इस चाय का नियमित सेवन करें। मेथी के दानों की चाय साइनस के दर्द में भी राहत देती है।

तुलसी का उपयोग:

काली मिर्च के चूर्ण को तुलसी के पत्तों में डालकर इसे दिन में दो से तीन बार सेवन करें। इस उपाय से साइनस रोग मे राहत मिलती है।साइनस की बीमारी से परेशान लोगो को शहद को तुलसी के रस में डालकर इसका सेवन करना चाहिए। इससे साँस लेने में आ रही कठिनाई दूर हो जाती है।

तुलसी का अन्य घरेलू उपाय:

काली मिर्च के दस दाने

एक गिलास पानी

15 तुलसी के पत्ते

और अदरक

इन तीनों को अच्छी तरह से मिक्सर या सिलबट्टे पर पीस कर चूर्ण बना लें और इसको एक गिलास पानी में डालकर तब तक उबालें जब तक यह आधा न रह जाए। इसके बाद इसे छानें और हर एक घंटे के बाद इसे पीते रहें। यह उपाय साइनस के रोग को ठीक करता है।

जीरे का काढ़ा:

हर घर में जीरा मौजूद रहता है। जीरे में प्राकृतिक गुण होते हैं और यह भी साइनस का इलाज करता है।

बनायें जीरे का काढ़ा:

बहुत ही आसान तरीके से बना सकते हैं जीरे का काढ़ा। इसके लिए आपको थोड़ा अदरक जीरे की एक छोटी चम्मच, तुलसी के पत्ते और एक बड़ा गिलास पानी सबसे पहले आप एक गिलास पानी को उबालें और इसमें अदरक, तुलसी के पत्ते और जीरे को डाल दें। और फिर इसे छानकर गुनगुना करके इसका सेवन करें। यह उपाय आपको साइनस के दर्द में राहत देगा।

गरम पानी:

साइनसाइटिस के रोगियों को चाहिए कि वे हमेशा गरम या गुनगुना पानी पीएं।

भाप ले: किसी बर्तन में पानी को गर्म करें और उसमें काली तुलसी के पत्तों को डालकर उसका भाप लें। इस घरेलू उपाय से साइनसाइटिस के दर्द और कफ से राहत मिलती है।

इन आसान घरेलू नुस्खों को अपनाकर आप साइनस रोग से राहत पा सकते हो। लेकिन इसके लिए इस बात का ध्यान जरूर रखें कि जो भी उपाय आप कर रहे हो वे नियमित रूप में हो। जिससे जल्दी से यह बीमारी ठीक हो सके।

चाक्षुषी विद्या प्रयोग

नेत्ररोग होने पर भगवान सूर्यदेव की रामबाण उपासना है। इस अदभुत मंत्र से सभी नेत्ररोग आश्चर्यजनक रीति से अत्यंत शीघ्रता से ठीक होते हैं। सैंकड़ों साधकों ने इसका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया है। सभी नेत्र रोगियों के लिए चाक्षुषोपनिषद् प्राचीन ऋषि मुनियों का अमूल्य उपहार है। इस गुप्त धन का स्वतंत्र रूप से उपयोग करके अपना कल्याण करें। शुभ तिथि के शुभ नक्षत्र वाले रविवार को इस उपनिषद् का पठन करना प्रारंभ करें। पुष्य नक्षत्र सहित रविवार हो तो वह रविवार कामना पूर्ति हेतु पठन करने के लिए सर्वोत्तम समझें। प्रत्येक दिन चाक्षुषोपनिषद् का कम से कम बारह बार पाठ करें। बारह रविवार (लगभग तीन महीने) पूर्ण होने तक यह पाठ करना होता है। रविवार के दिन भोजन में नमक नहीं लेना चाहिए। प्रातःकाल उठें। स्नान आदि करके शुद्ध होवें। आँखें बन्द करके सूर्यदेव के सामने खड़े होकर भावना करें कि 'मेरे सभी प्रकार के नेत्ररोग भी सूर्यदेव की कृपा से ठीक हो रहे हैं।' लाल चन्दन मिश्रित जल ताँबे के पात्र में भरकर सूर्यदेव को अर्घ्य दें। संभव हो तो षोडशोपचार विधि से पूजा करें। श्रद्धा-भक्तियुक्त अन्तःकरण से नमस्कार करके 'चाक्षुषोपनिषद्' का पठन प्रारंभ करें।

ॐ अस्याश्चाक्क्षुषी विद्यायाः अहिर्बुधन्य ऋषिः। गायत्री छंद। सूर्यो देवता। चक्षुरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ इस चाक्षुषी विद्या के ऋषि अहिर्बुधन्य हैं। गायत्री छंद है। सूर्य नारायण देवता है। नेत्ररोग की निवृत्ति के लिए इसका जप किया जाता है। यही इसका विनियोग है। मंत्र इस प्रकार से है

ॐ चक्षुः चक्षुः तेज स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरित चक्षुरोगान्‌शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहं अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु करु।

याति मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूल्य निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोरत्रे दिव्व्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकराय अमृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमः भगवते सूर्यायाक्षि तेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवांछुचिरूपः। हंसो भगवान शुचिरप्रति-प्रतिरूपः। ये इमां चाक्षुष्मती विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति।

अष्टौ ब्राह्मणान्‌ सम्यग ग्राहयित्वा विद्या-सिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

ॐ हे सूर्यदेव ! आप मेरे नेत्रों में नेत्र तेज के रूप में स्थिर हों। आप मेरा रक्षण करो, रक्षण करो। शीघ्र मेरे नेत्ररोग का नाश करो, नाश करो। मुझे आपका स्वर्ण जैसा तेज दिखा दो, दिखा दो। मैं अन्धा न होऊँ, इस प्रकार का उपाय करो, उपाय करो। मेरा कल्याण करो, कल्याण करो। मेरी नेत्र-दृष्टि के आड़े आने वाले मेरे पूर्वजन्मों के सर्व पापों को नष्ट करो, नष्ट करो। ॐ (सच्चिदानन्दस्वरूप) नेत्रों को तेज प्रदान करने वाले, दिव्यस्वरूप भगवान भास्कर को नमस्कार है। ॐ करुणा करने वाले अमृतस्वरूप को नमस्कार है। ॐ भगवान सूर्य को नमस्कार है। ॐ नेत्रों का प्रकाश होने वाले भगवान सूर्यदेव को नमस्कार है। ॐ आकाश में विहार करने वाले भगवान सूर्यदेव को नमस्कार है। ॐ रजोगुणरूप सूर्यदेव को नमस्कार है। अन्धकार को अपने अन्दर समा लेने वाले तमोगुण के आश्रयभूत सूर्यदेव को मेरा नमस्कार है। हे भगवान ! आप मुझे असत्य की ओर से सत्य की ओर ले चलो। अन्धकार की ओर से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु की ओर से अमृत की ओर ले चलो।

उष्णस्वरूप भगवान सूर्य शुचिस्वरूप हैं। हंसस्वरूप भगवान सूर्य शुचि तथा अप्रतिरूप हैं। उनके तेजोमय रूप की समानता करने वाला दूसरा कोई नहीं है जो कोई इस चाक्षुष्मती विद्या का नित्य पाठ करता है उसको नेत्ररोग नहीं होते हैं, उसके कुल में कोई अन्धा नहीं होता है। आठ ब्राह्मणों को इस विद्या का दान करने पर यह विद्या सिद्ध हो जाती है।

कोन से शिवलिंग की पूजा का क्या होता है शुभ प्रभाव

शिवलिंग, शिव का निराकार स्वरूप है। पौराणिक मान्यता है कि शिवलिंग पूजा उस शक्ति की उपासना है, जो सृष्टि रचना का कारण है। शिवलिंग व अरघा भी शिव-शक्ति का सामूहिक स्वरूप होकर सृजन या उत्पत्ति के प्रतीक माने जाते हैं, जो अर्द्धनारीश्वर रूप में भी पूजनीय है। यही कारण है कि कण-कण और हर जीव में शिव मानकर अलग-अलग पदार्थों के शिवलिंग की उपासना प्रदोष, चतुर्दशी, अष्टमी या सोमवार की पुण्यतिथियों पर सांसारिक इच्छाओं को जल्द पूरा करने वाली मानी गई है। जानिए, किस चीज़ का शिवलिंग कौन-सी कामना सिद्ध करता है -

- हवन-यज्ञ की विभूति यानी भस्म से बने शिवलिंग मनचाही कामना सिद्ध करते हैं।
- अक्षत, गेंहू या जौ के आटे से बने शिवलिंग की पूजा पारिवारिक सुख-शांति व संतान की कामना पूरी करती है।
- दही का जल निकालकर निथारकर बने शिवलिंग धन कामना पूरी करते हैं।
- पीपल की लकड़ी से बने शिवलिंग अभाव व दरिद्रता का नाश करते हैं।
- चंदन-कस्तूरी से बने शिवलिंग ऐश्वर्य से भरे जीवन की कामना पूरी करते हैं।
- रोगमुक्ति के लिए मिश्री या शक्कर के बने शिवलिंग मंगलकारी होते हैं।
- मकान या संपत्ति की चाहत पूरी करने के लिए फूलों से बने शिवलिंग की पूजा करें।
- लहसुनिया के शिवलिंग शत्रु बाधा दूर करते हैं।
- मृत्यु व काल का भय दूर्वा दल से बने शिवलिंग पूजा से दूर होता है।
- चांदी, सोने या मोती से बने शिवलिंग क्रमशः पैसा, खुशहाली व भाग्य वृद्धि करते हैं।
- स्फटिक शिवलिंग की पूजा हर कामना और कार्य सिद्धि करने वाली मानी गई है।

भगवान शिव के तृतीय नेत्र का रहस्य

परमेश्वर शिव त्रिकाल दृष्टा, त्रिनेत्र, आशुतोष, अवढरदानी, जगतपिता आदि अनेक नामों से जानें जाते हैं। महाप्रलय के समय शिव ही अपने तीसरे नेत्र से सृष्टि का संहार करते हैं परंतु जगतपिता होकर भी शिव परम सरल व शीघ्रता से प्रसन्न होने वाले हैं। संसार की सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाले शिव को स्वयं के लिए न ऐश्वर्य की आवश्यकता है न अन्य पदार्थों की। वे तो प्रकृति के मध्य ही निवासते हैं। कन्दमूल ही जिन्हें भगवान शिव के तृतीय नेत्र का रहस्य परमेश्वर शिव त्रिकाल दृष्टा, त्रिनेत्र, आशुतोष, अवढरदानी, जगतपिता आदि अनेक नामों से जानें जाते हैं। महाप्रलय के समय शिव ही अपने तीसरे नेत्र से सृष्टि का संहार करते हैं परंतु जगतपिता होकर भी शिव परम सरल व शीघ्रता से प्रसन्न होने वाले हैं। संसार की सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाले शिव को स्वयं के लिए न ऐश्वर्य की आवश्यकता है न अन्य पदार्थों की। वे तो प्रकृति के मध्य ही निवासते हैं। कन्दमूल ही जिन्हें प्रिय हैं व जो मात्र जल से ही प्रसन्न हो जाते हैं जहां अन्य देवों को प्रसन्न करने हेतु कठिन अनुष्ठान किया जाता है वहीं शिव मात्र जलाभिषेक से ही प्रसन्न होते हैं। शिव का स्वरूप स्वयं में अद्भुत तथा रहस्यमय हैं। चाहे उनके शिखर पर चंद्रमा हो या उनके गले की सर्प माला हो या मृग छाला हो, हर वस्तु जो भगवान शंकर ने धारण कर रखी है, उसके पीछे गूढ़ रहस्य है। शास्त्रनुसार सभी देवताओं की दो आंखें हैं पर शिव के तीन नेत्र हैं। इस लेख के माध्यम से हम अपने पाठकों को बताते हैं क्यों हैं शिव के तीन नेत्र तथा इसके पीछे क्या रहस्य है।

*त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्ता च त्वं विष्णुः परिपालकः।

*त्वं शिवः शिवदोऽनन्तः सर्वसंहारकः॥

भगवान शंकर का एक नाम त्रिलोचन भी है। त्रिलोचन का अर्थ होता है तीन आंखों वाला क्योंकि एक मात्र भगवान शंकर ही ऐसे हैं जिनकी तीन आंखें हैं। शिव के दो नेत्र तो सामान्य रुप से खुलते और बंद होते रहते हैं, शिव के दो नेत्रों को शास्त्रों ने चंद्रमा व सूर्य कहकर संबोधित किया है परंतु तीसरा नेत्र कुछ अलग संज्ञा लिए हुए होता है। वेदों ने शिव के तीसरे नेत्र को प्रलय की संज्ञा दी है। वास्तविकता में शिव के ये तीन नेत्र त्रिगुण को संबोधित है। दक्षिण नेत्र अर्थात दायां नेत्र सत्वगुण को संबोधित है। वाम नेत्र अर्थात बायां नेत्र रजोगुण को संबोधित है तथा ललाट पर स्थित तीसरा नेत्र तमोगुण को संबोधित करता है। इसी प्रकार शिव के तीन नेत्र त्रिकाल के प्रतीक है ये नेत्र भूत, वर्तमान, भविष्य को संबोधित करते हैं। इसी कारण शिव को त्रिकाल दृष्टा कहा जाता है। इनहीं तीन नेत्रों में त्रिलोक बस्ता है अर्थात स्वर्गलोक, मृत्युलोक व पाताललोक अर्थात शिव के तीन नेत्र तीन लोकों के प्रतीक हैं। इसी कारण शिव त्रिलोक के स्वामी माने जाते हैं।

*त्रीद्लं त्रिगुनाकारम त्रिनेत्रम च त्रिधायुतम।

*त्रीजन्म पापसंहारम एक बिल्व शिव अर्पिन॥

शिव को परमब्रह्म माना जाता है। संसार की आंखें जिस सत्य का दर्शन नहीं कर सकतीं, वह सत्य शिव के नेत्रों से कभी ओझल नहीं हो सकता क्योंकि सम्पूर्ण संसार शिव की एक रचना मात्र है। इसी कारण तीन लोक इनके अधीन हैं। शिव का तीसरा नेत्र ज्ञान चक्षु है। यह विवेक का प्रतीक है। ज्ञान चक्षु खुलते ही काम जल कर भस्म हो जाता है। जैसे विवेक अपना ऋषित्व स्थिर रखते हुए दुष्टता को उन्मुक्त रूप में विचारने नहीं देता है तथा उसका मद- मर्दन करके ही रहता है। इसी कारण शिव के तीसरे नेत्र खुलने पर कामदेव जलकर भस्म हो गए थे। शिव का तीसरा चक्षु आज्ञाचक्र पर स्थित है। आज्ञाचक्र ही विवेकबुद्धि का स्रोत है। तृतीय नेत्र खुल जाने पर सामान्य बीज रूपी मनुष्य की सम्भावनाएं वट वृक्ष का आकार ले लेती हैं। धार्मिक दृष्टि से अपना तीसरा नेत्र सदैव बंद रखते हैं। तीसरी आंख शिव जी तभी खोलते हैं जब उनका क्रोध अपने प्रचुरतम सीमा से परे होता है। तीसरे नेत्र के खुलने का तात्पर्य है प्रलय का आगमन।

*सूर्यस्त्वं सृष्टिजनक आधारः सर्वतेजसाम्।

*सोमस्त्वं सस्यपाता च सततं शीतरश्मिना॥

वास्तवक्ता में परमेश्वर शिव ने यह तीरा नेत्र प्रत्येक व्यक्ति को दिया है। यह विवेक अतःप्रेरणा के रूप में हमारे अंदर ही रहता है। बस जरुरत है उसे जगाने की। शिव के ज्ञान रुपी तीसरे नेत्र से ये प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य धरती पर रहकर ज्ञान के द्वारा अपनी काम और वासनाओं पर काबू पाकर मुक्ति प्राप्त कर सके। अगर सांसरिक दृष्टि से देखा जाए तो नेत्रों का कार्य होता है मार्ग दिखाना व मार्ग में आने वाली मुसीबतों से सावधान करना। जीवन में कई बार ऐसे संकट भी शिव जी द्वारा दिए तीनों नेत्र संयम से प्रयोग में लेने चाहिए। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह व अहंकार इसी तीसरे नेत्र से हम में प्रवेश करते हैं तथा इसी तीसरे नेत्र से हम इन्हे भस्म भी कर सकते हैं। मकसद है इस आज्ञा चक्र को जाग्रत करके सही मार्ग पर ले जाने की। प्रिय हैं व जो मात्र जल से ही प्रसन्न हो जाते हैं। जहां अन्य देवों को प्रसन्न करने हेतु कठिन अनुष्ठान किया जाता है वहीं शिव मात्र जलाभिषेक से ही प्रसन्न होते हैं। शिव का स्वरूप स्वयं में अद्भुत तथा रहस्यमय हैं। चाहे उनके शिखर पर चंद्रमा हो या उनके गले की सर्प माला हो या मृग छाला हो, हर वस्तु जो भगवान शंकर ने धारण कर रखी है, उसके पीछे गूढ़ रहस्य है। शास्त्रनुसार सभी देवताओं की दो आंखें हैं पर शिव के तीन नेत्र हैं। इस लेख के माध्यम से हम अपने पाठकों को बताते हैं क्यों हैं शिव के तीन नेत्र तथा इसके पीछे क्या रहस्य है।

*त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्ता च त्वं विष्णुः परिपालकः।

*त्वं शिवः शिवदोऽनन्तः सर्वसंहारकः॥

भगवान शंकर का एक नाम त्रिलोचन भी है। त्रिलोचन का अर्थ होता है तीन आंखों वाला क्योंकि एक मात्र भगवान शंकर ही ऐसे हैं जिनकी तीन आंखें हैं। शिव के दो नेत्र तो सामान्य रुप से खुलते और बंद होते रहते हैं, शिव के दो नेत्रों को शास्त्रों ने चंद्रमा व सूर्य कहकर संबोधित किया है परंतु तीसरा नेत्र कुछ अलग संज्ञा लिए हुए होता है। वेदों ने शिव के तीसरे नेत्र को प्रलय की संज्ञा दी है। वास्तविकता में शिव के ये तीन नेत्र त्रिगुण को संबोधित है। दक्षिण नेत्र अर्थात दायां नेत्र सत्वगुण को संबोधित है। वाम नेत्र अर्थात बायां नेत्र रजोगुण को संबोधित है तथा ललाट पर स्थित तीसरा नेत्र तमोगुण को संबोधित करता है। इसी प्रकार शिव के तीन नेत्र त्रिकाल के प्रतीक है ये नेत्र भूत, वर्तमान, भविष्य को संबोधित करते हैं। इसी कारण शिव को त्रिकाल दृष्टा कहा जाता है। इनहीं तीन नेत्रों में त्रिलोक बस्ता है अर्थात स्वर्गलोक, मृत्युलोक व पाताललोक अर्थात शिव के तीन नेत्र तीन लोकों के प्रतीक हैं। इसी कारण शिव त्रिलोक के स्वामी माने जाते हैं।

*त्रीद्लं त्रिगुनाकारम त्रिनेत्रम च त्रिधायुतम।

*त्रीजन्म पापसंहारम एक बिल्व शिव अर्पिन॥

शिव को परमब्रह्म माना जाता है। संसार की आंखें जिस सत्य का दर्शन नहीं कर सकतीं, वह सत्य शिव के नेत्रों से कभी ओझल नहीं हो सकता क्योंकि सम्पूर्ण संसार शिव की एक रचना मात्र है। इसी कारण तीन लोक इनके अधीन हैं। शिव का तीसरा नेत्र ज्ञान चक्षु है। यह विवेक का प्रतीक है। ज्ञान चक्षु खुलते ही काम जल कर भस्म हो जाता है। जैसे विवेक अपना ऋषित्व स्थिर रखते हुए दुष्टता को उन्मुक्त रूप में विचारने नहीं देता है तथा उसका मद- मर्दन करके ही रहता है। इसी कारण शिव के तीसरे नेत्र खुलने पर कामदेव जलकर भस्म हो गए थे। शिव का तीसरा चक्षु आज्ञाचक्र पर स्थित है। आज्ञाचक्र ही विवेकबुद्धि का स्रोत है। तृतीय नेत्र खुल जाने पर सामान्य बीज रूपी मनुष्य की सम्भावनाएं वट वृक्ष का आकार ले लेती हैं। धार्मिक दृष्टि से शिव अपना तीसरा नेत्र सदैव बंद रखते हैं। तीसरी आंख शिव जी तभी खोलते हैं जब उनका क्रोध अपने प्रचुरतम सीमा से परे होता है। तीसरे नेत्र के खुलने का तात्पर्य है प्रलय का आगमन।

*सूर्यस्त्वं सृष्टिजनक आधारः सर्वतेजसाम्।

*सोमस्त्वं सस्यपाता च सततं शीतरश्मिना॥

वास्तवक्ता में परमेश्वर शिव ने यह तीसरा नेत्र प्रत्येक व्यक्ति को दिया है। यह विवेक अतःप्रेरणा के रूप में हमारे अंदर ही रहता है। बस जरुरत है उसे जगाने की। शिव के ज्ञान रुपी तीसरे नेत्र से ये प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य धरती पर रहकर ज्ञान के द्वारा अपनी काम और वासनाओं पर काबू पाकर मुक्ति प्राप्त कर सके। अगर ससारिक दृष्टि से देखा जाए तो नेत्रों का कार्य होता है मार्ग दिखाना व मार्ग में आने वाली मुसीबतों से सावधान करना। जीवन में कई बार ऐसे संकट भी शिव जी द्वारा दिए तीनों नेत्र संयम से प्रयोग में लेने चाहिए। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह व अहंकार इसी तीसरे नेत्र से हम में प्रवेश करते हैं तथा इसी तीसरे नेत्र से हम इन्हे भस्म भी कर सकते हैं। मकसद है इस आज्ञा चक्र को जाग्रत करके सही मार्ग पर ले जाने की।

ॐ नमः शिवाय

दिल्ली की जनता भाजपा से जवाब मांग रही, "मोदी की गारंटी, मोदी के जुमले" में क्यों बदल गई? आप

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) दिल्ली विधानसभा के आगामी बजट सत्र के दौरान दिल्ली के लोगों के साथ किए गए विश्वासघात को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर जमकर घेरने के लिए तैयार है। दिल्ली की महिलाओं को प्रति माह 2,500 रुपए और होली पर मुफ्त एलपीजी सिलेंडर देने का "मोदी की गारंटी" खोखला और जुमला साबित हुआ है। 2500 रुपए देने की योजना को लागू करने की जगह भाजपा की दिल्ली सरकार ने अपनी सुविधानुसार तीन-सदस्यीय समिति गठित कर दी है, जो योजना को अनिश्चितकाल के लिए ठंडे बस्ते में डालने की स्पष्ट रणनीति है। इससे साफ हो गया है कि भाजपा का अपने इस वादे को पूरा करने का कोई इरादा ही नहीं था।

आम आदमी पार्टी ने एक बयान में कहा कि भाजपा का यह धोखा दिल्ली की महिलाओं के साथ खुला विश्वासघात है, जिन्हें वित्तीय राहत और समर्थन का वादा किया गया था। इसके बजाय भाजपा ने देरी की रणनीति अपनाकर जवाबदेही से बचने की कोशिश की है। यह साबित करता है कि उनके वादों का वास्तविकता कोई लेना-देना नहीं है। "आप" यह सुनिश्चित करेगी कि इस विश्वासघात को विधानसभा में उजागर किया जाए और भाजपा को इसके लिए जवाबदेह ठहराया जाए।

"आप" ने अपने बयान में आगे कहा कि ''आप'' सरकार ने भाजपा की दिल्ली सरकार को मुनाफे का बजट बजट सौंपा था। यह इस विश्वासघात को और भी शर्मनाक बनाता है। वित्तीय रूप से मजबूत अर्थव्यवस्था मिलने के बावजूद भाजपा अब तक दिल्ली की जनता को एक भी लाभ देने में नाकाम रही है। जब दिल्ली का बजट मुनाफे में है, तो महिलाओं को उनकी जायज वित्तीय सहायता से क्यों वंचित किया जा रहा है? 'मोदी की गारंटी' को लागू करने से भाजपा का इन्कार यह साबित करता है कि उनके वादे शुरू से ही खोखले थे।

इस बीच, दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि भाजपा ने दिल्ली विधानसभा को तानाशाही में बदल दिया है, जहां जनता के मुद्दे उठाने वाले विपक्षी विधायकों को निलंबित कर दिया जाता है, जबकि भाजपा विधायकों को उनके गलत आचरण के बावजूद बचाया जाता है। यह शासन नहीं, बल्कि लोकतंत्र पर हमला है। जिस भाजपा ने 'मोदी की गारंटी' की बात की, उसी ने "आप" से मुनाफे का बजट मिलने के बावजूद दिल्ली की महिलाओं को वित्तीय सहायता से वंचित कर विश्वासघात किया है। हम चुप नहीं रहेंगे। "आप" इन मुद्दों को न केवल विधानसभा में, बल्कि सड़कों पर भी उठाएगी और भाजपा के विश्वासघात को दिल्ली के हर घर तक पहुंचाएगी।

"आप" ने बयान में कहा कि दिल्ली की जनता को जवाब चाहिए कि 'मोदी की गारंटी' 'मोदी का जुमला' में क्यों तब्दील हो गई? भाजपा जनहित के मुद्दों पर खुली बहस से क्यों डरती है? दिल्ली के चुने हुए प्रतिनिधियों की आवाज को विधानसभा के अंदर क्यों दबाया जा रहा है? आम आदमी पार्टी भाजपा को जवाबदेही से भागने नहीं देगी। इस बजट सत्र में "आप" विधायक भाजपा के विश्वासघात, छल और जनता के हित में शासन करने में विफलता को उजागर करेंगे।

इसके अलावा, "आप" दिल्ली विधानसभा के अंदर लोकतंत्र पर हमले को भी उठाएगी। पिछले सत्रों में भाजपा ने स्पष्ट रूप से पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया है। आम आदमी पार्टी के विधायकों को जनता के मुद्दे उठाने के लिए निलंबित किया गया, जबकि भाजपा विधायकों को जांच से बचाया गया। विपक्ष की नेता आतिशी ने पहले ही बताया है कि "आप" के विधायकों को बार-बार रोका गया और मनमाने ढंग से निलंबित किया गया। यह भाजपा की लोकतांत्रिक बहस के प्रति सहनशीलता की कमी को दिखाता है। एक भाजपा विधायक को 40 मिनट तक बोलने की अनुमति दी जाती है, जबकि एक आम आदमी पार्टी के विधायक की आवाज को महज चार मिनट में दबा दिया जाता है।

यह बजट सत्र कोई अपवाद नहीं होगा। "आप" दिल्ली की जनता की आवाज को भाजपा की सत्तावादी रणनीतियों से दबने नहीं देगी और इसके खिलाफ लगातार लड़ती रहेगी।

आने वाला बजट दिल्ली की जनता को समर्पित बजट होगा और हमने अपने संकल्प पत्र में जो कुछ भी कहा है उसको समर्थित बजट होगा – वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली।: दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने दिल्ली के लिए पेश होने वाले आगामी बजट को लेकर कहा है कि आने वाला बजट दिल्ली की जनता को समर्पित बजट होगा और हमने अपने संकल्प पत्र में जो कुछ भी कहा है उसको समर्थित बजट होगा।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की हमारा पहला संकल्प है दिल्ली का सर्वांगिण विकास और उसके लिए हर क्षेत्र और समाज वर्ग के लिए बजट में प्रावधान होगा चाहे वह युवा हो, महिला हो, किसान हो या फिर व्यापारी वर्ग हो।

उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता के सुझावों पर तैयार किया गया यह बजट होगा। दिल्ली को पिछले 10 सालों से विकास की गति को रोकने का जो काम किया गया है, उसको पीछे छोड़ते हुए भाजपा सरकार अब विकसित दिल्ली की संकल्प के साथ आगे काम करेगी।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि दिल्ली की मुख्यमंत्री जो खुद दिल्ली की छात्रा रही हैं ने शिक्षा के साथ-साथ अन्य विभागों पर विशेष ध्यान दिया है। सभी विभागों के पदाधिकारियों और समाज के हर वर्ग से संवाद करने का काम किया है, आने वाला बजट दिल्ली के विकास को एक नई दिशा देने का काम करने वाला है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष के रुप में दो साल पूरा होने पर सचदेवा ने राष्ट्रीय शीर्ष नेतृत्व के साथ भाजपा कार्यकर्ताओं का जताया आभार

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने अध्यक्ष के रुप में अपने दो साल पूरे होने पर शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त किया और दिल्ली के सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया जिन्होंने इन दो साल में संघर्ष में हमेशा साथ दिया।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि पार्टी की ओर से हम सभी कार्यकर्ताओं को कोई ना कोई दायित्व मिलता है। आज से ठीक दो साल पहले शहीदी दिवस के दिन ही प्रदेश अध्यक्ष का दायित्व मिलने के बाद आज मुझे संतोष है कि कार्यकर्ताओं के साथ हमने जो मेहनत की है उसका परिणाम है कि पहले लोकसभा चुनाव में दिल्ली के सातों सीट जीतने के अलावा दिल्ली में भाजपा की सरकार बनने तक का सफर इन दो सालों में पूरा किया है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के बताए हुए निर्देशों पर अमल कर दिल्ली में एक ऐसी सरकार को उखाड़ने में हम कामयाब हो पाए जिसने दिल्ली में लूट और भ्रष्टाचार करने का कोई मौका नहीं छोड़ा।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में सीएम रेखा गुप्ता के नेतृत्व में भाजपा की सरकार ने काम की गति पकड़ी है, अब सभी कार्यकर्ताओं का यह दायित्व बनता है कि उसमें सहभागी बने और विकास की गति को आगे बढ़ाए।

भाजपा अध्यक्ष सचदेवा ने कहा कि दिल्ली की जनता से हमने जो वायदे किए हैं और नई सरकार से दिल्लीवालों की जो अपेक्षाएं हैं, उसको पूरा करना हमारी सरकार की प्राथमिकता है। आने वाले समय में दिल्ली में कामों की गति तेज होगी जिसे देखकर दिल्लीवाले भी कहेंगे कि सुखद बदलाव हुआ है।

भगवान परशुराम इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ने मेधावी छात्रों को किया सम्मानित

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भारतीय ब्राह्मण चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी.) एवं भगवान परशुराम इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी रोहिणी द्वारा रविवार, 23 मार्च को आयोजित सांस्कृतिक समारोह में मेधावी बच्चों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में विधायक तिलक राम गुप्ता एवं विधायक पूनम भारद्वाज उपस्थित हुए। भगवान परशुराम इंस्टीट्यूट के दो छात्रों को गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया। साथ ही आठवीं कक्षा में अव्वल आने वाले ब्राह्मण समाज के बच्चों को भी पुरस्कृत किया गया।

भारतीय ब्राह्मण चैरिटेबल ट्रस्ट एवं भगवान परशुराम इंस्टिट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी के अध्यक्ष पं. विनोद वत्स ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमने अपनी पूरी फैकल्टी को सातवां वेतन स्केल लागू कर दिया है। पिछले लगातार तीन साल से हमारे इंस्टिट्यूट को यूनिवर्सिटी स्तर पर आईटी एवं कम्प्यूटर सांइस में गोल्ड मैडल मिल रहा है, जो कि गौरव की बात है और इसका श्रेय संस्थान से जुड़े सभी लोगों को जाता है।

इस अवसर पर उपस्थित आईएएस ऑफिसर आर.एन. शर्मा ने सम्बोधन में बताया कि कॉलेज के इन्फ्रास्ट्रक्चर में बदलाव लाया जा रहा है और नई बिल्डिंग बनाई जा रही है। इंस्टीट्यूट के बच्चे अपनी मेधा से इसे बुलंदियों पर ले जा रहे हैं। यहां के कई छात्रों को बड़ी-बड़ी कम्पनियों से लाखों के पैकेज के साथ शानदार जॉब मिल रही है। यह संस्थान के लिए गर्व की बात है।

इस पूरे कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन मंत्री शम्भू शर्मा ने किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में ट्रस्ट के संरक्षक भूरे लाल शर्मा व जय प्रकाश गौड़, उपाध्यक्ष पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा (हास्य कवि), हरि निवास भारद्वाज, अरविन्द शर्मा, भागीरथ राज शर्मा, राजकुमार शर्मा एवं पवन वत्स, महामंत्री राम बाबू शर्मा, कोषाध्यक्ष संजीव शर्मा, मंत्री बाल कृष्ण मुद्गल, जनसम्पर्क अधिकारी जय प्रकाश वशिष्ठ, विधि सलाहकार निर्मित गौड़ का अहम योगदान रहा। कार्यक्रम का समापन इंस्टीट्यूट के छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति के साथ हुआ।

दिल्ली सरकार से एमसीडी को मिल सकता है 10 हजार करोड़ का फंड, कहां होगा खर्च?

दिल्ली सरकार के आगामी बजट में निगम को फायदा मिलने की संभावना है। कर्मचारियों के बकाये के भुगतान से लेकर पार्कों के रखरखाव और सफाई व्यवस्था को सुधारने के लिए दिल्ली सरकार से फंड बजट में मिल सकता है। इससे दिल्ली सरकार से निगम को मिलने वाला फंड दस हजार करोड़ तक पहुंच सकता है।

नई दिल्ली। केंद्र के साथ ही दिल्ली में भाजपा की डबल इंजन की सरकार बनने के बाद निगम में भी भाजपा सरकार बनने की प्रबल संभावनाओं से आगामी दिल्ली सरकार के बजट में निगम को फायदा हो सकता है।

उसे न केवल उन मदों में फंड मिल सकता है जो आप सरकार ने बंद कर दिए थे बल्कि अनधिकृत कालोनियों और अधिकृत कालोनियों के विकास कार्यों के लिए फंड का आवंटन बंद कर दिया था। आप सरकार केवल तीन मदों में फंड दे रही थी। इसमें शहरी विकास, शिक्षा और स्वास्थय मद था। जिससे यह होता था कि ज्यादा राशि कर्मियों के वेतन में ही खर्च हो जाती थी।

बजट में मिल सकता है विकास कार्यों के लिए फंड

अब इन मदों के अलावा दूसरे मदों में भी विकास कार्यों के लिए फंड बजट में मिल सकता है। साथ ही कर्मचारियों के बकाये के भुगतान से लेकर पार्कों के रखरखाव और सफाई व्यवस्था को सुधारने के लिए दिल्ली सरकार से फंड बजट में मिल सकता है।

इससे दिल्ली सरकार से निगम को मिलने वाला फंड दस हजार करोड़ तक पहुंच सकता है। जबकि आप सरकार में 8423 करोड़ रुपये का सर्वाधिक फंड मिला था।

आवंटित फंड का नहीं हो पाया था उपयोग

उल्लेखनीय है कि दिल्ली में आप सरकार आने से पहले दिल्ली में अनधिकृत कालोनियों, अधिकृत कालोनियों, झुग्गी झोपड़ी में सुविधाओं का विस्तार से लेकर शहरी रोड, पार्कों की सफाई और रखरखाव के लिए फंड आता था लेकिन यह 2015-16 से बंद हो गया था।

सूत्रों के मुताबिक अब इन मदों में फंड मिल सकता है। साथ ही छठे राज्य वित्तीय आयोग के लिए कमेटी के गठन की घोषणा भी भाजपा की दिल्ली सरकार कर सकती है। इसके साथ 14 हजार करोड़ की देनदारी में से 2751 करोड़ रुपये की कर्मचारियों को सातवें वेतन आयोग से लेकर सेवानिवृत्त कर्मचारियों के भुगतान की है। ऐसे में इसे खत्म करने के लिए भी सरकार कुछ हद तक मदद कर सकती है।

आप सरकार में क्या हुआ था?

7541 करोड़ रुपये की दिल्ली सरकार से लोन है। इसके ऋण में कटौती या कमी की राहत की घोषणा हो सकती है। पुराने मदों में फंड शुरू होने से पार्षदों के पास जो क्षेत्रीय विकास निधि में कम फंड मिलता है और उससे विकास कार्य नहीं हो पाते हैं उसकी भरपाई इससे हो सकती है।

दिल्ली में आप और निगम में भी आप सरकार होने से दिल्ली की जनता को फायदे की उम्मीद थी, लेकिन न तो आप सरकार की ओर से कोई बड़ी राहत दी गई और जो घोषणाएं की गई वह क्रियान्वित भी नहीं हो सकी।

हालांकि दिल्ली में जब आप सरकार थी वह पूर्वकालिक कांग्रेस की सरकार से निगम को ज्यादा फंड देने का दावा करती थी। नियमानुसार दिल्ली सरकार के राजस्व में 12.5 प्रतिशत की हिस्सेदारी निगम की बनती है।

आप सरकार द्वारा निगम के लिए किए गए बजटीय प्रविधान

वित्त वर्ष	बजटीय प्रविधान
2019	20-6,380
2020	21-6,828
2021	22-6,172
2022	23-6,154
2023	24-8,241
2024	25-8423

विश्व टीबी दिवसः जागरूकता से जीत तक का सफर

[टीबी मुक्त भारत – एक सपना, जो अब हकीकत बनेगा]

कल्पना करें, एक ऐसी दुनिया जहां हर सांस आजादी से गूंजती हो, जहां हवा में जीवन की महक हो, न कि बीमारी का खौफ। हर साल 24 मार्च को विश्व टीबी दिवस हमें इसी सपने की ओर एक कदम और करीब ले जाता है। यह महज एक तारीख नहीं, बल्कि एक जागृति का आलम है, एक संकल्प का प्रतीक है जो कहता है कि क्षय रोग (टीबी) को हम अपनी धरती से मिटा सकते हैं। 2025 की थीम रहां! हम टीबी को समाप्त कर सकते हैंः प्रतिबद्ध, निवेश, परिणामरू इस संदेश को और गहराई देती है। यह एक ऐसा नारा है जो हमें झकझोरता है, हमें प्रेरित करता है और यह विश्वास दिलाता है कि अगर हम अपनी इच्छाशक्ति को संसाधनों और सही रणनीति से जोड़ दें, तो वह दिन दूर नहीं जब टीबी सिर्फ एक भूली-बिसरी कहानी बनकर रह जाएगी। जाएगी। यह दिन केवल चेतावनी नहीं, बल्कि एक क्रांति का बिगुल है।

टीबी कोई साधारण रोग नहीं, यह एक चुपके से हमला करने वाला शत्रु है, जो माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक सूक्ष्म बैक्टीरिया के रूप में हमारे बीच छिपा रहता है। यह हवा में तैरता है—एक खांसी, एक छींक, या साधारण बातचीत के जरिए यह फेफड़ों में दाखिल हो जाता है और धीरे-धीरे शरीर को कमजोर करने लगता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की मानें तो बीते दो दशकों में वैश्विक प्रयासों से करीब 7 करोड़ लोगों की जान बचाई गई है। यह आंकड़ा उम्मीद जगाता है, लेकिन इसके बावजूद टीबी आज भी हर साल लाखों सांसों को निगल जाती है। भारत में यह खतरा और भी भयावह रूप लेता है। 2023 में 3.2 लाख लोगों ने टीबी की चपेट में आकर अपनी जिंदगी खो दी—यह वैश्विक टीबी मौतों का 26% हिस्सा है। ये आंकड़े सिर्फ संख्याएं नहीं हैं; ये उन परिवारों की चीखें हैं, जिन्होंने अपनों को खोया। ये हमें सोचने पर मजबूर करते हैं—क्या हम इस जंग को और तेज नहीं कर सकते?

हालांकि, अंधेरे के बीच उम्मीद की किरण भी साफ दिखाई देती है। भारत में टीबी के खिलाफ लड़ाई अब पहले से कहीं ज्यादा मजबूत हो चुकी है। 2010 में जहां प्रति लाख लोगों में 275 से ज्यादा नए मामले सामने आते थे, वहीं 2023 में यह संख्या घटकर 195 पर आ गई। मौतों का आंकड़ा भी 5.8 लाख से कम होकर 3.2 लाख पर ठहर गया। यह बदलाव कोई संयोग नहीं है। यह सरकार के अथक प्रयासों, स्वास्थ्यकर्मियों की मेहनत, और समाज के जागरूक होने का नतीजा है। भारत ने 2025 तक टीबी मुक्त होने का एक साहसिक लक्ष्य रखा है—यह संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों की 2030 की समयसीमा से भी पांच साल आगे है। इस सपने को सच करने के लिए मुफ्त जांच, मुफ्त दवाएं, और जागरूकता अभियान तेजी से

चलाए जा रहे हैं। खास तौर पर डॉट्स (डायरेक्टली ऑब्जर्व्ड ट्रीटमेंट, शॉर्ट-कोर्स) पद्धति ने इलाज के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। इस पद्धति में मरीज को नियमित रूप से दवाइयां दी जाती हैं और उनकी निगरानी की जाती है, ताकि वे पूरी तरह ठीक हो सकें। यह न सिर्फ इलाज को प्रभावी बनाता है, बल्कि मरीजों को नई उम्मीद भी देता है।

इस जंग में तकनीक भी हमारा मजबूत सहयोगी बन रही है। डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएं, जैसे मोबाइल ऐप्स और टेलीमेडिसिन, अब उन इलाकों में भी इलाज पहुंचा रही हैं जहां स्वास्थ्य सुविधाएं सीमित हैं। ये तकनीकें ग्रामीण भारत के लिए वरदान साबित हो रही हैं, जहां मरीजों को डॉक्टरों तक पहुंचने के लिए मीलों पैदल चलना पड़ता था। साथ ही, टीबी की रोकथाम के लिए नए टीके और दवाइयों पर शोध तेजी से आगे बढ़ रहा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि अगले कुछ सालों में ऐसी दवाएं उपलब्ध हो सकती हैं, जो इलाज को और छोटा और प्रभावी बनाएंगी। लेकिन यह सब तभी संभव है जब हम इन तकनीकों को हर जरूरतमंद तक पहुंचाने के लिए संसाधन जुटाएं। इसके लिए निजी क्षेत्र, गैर-सरकारी संगठन और आम जनता को भी आगे आना होगा। यह सिर्फ सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक सामूहिक प्रयास की मांग है।

टीबी के खिलाफ यह लड़ाई सिर्फ चिकित्सा तक सीमित नहीं है—यह एक सामाजिक क्रांति भी है। टीबी के मरीजों को अक्सर समाज में तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। लोग इसे संक्रामक होने के डर से या गलत धारणाओं के कारण अभिशाप मानते हैं। हमें इस सोच को बदलना होगा। टीबी का मरीज कोई अपराधी नहीं, बल्कि हमारा अपना है—हमारा दोस्त, हमारा रिश्तेदार, हमारा पड़ोसी। हमें उन्हें सहारा देना होगा, उन्हें इलाज के लिए प्रेरित करना होगा। इसके लिए जागरूकता फैलाना बेहद जरूरी है। स्कूलों में बच्चों को टीबी के बारे में पढ़ाया जाए, गांवों में नुक्कड़ नाटक और चौपाल के जरिए संदेश पहुंचाया जाए, और शहरों में सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को जोड़ा जाए। हर व्यक्ति तक यह बात पहुंचनी चाहिए कि टीबी का इलाज संभव है, बशर्ते इसे समय पर पहचाना जाए।

भारत वह देश है जहां असंभव को संभव बनाने की परंपरा रही है। खेल के मैदान पर डी. गुकेश जैसे युवा शतरंज के ग्रैंडमास्टर बनकर दुनिया में तहलका मचा रहे हैं। अंतरिक्ष में हम चंद्रयान और मंगलयान जैसे मिशन से इतिहास रच रहे हैं। तो फिर टीबी जैसी बीमारी को हराने में हम पीछे क्यों रहें? यह विश्व टीबी दिवस हमारे लिए सिर्फ एक दिन नहीं, बल्कि एक मौका है—एक ऐसा मौका जो हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ भारत बनाने की प्रेरणा देता है। हमें यह शपथ लेनी होगी कि हम हर सांस को बचाएंगे, हर जिंदगी को संवारेंगे। यह सिर्फ एक लक्ष्य नहीं, बल्कि हमारी एकता, हमारी ताकत और हमारी जीत का ऐलान है। जब हम कहते हैं रहां! हम टीबी को समाप्त कर सकते हैं,₹ तो यह कोई खोखला वादा नहीं, बल्कि वह गर्जना है जो हर गांव, हर शहर, हर दिल तक गूंजनी चाहिए। यह वह संकल्प है जो हमें टीबी के खिलाफ अंतिम विजय तक ले जाएगा। आइए, इस विश्व टीबी दिवस पर हम सब मिलकर यह नारा बुलंद करें—₹टीबी हारेगा, भारत जीतेगा !₹ यह सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि हमारा हथियार, हमारा विश्वास और हमारी शक्ति है। वह दिन दूर नहीं जब भारत टीबी मुक्त होगा—और यह जीत हम सबकी होगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

"दिल्ली हाईकोर्ट के जज के यहां नोटों के बंडल नहीं, न्यायपालिका की विश्वसनीयता जली"

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट के एक जज के यहां करोड़ों रुपए के नोटों के बंडल मिलने पर आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और सांसद संजय सिंह ने न्यायपालिका की विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा किया है। उन्होंने कहा कि जज के यहां नोटों के बंडल नहीं जल रहे हैं, बल्कि न्यायपालिका की विश्वसनीयता जल रही है। न्यायपालिका हर तरह के फैसले लेने के लिए स्वतंत्रता है, लेकिन पिछले कुछ सालों में कई फैसले सवालों के घेरे में आए हैं। संभव है कि उसके पीछे रुपए का लेनदेन और भ्रष्टाचार हो। नोटों के बंडल मिलने को लेकर जज की सफाई भी बहुत हास्यास्पद है। हमने संसद में इसकी चर्चा कराने की मांग की है। न्यायपालिका में लोगों का भरोसा कायम रखने के लिए जज से इस्तीफा ले लेना चाहिए। क्योंकि उनको पद पर बने रहने से निष्पक्ष जांच संभव नहीं है।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और सांसद संजय सिंह ने जज के घर पर नोटों की गड्डियां मिलने को लेकर कहा कि मैं समझता हूं कि यह नोटों के बंडल नहीं जल रहे हैं, बल्कि न्याय पालिका की विश्वसनीयता जल रही है। भारतीय न्यायपालिका के पास असीम अधिकार है। हर तरह के फैसले लेने की स्वतंत्रता है। लेकिन पिछले कुछ सालों में बहुत सारे फैसले सवालों के घेरे में आए हैं। हो सकता है कि उसके पीछे कहीं न कहीं रुपए का लेनदेन और भ्रष्टाचार की प्रैक्टिस चलती हो। जजों के भ्रष्टाचार की कोई जांच नहीं हो पाती है। जजों के खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच को लेकर कई सारी पाबंदियां हैं।

उन्होंने कहा कि यह पहला मामला सार्वजनिक हुआ है। यह भी एक दुर्घटना वश सार्वजनिक हुआ है। वहां आग लगी और फायर ब्रिगेड पहुंचा, तब यह मामला सार्वजनिक हुआ है। इस मामले का संज्ञान लेना चाहिए। इसमें तरह-तरह की बातें सामने आ रही हैं। यह भी बात सामने आ रही है कि यह पैसा एक बड़े रिटायर्ड जज का है। वो मौजूदा जज के करीबी बताए जा रहे हैं। यह भी पता चल रहा है कि किसी केस के सिलसिले में यह लेनदेन का मामला है। इसलिए न्यायपालिका की विश्वसनीयता को कायम रखने के लिए इसकी तह तक जाना जरूरी है। न्यायपालिका पर यह जो काला दाग लगा है, इसको मिटाने की कोशिश के लिए इसकी तह तक जाना जरूरी है।

संजय सिंह ने कहा कि हम लोगों ने सभापति से संसद में भी इस मामले की चर्चा कराने की मांग की है। क्योंकि यह कोई छोटा मामला नहीं है। हाईकोर्ट के जज के घर में करोड़ों रुपए के नोटों का बंडल मिला है। जज साहब इसकी सफाई में जो कह रहे हैं, वह बहुत हास्यास्पद लगता है। उसकी सफाई कॉमेडी सर्कस का एक जोक लगता है। इसके अलावा कुछ नहीं लगता है। जिन लोगों के घरों में एक रुपए भी बरामद नहीं होता है, उनको सरकार फांसी पर चढ़ाने के लिए तैयार हो जाती है। जिस जज के घर में नोटों का बंडल मिल रहा है, उस पर सफाई देना कोई मायने नहीं रखता है।

उन्होंने कहा कि जज साहब का इस्तीफा होना चाहिए। जब तक वह अपने पद पर बने रहेंगे, तब तक निष्पक्ष जांच संभव ही नहीं है। अगर हाईकोर्ट का एक जज अपने पद पर बना रहेगा, तो उसके खिलाफ कौन सी एजेंसी जांच कर सकती है और कैसे निष्पक्ष जांच संभव है। जज साहब को कोई काम आवंटित करना या नहीं करना अलग विषय है। लेकिन उनके घर में करोड़ों रुपए के नोटों का बंडल मिल रहा है तो कम से कम जांच तक उनको अपने पद से बाहर रहना चाहिए।

आगरा में छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके बेटे संभाजी महाराज का बनने जा रहा भव्य स्मारक सिर्फ महाराष्ट्र या यूपी के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए गर्व की बात: वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

परिवहन विशेष न्यूज

यह स्मारक न केवल छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके बेटे संभाजी महाराज के त्याग, बलिदान एवं वीरता का प्रतीक बनेगा, एवं उनके कुशल नेतृत्व, साहस, और बुद्धिमत्ता की गाथाएं आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेंगी - ₹यह स्मारक आगरा में एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित होगा और देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को भारतीय इतिहास की महान गाथाओं से परिचित कराएगा₹ । छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता और साहस को समर्पित एक भव्य स्मारक आगरा में बनने जा रहा है। इस स्मारक के निर्माण की योजना को महाराष्ट्र सरकार ने मंजूरी दे दी है, जबकि यूपी सरकार इस परियोजना के लिए ज़मीन मुहैया कराएगी। यह स्मारक उस ऐतिहासिक स्थल पर बनाया जाएगा जहां क्रूर औरंगजेब ने छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके बेटे संभाजी महाराज को धोखे से नजरबंद कर लिया था। यह स्मारक न केवल उनकी वीरता का प्रतीक बनेगा, बल्कि आगरा को एक प्रमुख पर्यटन स्थल भी बना देगा। इस ऐतिहासिक योजना पर आभार व्यक्त करते हुए कहा, ₹छत्रपति शिवाजी महाराज हमारे आराध्य हैं, उनकी वीरता और साहस की गाथाएं आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेंगी। इस स्मारक के निर्माण से न केवल उनकी वीरता को सम्मान मिलेगा, बल्कि यह स्थान पर्यटन के दृष्टिकोण से भी विश्व स्तर पर प्रसिद्ध होगा।₹ ₹आगरा में छत्रपति शिवाजी महाराज का एक भव्य स्मारक बनना बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस ऐतिहासिक स्थान से उनका गहरा नाता है। 1666 में क्रूर औरंगजेब ने उन्हें और उनके पुत्र संभाजी महाराज को धोखे से आगरा में नजरबंद कर लिया था। लेकिन छत्रपति शिवाजी महाराज अपनी बुद्धिमत्ता और साहस के कारण वहां से सफलतापूर्वक निकले और अपने स्वराज्य की ओर लौटे। अब, महाराष्ट्र और यूपी सरकार के सहयोग से इस स्थल पर एक भव्य स्मारक स्थापित किया जाएगा, जो उनकी वीरता और साहस को सदा याद रखेगा। उन्होंने यह भी बताया कि आगरा के जयपुर हाउस स्थित मीना बाजार मैदान में स्थित 'राम सिंह की कोठी' ही वह स्थान है जहां शिवाजी महाराज और उनके पुत्र संभाजी को क्रूर औरंगजेब ने बंदी बना रखा था। यह कोठी 100 फीट ऊंचे टीले पर स्थित है, और अब यहीं पर शिवाजी महाराज का भव्य स्मारक बनकर तैयार होगा। इस स्मारक में उनकी शौर्य गाथाओं को चित्रित किया जाएगा, ताकि नई पीढ़ी को उनके साहस और नेतृत्व से प्रेरणा मिल सके। साथ ही उन्होंने कहा,₹छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता, साहस, और बुद्धिमत्ता की गाथा को एक प्रतीक के रूप में इस स्मारक के माध्यम से जीवित रखा जाएगा। महाराष्ट्र सरकार इस स्मारक के निर्माण के साथ-साथ अन्य ऐतिहासिक स्थानों को भी सहेजने और उन्हें भव्य बनाने का कार्य कर रही है, जो छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके पुत्र संभाजी से जुड़े हुए हैं। ₹छत्रपति शिवाजी महाराज का आगरा से गहरा संबंध था, और अब इस स्मारक के माध्यम से उनकी यादें और उनकी वीरता सदैव जीवित रहेंगी। यह सिर्फ महाराष्ट्र या यूपी के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए गर्व की बात है।₹ यह स्मारक आगरा में एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित होगा और देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को भारतीय इतिहास की महान गाथाओं से परिचित कराएगा।

मर्यादा सहित पर्वतों का वर्णन

सूतजी बोले - पचास करोड़ योजन विस्तार वाले समुद्र तथा सात द्वीपों और लोकालोक पर्वतों से पृथ्वी युक्त है। मेरु से उत्तर में नील पर्वत, उससे उत्तर में श्वेत तथा उससे उत्तर में शृङ्गी पर्वत है। यह उस देश के पर्वत हैं। पूर्व दिशा में जठर और देवकूट पर्वत है। मेरु से दक्षिण में निषद, उससे दक्षिण में हेमकूट, उससे भी दक्षिण में हिमवान है, मेरु से पश्चिम में माल्यवान और गन्धमादन दो पर्वत हैं। ये पर्वतराज सिद्ध चरणों से सेवित हैं। यह हेमवत नाम का वर्ष भारत के नाम से प्रसिद्ध है। मेरु पर्वत के पूर्व में मन्दर नाम का पर्वत, दक्षिण में गन्धमादन, पश्चिम में विपुल, उत्तर में सुपार्श्व नाम के पर्वतराज हैं। मन्दर पर्वत पर चार लम्बी शाखा के वृक्ष हैं जो केतु के समान हैं। कदम्ब, जामुन, पीपल तथा वट के चार वृक्ष हैं। चारों ओर क्रीड़ा वन हैं। पूर्व में चैत्ररथ, दक्षिण में गन्धमादन, पश्चिम में वैभ्राज, उत्तर में सवितुर्वन हैं। चार ही उस पर महान सरोवर हैं। इनमें मुनि लोग क्रीड़ा करते हुए विचरते हैं। पूर्व में अरुणोद, दक्षिण में मानस, पश्चिम में सितोद, उत्तर में महाभद्र सरोबर है। अरुणोद सरोवर से पूर्व में बहुत से पर्वत हैं जिन्हें मैं संक्षेप से कहता हूँ। सितान्त, कुरुंड, कुरर, विकार, मणि, शैल इत्यादि पर्वत हैं। मन्दिर पर्वत के पूर्व दिशा में सिद्धों का वास है। वहाँ पर्वतों की गुफा में और वनों में रुद्र क्षेत्र हैं। मानस सरोवर के दक्षिण में बहुत से पर्वत हैं, जिनमें दिव्य रुद्र क्षेत्र स्थापित किये गये हैं। दिव्य पर्वतों के ऊपर देवशंकर के असंख्य धिमान हैं जिनमें शिवजी की कृपा से अनेक सिद्ध और मुनि लोग वास करते हैं। इसी प्रकार से पातालों की भी स्थिति है। वहाँ भगवान विष्णु की साक्षात्मूर्ति भगवान हलायुध विद्यमान हैं। वहाँ देव देव की शैय्या है। पनस वृक्षों के वन में श्री शुक्राचार्य सहित उरग रहते हैं। मनोहर वन में करोड़ों संख्याओं के वृक्ष हैं। वहाँ गणों के साथ नन्दीश्वर शिव की स्तुति करते हैं। सन्तानक स्थली के मध्य में साक्षात्देवी सरस्वती रहती हैं। इस प्रकार संक्षेप में वन तथा पर्वतों में रहने वाले इन वन-वासियों की कथा तुमसे कही है।

सुयोग्य जीवनसाथी की तलाश में 250 से ज्यादा युवक- युवतीयो ने दिया परिचय

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। ब्राह्मण की बेटी ब्राह्मण के घर जैसे सामाजिक भाव को लेकर आज विप्र फाउंडेशन के नेतृत्व में सर्व ब्राह्मण समाज का युवक युवती परिचय सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन सम्पन्न हुआ। सुबह से ही मंगरोप रोड़ स्तिथ शौर्यगढ़ पैलेस में ब्राह्मण समाज के लोगो की चहल पहल बढ़ने लगी। भीलवाड़ा के अलावा तीन अन्य जिले चित्तौड़गढ़,राजसमंद व उदयपुर जिलों से आये प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। जिला महामंत्री लोकेश तिवारी ने बताया कि विगत तीन माह से संगठन युद्ध स्तर पर इस आयोजन को भव्य व दिव्य बनाने के लिए तैयारियां कर रहा था। मंच पर राष्ट्रीय संरक्षक व मावली के पूर्व विधायक धर्मनारायण जोशी, राष्ट्रीय महामंत्री के.के.शर्मा,प्रदेश संरक्षक हिम्मत नागला, निम्बार्काचार्य महंत मोहन शरण शास्त्री, प्रदेश अध्यक्ष नरेंद्र पालीवाल,प्रदेश महामंत्री दिनेश शर्मा, युवा प्रदेश अध्यक्ष विकास शर्मा, महिला प्रदेश अध्यक्ष इंदिरा शर्मा,जिलाध्यक्ष तुलसीराम शर्मा, महामंत्री मुरलीधर जोशी,महिला जिलाध्यक्ष दया गौड़, युवा जिलाध्यक्ष लक्ष्मी नारायण व्यास सहित संगठन के कई पदाधिकारियो की मौजूदगी में दीप प्रज्वलन के बाद कार्यक्रम शुरू हुआ। विप्र प्रार्थना के बाद युवक युवतियों ने अपना परिचय देना प्रारम्भ किया। सर्व ब्राह्मण समाज के 250 से ज्यादा युवक- युवतियों ने सुयोग्य जीवन साथी के लिए अपना विस्तृत परिचय दिया। एक तरफ उनका परिचय और दूसरी और लाइव एलईडी वाल पर उनका डिजिटल बॉयोडाटा प्रसारित हों रहा था।बीच बीच मे नन्हे बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक नृत्य ने सभी दर्शको का मन

मोह लिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय संरक्षक धर्म नारायण जोशी ने इस आयोजन को आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताया, और कहा कि ऐसे आयोजन से माता पिता को अपने बच्चों के लिए मनपसंद के जीवनसाथी चुनने का विकल्प मिल जाता है। कार्यक्रम के दौरान विप्र फाउंडेशन के संस्थापक संयोजक सुशील ओझा ने गुवाहाटी से लाइव वीडियो वार्ता कर पूरी आयोजन कमेटी को धन्यवाद भी दिया और सफल आयोजन की बधाई दी। आज के आयोजन के दौरान शहर के ब्राह्मण समाज के विभिन्न घटकों के पदाधिकारियों, ब्राह्मण पार्षदों व भामाशाहो का मोमेंटो व पगड़ी पहनाकर सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री के.के.शर्मा ने संगठन की वर्तमान में चल रही गतिविधियों के बारे में भी लोगो को अवगत कराया। कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष नरेंद्र पालीवाल ने अरुणाचल प्रदेश में पांचवे धाम के रूप में बन रही 54 फ़ीट ऊंची भगवान परशुराम की प्रतिमा व उदयपुर में संचालित हो रहे विप्र कॉलेज के बारे में जानकारी दी साथ ही यह भी कहा कि आज के समय में परिचय सम्मेलन समाज के विकास के लिए मील का पत्थर साबित हो रहे है। परिचय सम्मेलन भाग लेने के लिए अभिभावकों में काफी उत्साह देखा गया। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों की मौजूदगी में विप्र स्मारिका का विमोचन भी किया गया। कई बच्चे बाहर नौकरी करने के कारण नही आ पाए तो उनके संरक्षक व अभिभावकों ने उनका परिचय दिया। आयोजन के दौरान पूर्व विधायक विट्ठल शंकर अवस्थी, महापौर राकेश पाठक, अक्षय त्रिपाठी जिलाध्यक्ष कांग्रेस कमेटी, चित्तौड़गढ़ जिलाध्यक्ष शिरीष त्रिपाठी, यातायात निरीक्षक अनिल तिवारी, विप्र फाउंडेशन की प्रदेश कार्यकारिणी की कल्पना तिवारी, सविता जोशी, अंजू ओझा, मधु शर्मा, मधु खण्डेलवाल, मीना भारद्वाज, सीमा पारीक, एडवोकेट रेखा ओझा, नीलम शर्मा, दीपक गौड़, विष्णु भट्ट, अभिषेक शर्मा, विशाल सुखवाल, शुभम शर्मा, विवेक सुखवाल, युवा टीम से सूरज जोशी, हर्षित शर्मा, ब्राह्मण समाज के जगदीश शर्मा, भेरू लाल जोशी, श्याम सुन्दर गोड़, राधेश्याम शर्मा, मनोज घोटवाला,नवीन शर्मा महेंद्र शर्मा, नेता प्रतिपक्ष धर्मेंद्र पारीक, बालकिशन पराशर, रामेश्वर गोवला, एडवोकेट हेमेंद्र शर्मा सहित ब्राह्मण समाज के विभन्न घटकों के अध्यक्ष, पार्षदगण, जनप्रतिनिधि व समाजगण मौजूद थे।

संगम यूनिवर्सिटी के छात्रों ने लहराया परचम

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। संगम यूनिवर्सिटी के छात्रों ने आल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन(AIMA), नई दिल्ली द्वारा भोपाल, मध्य प्रदेश में आयोजित बिज़नेस सिमुलेशन प्रतियोगिता में मध्य भारत की 39 टीमों में द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्थान प्राप्त किया।कौशल विकास और उद्यामिता केंद्र के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. मनोज कुमावत के नेतृत्व में 10 छात्रों (तीन टीम) को इस प्रतियोगिता की तैयारी करवाई गयी। इसके अंतर्गत बिज़नेस सिमुलेशन द्वारा छात्र बाजार के परिणामों का विश्लेषण करते हैं।19 मार्च से 21 मार्च तक चली इस 3 दिवसीय प्रतियोगिता में अलग अलग राज्यों से विश्वविद्यालयों ने हिस्सा लिया।विजेता टीम राष्ट्रीय स्तर पर कोयाम्बतुर, तमिलनाडु में होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में संगम यूनिवर्सिटी का नेतृत्व करेंगी।विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कुलपति प्रो. करुणेश सक्सेना ने इसे एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया जिसमे छात्रों ने अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन किया।प्रो. मानस रंजन, उपकुलपति तथा रजिस्ट्रार प्रो. राजीव मेहता ने छात्रों को शुभकामनाएं दी। छात्रों की टीम को निकिता राठौड के मार्गदर्शन में भेजा गया।विजेता टीम में नंदिनी टिबरेवाल, कुमकुम शर्मा, आर्यन साहनी, दीपक यादव, नवांश जागेटिया, प्रियांशु राठी, नीति व्यास, समर्था चौधरी, रूद्र सिंह और योगेश यादव ने सराहनीय प्रदर्शन किया।

विश्व क्षय रोग दिवस

हर साल 24 मार्च को मनाया जाने वाला विश्व क्षय रोग दिवस, दुनिया भर के समुदायों पर क्षय रोग (टीबी) के विनाशकारी प्रभाव की याद दिलाता है। निदान और उपचार में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, टीबी एक गंभीर वैश्विक स्वास्थ्य खतरा बना हुआ है, खासकर निम्न और मध्यम आय वाले देशों में। जैसा कि हम 2024 में विश्व क्षय रोग दिवस मनाते हैं, इस महामारी को समाप्त करने और टीबी मुक्त दुनिया के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करना अनिवार्य है।

क्षय रोग का वैश्विक बोझ तपेदिक माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक जीवाणु के कारण होता है और मुख्य रूप से फेफड़ों को प्रभावित करता है, हालांकि यह शरीर के अन्य भागों को भी प्रभावित कर सकता है। यह संक्रमित व्यक्ति के खांसने या छींकने पर हवा के माध्यम से फैलता है, जिससे यह अत्यधिक संक्रामक हो जाता है। टीबी असमान रूप से कमजोर आबादी को प्रभावित करता है, जिसमें गरीबी में रहने वाले, भीड़भाड़ वाली परिस्थितियों में रहने वाले और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग शामिल हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, टीबी दुनिया भर में मृत्यु के शीर्ष 10 कारणों में से एक है, अनुमान है कि हर साल 10 मिलियन लोग बीमार पड़ते हैं और 1.5 मिलियन लोग इस बीमारी से मर जाते हैं। टीबी का बोझ विशेष रूप से अफ्रीका और दक्षिण पूर्व एशिया में भारी है, जहाँ रोकथाम, निदान और उपचार के लिए संसाधन अक्सर सीमित होते हैं।

क्षय रोग क्या है? क्षय रोग (टीबी), माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक जीवाणु के कारण होने वाला एक संक्रामक रोग है। यह मुख्य रूप से फेफड़ों को प्रभावित करता है, लेकिन यह शरीर के अन्य भागों जैसे मस्तिष्क, रीढ़ या गुर्दे को भी प्रभावित कर सकता है। टीबी हवा के माध्यम से फैलता है जब कोई संक्रमित व्यक्ति खांसता, छींकता या बात करता है, जिससे हवा में छोटी-छोटी संक्रामक बूंदें निकलती हैं जिन्हें दूसरे लोग सांस के साथ अंदर ले सकते हैं। तपेदिक के लक्षणों में लगातार खांसी शामिल हो सकती है जो तीन सप्ताह से अधिक समय तक रहती है, खून की खांसी, सीने में दर्द, थकान, बुखार, रात में पसीना आना और वजन कम होना। टीबी सुप्त हो सकता है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति बैक्टीरिया को ले जाता है लेकिन लक्षण नहीं दिखाता है या बीमार महसूस नहीं करता है। अन्य मामलों में, टीबी सक्रिय हो सकता है, लक्षण पैदा कर सकता है और व्यक्ति को संक्रामक बना सकता है।

टीबी का इलाज एंटीबायोटिक दवाओं से किया जा सकता है, लेकिन आमतौर पर इलाज में कई महीनों तक कई दवाएँ लेना शामिल होता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि बैक्टीरिया शरीर से पूरी तरह से खत्म हो गया है। टीबी के रोगियों को बैक्टीरिया के दवा-प्रतिरोधी उपभेदों के विकास को रोकने के लिए उपचार का पूरा कोर्स पूरा करना होगा। कुछ मामलों में, टीबी के दवा-प्रतिरोधी उपभेदों का इलाज करना अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है और इसके लिए अलग-अलग दवाओं या लंबे समय तक उपचार की आवश्यकता हो सकती है।

विश्व क्षय रोग दिवस का महत्व

जागरूकता बढ़ानाः विश्व क्षय रोग दिवस क्षय रोग की वैश्विक महामारी, व्यक्तियों और समुदायों पर इसके विनाशकारी प्रभाव और रोग को खत्म करने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है।

वैश्विक स्वास्थ्य प्राथमिकताः तपेदिक दुनिया की सबसे घातक संक्रामक बीमारियों में से एक है, जिसके कारण हर साल लाखों लोगों की मौत होती है। यह दिन वैश्विक स्वास्थ्य प्राथमिकता के रूप में टीबी से निपटने और इससे प्रभावी ढंग से निपटने के लिए संसाधन जुटाने के महत्व पर जोर देता है।

कलंक को समाप्त करनाः टीबी को अक्सर कलंक और भेदभाव से जोड़ा जाता

है, जो रोग को नियंत्रित करने के प्रयासों में बाधा बन सकता है। विश्व टीबी दिवस टीबी संक्रमण, उपचार और रोकथाम के बारे में सटीक जानकारी को बढ़ावा देकर कलंक और भेदभाव को चुनौती देने में मदद करता है।

प्रगति की निगरानीः विश्व टीबी दिवस वैश्विक तपेदिक लक्ष्यों की दिशा में प्रगति की निगरानी के लिए एक चेकपॉइंट के रूप में कार्य करता है, जैसे कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की टीबी उन्मूलन रणनीति और सतत विकास लक्ष्यों द्वारा निर्धारित लक्ष्य। यह उपलब्धियों पर विचार करने, चुनौतियों की पहचान करने और टीबी को समाप्त करने की दिशा में प्रगति में तेजी लाने के लिए प्रतिबद्धताओं को नवीनीकृत करने का अवसर प्रदान करता है।

शोध और नवाचार को बढ़ावा देनाः यह दिन टीबी के लिए नए उपकरण, निदान और उपचार विकसित करने में शोध और नवाचार के महत्व पर भी प्रकाश डालता है। यह दवा प्रतिरोध, एचआईवी के साथ सह-संक्रमण और सस्ती और प्रभावी टीबी देखभाल तक पहुंच जैसी चुनौतियों का समाधान करने के लिए शोध में निवेश को प्रोत्साहित करता है।

क्षय रोग की रोकथाम

टीकाकरण : बैसिल कैलमेट-गुएरिन (बीसीजी) वैक्सीन का इस्तेमाल कई देशों में बच्चों में टीबी के गंभीर रूपों, जैसे टीबी मेनिन्जाइटिस और माइलरी टीबी को रोकने के लिए किया जाता है। हालाँकि, बीमारी के सबसे आम रूप, फुफ्फुसीय टीबी को रोकने में इसकी प्रभावशीलता परिवर्तनशील है।

स्क्रीनिंग और प्रारंभिक पहचानः सक्रिय टीबी मामलों का प्रारंभिक पता लगाना और उपचार संक्रमण को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है। स्क्रीनिंग कार्यक्रम, विशेष रूप से उच्च जोखिम वाली आबादी जैसे कि टीबी रोगियों, स्वास्थ्य सेवा कर्मियों और एचआईवी/एड्स से पीड़ित लोगों के घरेलू संपर्कों के लिए, मामलों की जल्द पहचान करने में मदद करते हैं।

लेटेंट टीबी संक्रमण (LTBI) का उपचारः लेटेंट टीबी संक्रमण वाले व्यक्तियों के शरीर में टीबी बैक्टीरिया होता है, लेकिन उनमें लक्षण नहीं होते और वे बीमारी नहीं फैला सकते। हालाँकि, इस बात का जोखिम है कि लेटेंट टीबी सक्रिय टीबी रोग में बदल सकता है। आइसोनियाज़िड या रिफैम्पिसिन जैसे एंटीबायोटिक दवाओं के साथ लेटेंट टीबी संक्रमण का इलाज करने से सक्रिय टीबी में प्रगति को रोका जा सकता है।

संक्रमण नियंत्रण उपायः स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में संक्रमण नियंत्रण उपायों को लागू करने से, जैसे कि उचित वेंटिलेशन, मास्क का उपयोग, और टीबी रोगियों को अलग रखना, स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ताओं और अन्य रोगियों में संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है।

शिक्षा और जागरूकताः सार्वजनिक शिक्षा अभियान टीबी, इसके लक्षणों और लक्षण विकसित होने पर चिकित्सा देखभाल लेने के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ा सकते हैं। शिक्षा मिथकों को दूर करने और बीमारी से जुड़े कलंक को कम करने में भी मदद करती है, जो लोगों को निदान और उपचार लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों को संबोधित करनाः टीबी असमान रूप से हाशिए पर रहने वाली आबादी को प्रभावित करती है, जिसमें गरीबी में रहने वाले लोग, बेघर व्यक्ति, प्रवासी और शरणार्थी शामिल हैं। स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों को संबोधित करना, जैसे कि स्वास्थ्य सेवा, आवास, पोषण और स्वच्छता तक पहुँच में सुधार, टीबी की घटनाओं को कम करने में मदद कर सकता है।

"राणा सांगा: केवल राजपूतों के नहीं, संपूर्ण भारत के गौरव!"

राणा सांगा का अपमान केवल राजपूतों का अपमान नहीं है, यह पूरे भारतवर्ष के स्वाभिमान पर आघात है। वह सिर्फ एक जाति के राजा नहीं थे, बल्कि वह उस वीर परंपरा के प्रतीक थे जिसने मुगलों की क्रूरता के सामने घुटने टेकने के बजाय तलवार उठाने को प्राथमिकता दी।

आज जब कोई ओछी मानसिकता का व्यक्ति हमारे महान वीरों का अपमान करता है, तो क्या हम केवल राजपूत समाज से प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करेंगे? क्या यह हमारा नैतिक दायित्व नहीं कि हम इतिहास के गौरव की रक्षा करें?

जो भी व्यक्ति जाति देखकर चुप है, वह स्वयं को कितना भी बड़ा राष्ट्रवादी कहे, लेकिन वास्तविकता यही है कि वह अपनी कायरता छुपा रहा है।

यह लड़ाई किसी जाति की नहीं, बल्कि हमारे इतिहास, संस्कृति और स्वाभिमान की है।

जो लोग राजपूतों के नाम पर सोशल मीडिया पर महज़ दिखावा करते हैं, लेकिन जब वास्तविकता में विरोध की बारी आती है तो सुविधाजनक चुप्पी साध लेते हैं, उनसे किसी आशा की अपेक्षा करना व्यर्थ है।

हमारी आशा वह आम भारतीय नागरिक है

जिसे हर नदी के जल में माँ गंगा दिखती है,

जिसे बहते हुए कंकड़ में भगवान शंकर का दर्शन होता है,

जिसे इस देश की मिट्टी में माँ का स्वरूप दिखता है,

जिसे अपनी सनातन परंपरा पर गर्व है और

जिसे अपने इतिहास के विकृतिकरण पर आक्रोश होता है।

"जो वीरों के अपमान पर मौन है, वह इतिहास में कायर कहलाएगा!"

अब समय आ गया है कि हम संकीर्ण मानसिकता, जातिवाद और राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर अपने गौरवशाली अतीत की रक्षा करें। जो लोग इस देश की संस्कृति, इतिहास और उसके वीरों का अपमान कर रहे हैं, उन्हें यह समझना होगा कि भारत की आत्मा को कोई विकृत नहीं कर सकता। राणा सांगा केवल राजपूतों के नहीं, बल्कि भारत की आन-बान-शान के प्रतीक हैं। उनका अपमान पूरे भारत का अपमान है, और इसका प्रतिकार पूरे राष्ट्र को करना चाहिए!

महिंद्रा स्कॉर्पियो एन डीजल के बेस वेरिएंट को है घर लाना, पांच लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद कितनी जाएगी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

Car Finance Plan Mahindra की ओर से एसयूवी के तौर पर Mahindra Scorpio N Diesel को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस एसयूवी के डीजल बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो पांच लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। महिंद्रा की ओर से कई सेगमेंट में एसयूवी की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर Mahindra Scorpio N की बिक्री की जाती है। इस एसयूवी के डीजल इंजन वाले बेस वेरिएंट को पांच लाख रुपये की Down Payment देने के बाद खरीदकर घर लाना है तो हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Mahindra Scorpio N Diesel Price

Mahindra की ओर से Scorpio N के डीजल बेस वेरिएंट के तौर पर Z2 को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस एसयूवी के बेस वेरिएंट को 14.39 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 14.39 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 1.85 लाख रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब एक लाख रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके अलावा इस पर 29 हजार रुपये अन्य खर्च के देने होंगे। इसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 17.53 लाख रुपये हो जाती है।

पांच लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Mahindra Scorpio N के डीजल बेस वेरिएंट Z2 को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में पांच लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 12.53 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 12.53 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 20164 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 12.53 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 20164 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Mahindra Scorpio N के डीजल बेस वेरिएंट Z2 के लिए करीब 4.40 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 21.93 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Mahindra की ओर से Scorpio N को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Mahindra XUV 700, MG Hector, Tata Safari जैसी एसयूवी के साथ होता है।

टाटा कर्व के बेस वेरिएंट स्मार्ट को है घर लाना, तीन लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद जाएगी कितनी ईएमआई

Car Finance Plan Tata की ओर से कूप एसयूवी के तौर पर Tata Curvv को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस एसयूवी के बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो तीन लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Tata Motors की ओर से भारतीय बाजार में कूप एसयूवी सेगमेंट में Tata Curvv को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से ऑफर किए जाने वाले बेस वेरिएंट को अगर खरीदकर घर लाना चाहते हैं तो तीन लाख रुपये की डाउन पेमेंट करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Tata की ओर से Curvv के बेस वेरिएंट के तौर पर Smart को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस कूप एसयूवी के बेस वेरिएंट को 9.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 9.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 77 हजार रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 41 रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। जिसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 11.18 लाख रुपये हो जाती है।

तीन लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Tata Curvv के बेस वेरिएंट Smart को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में तीन लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 8.18 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 8.18 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 13166 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 8.18 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 13166 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Tata Curvv के बेस वेरिएंट Smart के लिए करीब 2.87 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 14.10 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Tata Motors की ओर से Curvv को कूप एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Citroen Basalt, Toyota Urban Cruiser Hyryder, Hyundai Creta, Honda Elevate जैसी एसयूवी के साथ होता है।

कैसी है एमजी की हैक्टर प्लस, कितनी मिलेगी माइलेज, क्या खरीदने में होगा फायदा

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश वाहन निर्माता एमजी की ओर से भारतीय बाजार में मिड साइज एसयूवी के तौर पर Hector Plus Diesel की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी को हमने करीब दो हजार किलोमीटर तक चलाया। इस दौरान हमने कई मायनों में परखा। MG Hecotor Plus Diesel को खरीदना कितना बेहतर होगा या नहीं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटेन की वाहन निर्माता MG की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर भारतीय बाजार में Hector Plus को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी को हमने करीब दो हजार किलोमीटर चलाया। इस दौरान हमने इसे कई मायनों में परखा। क्या यह सच में एक परिवार के लिए बेहतरीन एसयूवी है। क्या इसे खरीदने में फायदा (MG Hector Plus Mileage Test and Review) होगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कैसी है MG Hector Plus Diesel

एमजी की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर हेक्टर प्लस डीजल को ऑफर किया जाता है। हमने भी इसे परखने की कोशिश की, जिससे यह समझ सकें कि आखिर क्यों यह एसयूवी अपने सेगमेंट की सबसे बेहतरीन एसयूवी में से एक है। हमने इसे करीब एक हफ्ता शहर, हाइवे, एक्सप्रेस वे के साथ ही पहाड़ी इलाके में भी दिन और रात के समय चलाया।

कैसा है डिजाइन

MG अपनी सभी कारों को काफी बेहतरीन डिजाइन के साथ ऑफर करती है। इस एसयूवी में भी फ्रंट को इस तरह से डिजाइन किया गया है जिससे गाड़ी देखने में काफी बड़ी लगती है। फ्रंट में बड़ी ग्रिल के साथ साथ बेहद पतली एलईडी डीआरएल दी गई हैं। हेडलाइट्स को थोड़ा नीचे की ओर पोजिशन किया गया है। साइड प्रोफाइल से भी यह काफी बड़ी दिखाई देती है। वहीं रियर से इसकी कनेक्टिड टेल लाइट्स रात के समय काफी बेहतर तरीके से काम करती हैं। गाड़ी में पैनोरमिक सनरूफ दिया गया है जिसके साथ बड़ी विंडशील्ड और साइड विंडो के कारण केबिन काफी एयरी महसूस होता है।

कैसे हैं फीचर्स

MG Hector Plus Diesel को छह सीटों के विकल्प के साथ ऑफर किया जाता है। इसमें फ्रंट की सीट्स के अलावा मिडल सीट्स को पायलट सीट के तौर पर दिया जाता है। जिससे लंबे सफर के दौरान पीछे बैठने वालों को भी किसी तरह की परेशानी नहीं आती। वहीं तीसरी रो में दो लोग आसानी से बैठ सकते हैं, लेकिन अगर उनकी हाइट करीब छह फीट या उसके आस-पास है तो फिर तीसरी पंक्ति में लंबे सफर के दौरान थोड़ी परेशानी हो सकती है। हालांकि गाड़ी में पैनोरमिक सनरूफ, इनफिनिटी का ऑडियो सिस्टम, 14 इंच बड़ा इंफोटेनमेंट सिस्टम, फ्रंट सीट्स के लिए वेंटिलेटिड फीचर काफी अच्छी तरह से काम करते हैं। लेकिन रात के समय गाड़ी की हेडलाइट को हाई बीम पर चलाने के दौरान रोशनी थोड़ी कम लगती है।

कितना दमदार इंजन

कंपनी की ओर से इस एसयूवी में दो लीटर की क्षमता के डीजल इंजन को दिया जाता है। जिसके साथ छह स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन मिलता है। एक अच्छी ग्राउंड क्लियरेंस और ड्राइवर के लिए अच्छी विजिबिलिटी खराब सड़कों पर भी बेहतरीन अनुभव देती है। पहाड़ी सड़कें हो या फिर सपाट एक्सप्रेस वे गाड़ी को कंट्रोल में रखने के साथ ही किसी तरह की शिकायत नहीं होती। इसके साथ ही क्रूज कंट्रोल का विकल्प मिलता है, जिससे लंबा सफर करते हुए थकान भी काफी कम महसूस होती है। गाड़ी को डीजल इंजन के साथ सिर्फ मैनुअल ट्रांसमिशन में ही ऑफर किया जाता है, लेकिन इसके डीजल इंजन को अगर ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के विकल्प के साथ भी ऑफर किया जाए तो फिर इसे चलाना और भी बेहतर अनुभव दे सकता है।

कितनी है माइलेज

MG Hector Plus Diesel को हमने पूरी क्षमता के साथ चलाया। कुछ छह व्यस्कों और एक बच्चे के साथ गाड़ी में चार से पांच बैग के साथ सफर किया। करीब दो हजार किलोमीटर में से एक हजार किलोमीटर से थोड़ा ज्यादा एक्सप्रेस वे पर पूरा किया। इसके अलावा इसे 300 किलोमीटर के करीब नेशनल हाइवे पर चलाया। इसके अलावा 200 किलोमीटर के आस-पास पहाड़ी क्षेत्र और बाकी किलोमीटर शहरी ट्रैफिक के बीच चलाया। इस दौरान हमें करीब 15 किलोमीटर की माइलेज इस एसयूवी से मिली।

समीक्षा

अगर आपको एक ऐसी गाड़ी चाहिए जिससे आसानी से 500 से 700 किलोमीटर बिना थके सफर किया जा सके। घर में चार सदस्यों के साथ काफी ज्यादा सामान रखने की जगह चाहिए या फिर सफर करने वालों की संख्या बढ़ जाए तो भी आराम से लंबा सफर तय किया जा सके। बड़े इंजन के साथ अच्छी माइलेज, बेहतरीन फीचर्स वाली एसयूवी चाहिए तो MG Hector Plus Diesel को चुना जा सकता है।

लेकिन अगर आप एक ऐसी एसयूवी चाहते हैं जो दिखने में ज्यादा बड़ी न लगे और पैनोरमिक सनरूफ, 14 इंच स्क्रीन के साथ ही डीजल इंजन वाली एसयूवी नहीं चाहते तो फिर अन्य विकल्पों पर विचार किया जा सकता है।

बीवाईडी एटटू 3 वर्सेज एमजी जेडएस ईवी : फीचर्स, ड्राइविंग रेंज और कीमत के मामले में कौन बेहतर

परिवहन विशेष न्यूज

हम यहां पर आपको MG ZS EV और BYD Atto 3 का दोनों की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि दोनों दोनों कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) में से कौन डाइमेंशन फीचर्स ड्राइविंग रेंज और कीमत के मामले में कौन बेहतर है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs में कई ऑटोमेकर अपनी गाड़ियां पेश करती है। इसमें MG ZS EV और BYD Atto 3 भी आती है। वहीं, हाल में Atto 3 को कई अपडेट्स भी मिले हैं, जिसकी वजह से इसकी ZS EV के साथ उसकी प्रतिद्वंद्विता फिर से बढ़ गई है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि डाइमेंशन, फीचर्स, ड्राइविंग रेंज और कीमत के मामले में कौन बेहतर है।

1. डाइमेंशन (Dimensions)

पैरामीटर	BYD Atto 3	MG ZS EV
लंबाई	4455 mm (+132 mm)	4323 mm
चौड़ाई	1875 mm (+66 mm)	1809 mm
ऊंचाई	1615 mm (-34 mm)	1649 mm
व्हीलबेस	2720 mm (+135 mm)	2585 mm

अपडेटेड BYD Atto 3, MG ZS EV से बड़ी है। इसका व्हीलबेस 135mm लंबा है, जिसकी वजह से इसमें ज्यादा जगह मिलता है। इसके अलावा, चौड़ाई ज्यादा होने पर तेज गति में इसकी स्थिरता भी बेहतर बनी रहती है। हालांकि, ZS EV, Atto 3 से 35 mm ज्यादा ऊंची है।

2. फीचर्स (Features)

उपकरण	BYD Atto 3	MG ZS EV
DRLs के साथ LED हेडलैंप्स	हां	हां
व्हील साइज	18-इंच अलॉय व्हील	17-इंच अलॉय व्हील
इंफोटेनमेंट	12.8-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम	10.1-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम
डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले	हां, 5-इंच	हां, 7-इंच
एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले	हां	हां
पॉवर्ड फ्रंट सीट पंक्ति	हां	हां, केवल ड्राइवर के लिए
सीट वेंटिलेशन	हां	नहीं
सनरूफ	हां, पैनोरमिक	हां, पैनोरमिक
ऑटोमेटिक क्लाइमेंट कंट्रोल	हां	हां
वायरलेस फ़ोन चार्जिंग	हां	हां
साउंड सिस्टम	8-स्पीकर Dirac HD साउंड सिस्टम	6-पीकर हरमन कार्डन साउंड सिस्टम
ऐंबीएंट लाइटिंग	हां	नहीं
कनेक्टेड कार तकनीक	हां	हां
NFC--आधारित डिजिटल कार्ड चाबी	हां	हां, स्मार्टफोन में एकीकृत
एयरबैग्स	7	6
ADAS फीचर्स	हां	हां
टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम	हां	हां
360 डिग्री कैमरा	हां, आगे और पीछे पार्किंग सेंसर के साथ	हां

दोनों ही कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs कई प्रीमियम और एडवांस फीचर्स के साथ आती है, लेकिन BYD Atto 3 में ZS EV से ज्यादा फीचर्स मिलते हैं। Atto 3 में बड़ा अलॉय व्हील्स, बड़ा इंफोटेनमेंट सिस्टम और बेहतर साउंड सिस्टम दिया गया है। वहीं, इसमें एक एक्स्ट्रा एयरबैग भी मिलता है। हालांकि, दोनों SUVs में लेवल-2 ADAS और 360-डिग्री कैमरा सिस्टम जैसे बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं।

3. ड्राइविंग रेंज और बैटरी (Driving Range and Battery)

पैरामीटर	पावर	टॉर्क	ड्राइविंग रेंज
BYD Atto 3	204 PS	310 Nm	468 km
MG ZS EV	204 PS	310 Nm	521 km
बैटरी पैक	177 PS	280 Nm	461 km
50 kWh			
60 kWh			
50.3 kWh			

BYD Atto 3 को दो बैटरी पैक 50 kWh और 60 kWh के साथ पेश किया जाता है। हालांकि, पहला बैटरी पैक ZS EV के 50.3 kWh बैटरी पैक समान है, जो बेहतर पावर आउटपुट और ज्यादा रेंज देने का दावा कंपनी करती है। इसके अलावा, दोनों कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) में कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) का सपोर्ट मिलता है, जिसकी मदद से इसे एक घंटे में 0 से 80 प्रतिशत तक चार्ज किया जा सकता है।

4. कीमत (Price)

	BYD Atto 3	MG ZS EV
कीमत (एक्स-शोरूम)	24.99 लाख से लेकर 33.99 लाख रुपये तक	BaaS: 14 लाख रुपये से 20.75 लाख रुपये + बैटरी किराये की सेवा के लिए 4.5 रुपये प्रति किमी स्टैंडर्ड कीमत: 26.84 लाख रुपये तक (टॉप-स्पेक)

MG ZS EV, BYD Atto 3 को करीब 11 लाख रुपये से कम कीमत में पेश करती है। वहीं, MG के बैटरी-एज-ए-सर्विस प्रोग्राम के तहत भी पेश किया जाता है। इसके तहत आपको पूरी गाड़ी का भुगतान नहीं करना पड़ता है, बल्कि बैटरी के लिए प्रति किलोमीटर 4.5 रुपये का किराया लिया जाता है। वहीं, अगर आप पूरी गाड़ी की भी कीमत देते हैं, तो ZS EV और Atto 3 के बीच कीमत का अंतर लगभग 7 लाख रुपये का रहता है। इन दोनों का भारतीय बाजार में Hyundai Creta Electric, Tata Curvv EV और Mahindra BE 6 से देखने के लिए मिलता है।

क्या आपको भी होती है कार पार्किंग में दिक्कत? बिना डैमेज किए ऐसे करें गाड़ी पार्क

परिवहन विशेष न्यूज

बहुत से लोगों को कार पार्क करने में कई तरह के परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अगर वहीं कार को किसी तंग जगह पर पार्क करना पड़े तो यह बड़ी चुनौती बन जाती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कार को सही से पार्क करने के बारे में बता रहे हैं जिससे आपकी कार को किसी तरह का नुकसान न हो।

नई दिल्ली। कम पार्किंग स्पेस में कार पार्क करना कई ड्राइवर्स के लिए बड़ी चुनौती होती है। ऐसी जगहों पर कार को पार्क करने के दौरान नुकसान होने का डर हमेशा रहता है। इस दौरान न केवल खुद की गाड़ी के डैमेज होने का डर रहता है, बल्कि दूसरों की गाड़ी के भी डैमेज होने का डर बना रहता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कार पार्क करने के कुछ ऐसे तरीकों के बारे में बता रहे हैं, जिनकी मदद से आप तंग पार्किंग में कार को नुकसान से बचाने में मदद कर सकते हैं।

1. पार्किंग स्पेस का चुनाव

जब आप किसी भी कार पार्किंग में प्रवेश करें, तो आपको कोने वाली पार्किंग स्पेस या पिलर्स के पास वाली जगह का चुनाव करें। ऐसी जगह पर आपको पार्किंग के लिए ज्यादा जगह मिलता है। यहां पर आपके कार के दरवाजे खुलने पर दूसरी कारों से टकराने का खतरा बहुत कम होता है। इसके अलावा, आप अपनी कार को छोटे वाहनों के पास भी पार्क कर सकते हैं।

2. पार्किंग सेंसर्स और कैमरा का इस्तेमाल

हाल के समय में आने वाली तकरीबन सभी गाड़ियों में पार्किंग सेंसर्स और कैमरा फीचर्स देखने के लिए मिलता है। इनकी मदद से आपको कार को पार्क करने में काफी मदद मिलती है। इनकी मदद से आप कार और आस-पास की चीजों के बीच की दूरी का अनुमान सही से लगा सकते हैं।

3. डोर एज गार्ड्स का इस्तेमाल करें

डोर एज गार्ड्स एक साधारण लेकिन काफी उपयोगी एक्सेसरीज है। इन्हें कार के दरवाजों के किनारों पर चिपकाया जाता है और जब दरवाजे तंग स्पेस में खुलते हैं, तो यह दरवाजों पर खरोंचों को लगने से बचाते हैं।

4. सटीक पार्किंग की प्रैक्टिस करें

कार को सटीक पार्क करना एक कौशल होता है, जिसे बार-बार अभ्यास करके बेहतर बनाया जा सकता है। वहीं, पार्किंग के दौरान पार्क करने वाली जगह पर की गई पेंट की रेखाओं या पास की कारों का ध्यान रखें।

5. प्रोटेक्टिव कार कवर का इस्तेमाल करें

अगर अक्सर अपनी कार को तंग पार्किंग स्पेस में पार्क करते हैं, तो आप अपनी कार को पार्क करने के बाद उसे प्रोटेक्टिव कार कवर से जरूर ढक दें। इससे आप अपनी कार को दूसरी कारों या बाकी चीजों से होने वाले नुकसान से बचा सकते हैं।

सूर्य की रोशनी से सेहत से टूटता रिश्ता

विजय गर्ग

कुछ बड़े शहरों में जहां वातावरण में प्रदूषक कण अधिक मात्रा में होते हैं, वहां सूर्य की किरणें धरती कम पहुंच पाती हैं। इसके अलावा लोग विटामिन डी के प्राकृतिक स्रोतों को समझने और अपनाने में असमर्थ रहते हैं, जिसके कारण उन्हें इस पोषक तत्त्व की कमी होती है। दरअसल, , हमारे शरीर को आवश्यक मात्रा में यह विटामिन प्राप्त करने के लिए सूर्य की रोशनी के साथ-साथ संतुलित आहार भी उतना ही अहम है। कुछ परिस्थितियों में डाक्टर की सलाह पर पूरक के रूप में भी उपयोग किया जाता जाता है, लेकिन यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इसकी सही खुराक और सही तरीके से उपयोग ही लाभकारी होता है।

विटामिन डी एक ऐसा पोषक तत्त्व है, जिसे अक्सर 'सनशाइन विटामिन' भी कहा जाता है, क्योंकि यह प्राकृतिक रूप से सूर्य की रोशनी से प्राप्त होता है। हमारे शरीर में यह विटामिन हड्डियों को मजबूत कैल्शियम और फास्फोरस के संतुलन को दुनिया बनाने, बनाए रखने तथा प्रतिरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हाल के वर्षों में विटामिन डी की कमी एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या के रूप में उभर कर सामने आई है। आधुनिक जीवनशैली, शहरीकरण, प्रदूषण और दफ्तर तथा घर के भीतर लगातार रहने के कारण बहुत से लोगों में विटामिन की कमी हो रही है। यह कमी न केवल शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डालती है, बल्कि मानसिक और सामाजिक स्तर पर भी इसके दूरगामी प्रभाव देखने को मिलते हैं। सूर्य की किरणें हमारे जीवन का एक अनमोल उपहार हैं, लेकिन आज के समय में लोग कंप्यूटर, मोबाइल और अन्य इलेक्ट्रानिक उपकरणों के साथ इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे बाहरी वातावरण में निकलने का समय ही नहीं निकाल पाते।
परिणामस्वरूप उन्हें सूर्य की किरणों का लाभ नहीं मिल पाता।
कुछ बड़े शहरों में जहां वातावरण में प्रदूषक कण अधिक मात्रा में होते हैं, वहां सूर्य की किरणें धरती कम पहुंच पाती हैं। इसके अलावा लोग विटामिन डी के प्राकृतिक स्रोतों को समझने और अपनाने में असमर्थ रहते हैं, जिसके कारण उन्हें इस पोषक तत्त्व की कमी होती है।
दरअसल, , हमारे शरीर को आवश्यक मात्रा में यह विटामिन प्राप्त करने के लिए सूर्य की रोशनी के साथ-साथ संतुलित आहार भी उतना ही अहम है। कुछ परिस्थितियों में डाक्टर की सलाह पर पूरक के रूप में भी उपयोग किया जाता जाता है, लेकिन यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इसकी सही खुराक और सही तरीके से उपयोग ही लाभकारी होता है। आजकल के खानपान में पौष्टिकता की कमी हो गई है। जहां पहले लोग ताजे फल-सब्जियां और प्राकृतिक रूप से उगाए गए खाद्य पदार्थों का सेवन करते थे, वहीं अब 'फास्ट फूड' और प्रसंस्कृत खाद्य का चलन ज्यादा ही बढ़ गया है। इन खाद्य पदार्थों में विटामिन डी की प्राकृतिक मात्रा नहीं होती, जिससे शरीर को इस विटामिन की कमी का सामना करना पड़ता है।
इसके अलावा, कुछ लोग आहार में विविधता न होने के कारण आवश्यक पोषक तत्त्वों को संतुलित रूप से नहीं ले पाते, जिसके चलते उनकी सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस समय समाज में विटामिन डी की कमी के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।
जब लोगों को इस विटामिन की महत्ता का पता चलता है, तो वे अपनी जीवनशैली में आवश्यक बदलाव लाते हैं। यह आवश्यक भी है। मसलन, नियमित रूप से थोड़ी-थोड़ी देर के लिए बाहर निकलना, प्राकृतिक धूप का लाभ उठाना,

संतुलित आहार लेना और आवश्यकतानुसार पूरक का सेवन करना इस कमी को दूर करने में सहायक हो सकते हैं।
जब हम इस कमी के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों की बात करते हैं, तो हमें यह समझना होगा कि यह केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। जब बड़ी संख्या में लोग विटामिन डी की कमी से ग्रस्त हो जाते हैं, तो यह स्वास्थ्य सेवा प्रणाली पर अतिरिक्त बोझ डालता है। अस्पतालों में हड्डियों और मांसपेशियों से जुड़ी समस्याओं के इलाज में अधिक खर्च आता है और साथ ही लोगों की कार्य क्षमता में भी कमी आती है, जिससे समाज के आर्थिक ढांचे पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, विटामिन डी की कमी एक बड़ी समस्या बन चुकी है, जिसके प्रतिकूल प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।
इस समस्या से निपटने के लिए व्यक्तिगत प्रयास के साथ-साथ सरकारी नीतियों और सामुदायिक प्रयासों का होना भी जरूरी है। स्वास्थ्य विभागों और सरकारी संस्थाओं द्वारा नियमित स्वास्थ्य जांच, विटामिन डी परीक्षण और पोषक तत्त्व मिलाए गए खाद्य पदार्थों के प्रचार-प्रसार के माध्यम से इस कमी को दूर करने की कोशिश की जा रही है। कई देशों में स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों के माध्यम से लोगों को विटामिन डी की महत्ता और इसके स्रोतों के बारे में बताया जा रहा है। स्कूलों, कालेजों और कार्यस्थलों पर भी स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी साझा की जा रही है, ताकि युवा पीढ़ी इस कमी के प्रति सजग रहे। इसके अतिरिक्त, वैज्ञानिक अनुसंधान भी इस दिशा में निरंतर जारी है। अध्ययनों से स्पष्ट है कि इस विटामिन की कमी केवल हड्डियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव संपूर्ण शरीर की क्रियाओं पर पड़ता है।
आधुनिक जीवनशैली में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के बावजूद, कई कई लोग अब भी विटामिन डी की महत्ता को समझ नहीं पाए हैं। लोग अपनी दिनचर्या में व्यस्त रहते हैं और स्वास्थ्य की छोटी-छोटी समस्याओं को नजरअंदाज कर देते हैं। मगर जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, विटामिन डी की की कमी के लक्षण स्पष्ट हो जाते हैं। बच्चे, युवा और सभी को इस प कमी का सामना करना पड़ता है, पर बुजुर्गों में यह समस्या अधिक गंभीर हो जाती है। इसके अतिरिक्त, मोटापे वाले लोगों में में यह विटामिन शरीर के वसा ऊतक के में जमा जाता है, जिससे इसकी उपलब्धता और भी कम हो जाती है।
विटामिन डी की कमी के समाधान के लिए हमें कई स्तरों पर काम करने की आवश्यकता है। सबसे पहले व्यक्तिगत स्तर पर, हमें अपनी दिनचर्या में छोटे-छोटे बदलाव लाने होंगे। इसके साथ ही सामाजिक स्तर पर भी जागरूकता फैलाने की जरूरत है। सरकार और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा भी इस दिशा में कई पहल की जा रही है, जैसे विटामिन डी युक्त खाद्य पदार्थों का वितरण, स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन और नियमित स्वास्थ्य जांच के कार्यक्रम। इसके अलावा, तकनीकी नवाचार इस कमी को दूर करने में म भूमिका निभा सकते हैं। 'डिजिटल हेल्थ ऐप्स' के माध्यम से लोगों को उनके विटामिन डी की जानकारी उपलब्ध कराई जा सकती है, जिससे उन्हें समय रहते पता चल सके कि उन्हें किस प्रकार के सुधार की आवश्यकता है।
रविटामिन डी की कमी की समस्या केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे समाज और अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव पड़ता है। यदि हम इस कमी को समय रहते पहचान कर उचित कदम नहीं उठाते उठाते हैं, तो , तो भविष्य में और अधिक गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती है हैं। आज जब हम कई बीमारियों और संक्रमणों से लड़ रहे हैं, तब यह आवश्यक है कि अपने शरीर के मूल पोषक तत्त्वों को नजरअंदाज न करें। विटामिन डी की कमी से निपटने के लिए हमें न केवल अपनी जीवनशैली में सुधार करना होगा, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी जागरूकता फैलानी होगी। यह जरूरी है कि हम अपने दैनिक जीवन में स्वास्थ्य संबंधी प्राथमिकताओं को ऊपर रखें और विटामिन डी के खोत का पूरा लाभ उठाएं। अगर हम समय रहते आवश्यक कदम उठाएंगे, तो निश्चित ही हम स्वस्थ और खुशहाल जीवन की ओर अग्रसर हो पाएंगे।

संपूर्णता की तस्वीर

विजय गर्ग

हम सभी के मन में एक आदर्श तस्वीर हमेशा बनी रहती है, जो भी उसके पैमाने पर खरा उतरता, बस वही हमारे लिए परिपूर्ण बन जाता है और हम उसके प्रशंसक । हम उस व्यक्ति की तरह ही खुश, समृद्ध, संतुष्ट होने की अभिलाषा रखने लगते हैं। बहुत कम लोगों में यह धैर्य रह पाता है यह समझने का कि किस तरह की लंबी यात्रा तय करके यह सुखद छवि उभर कर आई होगी। खिलखिलाते मुस्कुराते व्यक्तित्व को बनाए रखने के लिए कितना साहस दिखाया होगा। कभी, कितनी मेहनत और समर्पण लगा होगा इस मुकाम पर पहुंचने के लिए । परिपक्वता के कितने आयाम तय किए होंगे। यह भी विचार करने की बात है कि समृद्ध नजर आते चेहरों ने कितने लोगों का जीवन वास्तव में रोशन करके जीवन भर के लिए संतुष्टि पा ली होगी या फिर अपनी नींव दूसरों के दुख-दर्द पर स्थापित कर अच्छाई का मुखौटा पहन लिया होगा। यह भी समझना चाहिए कि उजले चेहरे कहीं सिर्फ बनावटी तो नहीं, कुछ रहस्य तो नहीं छिपा रखा अपने भीतर । यों जिन चेहरों के भीतर रहस्य नहीं छिपा होता, कोई छल नहीं होता, उन्हें पहचानना बहुत मुश्किल नहीं है, अगर सिर्फ इतना किया जाए कि अपनी दृष्टि को किसी आग्रह से संचालित न होने दिया जाए। चकाचौंध लोकप्रियता की अपनी कीमत होती है। सुंदरता, पूर्णता, सफलता तो तभी कही जा सकती है जब हमारा अस्तित्व खुद के ही नहीं, कई लोगों के जीवन में भी उजाला भरने में समर्थ हो । किसी भी तरह की तस्वीर या छवि को देखकर तुरंत उसे अपना आदर्श मान लेना भी उचित नहीं है। हां, हमारे आदर्श किसी के अच्छे विचार, अच्छे कर्म हो सकते हैं। पर किसी की निजी उपलब्धि हमारे लिए तब तक आदर्श नहीं हो सकती, जब तक कि हम खुद में सामने वाले के जीवन की यात्रा को समझने का धैर्य न जुटा सकें। ऐसा तो अक्सर होता है, जब हम किसी उद्देश्य की खोज में होते हैं, किन्हीं कारणों से हमारी यात्रा की दिशा में स्पष्टता नहीं बन पाई होती है, तब कोई व्यक्ति अगर अचानक ही आकर अपने दिशा -ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ के रूप में प्रस्तुत करने लगता है तब अनायास ही हम उससे प्रभावित होने लगते हैं। जबकि किसी बात की स्वीकार्यता हमारे विवेक और आकलन के आधार पर होना चाहिए ।
आंखों को दिखती संपूर्णता की तस्वीर असल में सफल, असफल प्रयासों, कमियों, अभावों, निराशा, उत्साह, अपमान, आलोचना, प्रशंसा की छोटी-छोटी कहानियों को आपस में जोड़कर बनी हुई होती है । इसीलिए किसी सफल आदर्श व्यक्तित्व को जानना बहुत सुंदर और रोमांचक अनुभव बन जाता है । जब हम वास्तविक जीवन की कहानियों को सुनते हैं, तब जान पड़ता है कि असल में सफलता किसी मुकाम को पा लेने से परिभाषित नहीं हो जाती। यह तो हर दिन, हर पल घटित होने वाली चीज है। यही कारण है कि एक आम व्यक्ति भी जो अपने रोजमर्रा के जीवन में आती चुनौतियों में साहस, ईमानदारी और संतुष्टि के साथ जीवन निर्वाह कर रहा होता है, तकलीफों के बावजूद अपनों के साथ खुशी के पल बिता पाने का साहस जुटा पाता है, उसका जीवन भी संपूर्ण और सुंदर है ।
तब संपूर्ण बनने की अभिलाषा लिए जब हम प्रयास करते यह समझ में आने लगता है कि इसका संबंध हमारे हौसले से अधिक है। हम कितनी बार साहस जुटा पाते हैं पूरी तरह टूट- बिखर कर खुद को वापस जोड़ लेने का ? जब भी हम निराशा की जगह हिम्मत को चुनते हैं, हम और निखर जाते हैं । हमारी कुशलता, हमारी ताकत पहले से और अधिक बढ़ जाती है । जापान में जब पुराना मिट्टी का बर्तन टूट जाता है तब उसकी मरम्मत में सोने, चांदी, प्लेटिनम जैसी कीमती धातुओं से उसे जोड़ दिया जाता है। इस कला को 'किंत्सुगी' कहा जाता है। यह माना जाता है कि टूटने से उसकी सुंदरता कम नहीं होती और बढ़ जाती है। इसी सिद्धांत की तरह जीवन में भी हर अभाव, असफलता हमें पहले से और अधिक अनुभवी बनाती है, हमारे भीतर धैर्य विकसित करती है । जो हमें श्रेष्ठता की राह पर अग्रसर कर देता है । जीवन में आए अभाव, उतार-चढ़ाव, चुनौतियां 'किंत्सुगी' में उपयोग में ली गई सोने-चांदी जैसी कीमती धातुओं की तरह ही है, जिनके होने से जीवन परिष्कृत बनता चला जाता । व्यक्तित्व निखर जाता है। जितने संघर्ष हैं जीवन में उतने ही हम समृद्ध भी होते चले जाते हैं । उस समय आई विषमताओं से जरूर हम निराश हो सकते हैं, हमारा मनोबल कमजोर हो सकता है, लेकिन ऐसे समय में हमें याद रखना चाहिए कि हम जीवन का बस एक छोटा-सा दृश्य देख रहे होते हैं और उससे जूझ रहे होते हैं । अपने आप को अपने दुखों को पीछे रख कर थोड़ी-सी हिम्मत दिखाने से हमारे पास निश्चित ही नया आसमान होता है ।
किसी की देखा-देखी केवल उनके जैसा बन जाना कभी भी हमें संतुष्टि का भाव नहीं दे सकता । संपूर्णता हमें हमारे जीवन की विशिष्ट यात्रा बनाती है, हम उसे किस तरह से जीते हैं, कितने समर्पित हैं, किन मूल्यों को अपने साथ लेकर आगे बढ़ते हैं। कोई मापदंड नहीं है, जिस पर आंका जा सके पूर्णता को। पैसा, शोहरत, परिवार, बुद्धिमत्ता इन सबसे परे अगर अपने संघर्षों में भी मुस्कुराने, आत्मीयता और मनुष्यता बनाए रखने का साहस हम अपने भीतर महसूस कर पाते हैं तो यही हमारी संपूर्ण और सुंदर तस्वीर है ।
विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी: खोखली रस्में

विजय गर्ग

ओह 'यह एक साल, लमहेलमहे की कसक ताजा हो उठती है. आसपड़ोस, घरखानदान कोई तो ऐसा नहीं रहा जिस ने मुझे बुराभला न कहा हो. मैं ने आधुनिकता के आवेश में अपनी बेटी का जीवन खतरे के गर्त में धकेल दिया था. रुपए का मुंह देख कर मैं ने अपनी बेटी की जिंदगी से खिलवाड़ किया था और गौने की परंपरा को तोड़ कर खानदान की मर्यादा तोड़ डाली थी. इस अपराधिनी की सब आलोचना कर रहे थे. परंतु अंधविश्वास की अंधेरी खाइयों को पाट कर आज मेरी बेटी जिंदा लौट रही है. अपराधिनी को सजा के बदले पुरस्कार मिला है- अपने नवासे के रूप में. खोखली रस्मों का अस्तित्व नगण्य बन कर रह गया.
कशमकश के वे क्षण मुझे अच्छी तरह याद हैं जब मैं ने प्रताड़नाओं के बावजूद खोखली रस्मों के दायरे को खंडित किया था. मैं रसोई में थी. ये पंडितजी का संदेश लाए थे. सुनते ही मेरे अंदर का क्रोध चेहरे पर छलक पड़ा था. दाल को बघार लगाते हुए तनिक घूम कर मैं बोली थी, 'देखो जी, गौने आदि का झमेला मैं नहीं होने दूंगी. जोजो करना हो, शादी के समय ही कर डालिए. लड़की की विदाई शादी के समय ही होगी.'
'अजीब बेवकूफी है,' ये तमतमा उठे, 'जो परंपरा वर्षों से चली आ रही है, तुम उसे क्यों नहीं मानोगी? हमारे यहां शादी में विदाई करना फलता नहीं है.'
'सब फलेगा. कर के तो देखिए,' मैं ने पतीली का पानी गैस पर रख दिया था और जल्दीजल्दी चावल निकाल रही थी. जरूर फलेगा, क्योंकि तुम्हारा कहा झूठ हो ही नहीं सकता.'
'जी हां, इसीलिए,' व्यंग्य का जवाब व्यंग्यात्मक लहजे में ही मैं ने दिया.
'क्योंकि अब हमारी ऐसी औकात नहीं है कि गौने के पचअड़े में पड़ कर 80-90 हजार रुपए का खून करें. सीधे से ब्याह कीजिए और जो लेनादेना हो, एक ही बार लेदे कर छुट्टी कीजिए.' मैं ने अपनी नजरें थाली पर टिका दीं और उंगलियां तेजी से चावल साफ करने लगीं, कुछ ऐसे ही जैसे मैं परंपरा के नाम पर कुरीतियों को साफ कर हटाने पर तुली हुई थी. एक ही विषय को ले कर सालभर तक हम दोनों में द्वंद्व युद्ध छिड़ा रहा. ये परंपरा और मर्यादा के नाम पर झूठी वाहवाही लूटना चाहते थे. विवाह के सालभर बाद गौने की रस्म होती है, और यह रस्म किसी बरात पर होने वाले खर्च से कम में अदा नहीं हो सकती. मैं इस थोथी रस्म को जड़ से काट डालने को दृढ़संकल्प थी. क्षणिक स्थिरता के बाद ये बेचारगी से बोले, 'विमला की मां, तुम समझती क्यों नहीं हो?'
'क्या समझूं मैं?' बात काटते हुए मैं बिफर उठी, 'कहां से लाओगे इतने पैसे? 1 लाख रुपए लोन ले लिए, कुछ पैसे जोड़जोड़ कर रखे थे, वे भी निकाल लिए, और अब गौने के लिए 80-90 हजार रुपए का लटका अलग से रहेगा.'
'तो क्या करूं? इज्जत तो रखनी ही पड़ेगी. नहीं होगा तो एक बीघा खेत ही बेच डालूंगा.'
'क्या कहा? खेत बेच डालोगे?' लगा किसी ने मेरे सिर पर हथौड़े का प्रहार किया हो. क्षणभर को मैं इज्जत के ऐसे रखरखाव पर सिर धुनती रह गई. तीखे स्वर में बोली, 'उस के बाद? सुधा और अंजना के ब्याह पर क्या करोगे? तुम्हारा और तुम्हारे लाड़लों के भविष्य का क्या होगा? तुम्हारे पिताजी तो तुम्हारे लिए 4 बीघा खेत छोड़ गए हैं जो तुम रस्मों के ढकोसले में हवन कर लोगे, लेकिन तुम्हारे बेटे किस का खेत बेच कर अपनी मर्यादा की रक्षा करेंगे?' सत्य का नंगापन शायद इन्हें दूर तक झकझोर गया था. बुत बने ये ताकते रह गए. फिर तिक्त हंसी हंस पड़े, 'तुम तो ऐसे कह रही हो, विमला की मां, मानो 4 ही बच्चे तुम्हारे अपने हों और विमला तुम्हारी सौत की बेटी हो.'
'हांहां, क्यों नहीं, मैं सौतेली मां ही सही, लेकिन मैं गौना नहीं होने दूंगी. शादी करो तब पूरे खानदान को न्योता दो, गौना करो तब फिर पूरे खानदान को बुलाओ. कपड़ा दो, गहना दो, यह नेग करो वह जोग करो. सिर में जितने बाल नहीं हैं उन से ज्यादा कर्ज लादे रहो, लेकिन शान में कमी न होने पाए.' इन के होंठों पर विवश मुसकान फैल गई. जब कभी मैं ज्यादा गुस्से में रहती हूं, इसी तरह मुसकरा देते हैं, मानो कुछ हुआ ही न हो. इन के होंठों की फड़कन कुछ कहने को बेताब थी, परंतु कह नहीं सके. उठ खड़े हुए और आंगन पार करते हुए कमरे की ओर चले गए. जब से विमला की शादी तय हुई, शादी संपन्न होने तक यही सिलसिला जारी रहा. ये कंजूसी से ब्याह कर के समाज में अपनी तौहीन करवाने को तैयार नहीं थे, और मैं रस्मों के खोखलेपन की खातिर चादर से पैर निकालने को तैयार नहीं थी. 'गौने की रस्म अलग से करनी ही होगी. सदियों से यह हमारी परंपरा रही है,' मैं इस थोथेपन में विश्वास करने को तैयार न थी.
छोटी ननद के ब्याह पर ही मैं ने यह निर्णय कर के गांठ बांधी थी. याद आता है तो दिल कट कर रह जाता है. ब्याह पर जो खर्च हुआ वह तो हुआ ही, सालभर घर बिठा कर उस का गौना किया गया तो 80 हजार रुपए उस में फूंक दिए गए. गौना करवाने आए वर पक्ष के लोगों की तथा खानदान वालों की आवभगत करतेकरते पैरों में छाले पड़ गए, तिस पर भी 'मुरगी अपनी जान से गई, खाने वालों को मजा न आया' वाली बात हुई. चारों ओर से बदनामी मिली कि यह नहीं दिया, वह नहीं दिया. 'अरे, इस से अच्छी साड़ी तो मैं अपनी महरी को देती हूं' कंजूस, मक्खीचूस' तथा इसी से मिलतीजुलती असंख्य उपाधियां मिली थीं.
मुझे विश्वास था कि मैं वर्तमान स्थिति और परिवेश में गौना करने में आने वाली कठिनाइयां बता कर इन्हें मना लूंगी. जल्दी ही मुझे इस में सफलता भी मिल गई. मेरी सलाह इन के निर्णय में परिवर्तित हो गई, किंतु 'ये नहीं फलता है' की आशंका से ये उबर नहीं पाए. विवाह संबंधी खरीदफरोख्त की कार्यवाहियां लगभग पूरी हो चुकी थीं. रिश्तेदारों और बरातियों का इंतजार ही शेष था. रिश्तेदारों में सब से पहले आईं इन की रोबदार और दबंग व्यक्तित्व वाली विधवा मौसी रमा, खानदानभर की सर्वेसर्वा और पूरे गांव की मौसी. दोपहर का समय था. विवाह हेतु खरीदे गए गहने, कपड़े एकएक कर मैं मौसीजी को दिखा रही थी. बातों ही बातों में मैं ने अपना फैसला कह सुनाया. सुनते ही मौसीजी ज्वालामुखी की तरह फट पड़ीं. क्रोध से भरी वे बोलीं, 'क्यों नहीं करोगी तुम गौना?'
'दरअसल, मौसीजी, हमारी इतनी औकात नहीं कि हम अलग से गौने का खर्च बरदाश्त कर सकें,' मैं ने गहनों का बौक्स बंद कर अलमारी में रख दिया और कपड़े समेटने लगी.
'अरे वाह, क्यों नहीं है औकात?' मौसीजी के आग्नेय नेत्र मेरे तन को सेंकने लगे, 'क्या तुम जानतीं नहीं कि शादी के समय विदाई करना हमारे खानदान में अच्छा नहीं समझा जाता?'
'लेकिन इस से होता क्या है?'
'होगा क्या 'वर या वधू दोनों में से किसी एक की मृत्यु हो जाएगी. सालभर के अंदर ही जोड़ा बिछुड़ जाता है.' मैं तनिक भी नहीं चौंकी. पालतू कुत्ते की तरह पाले गए अंधविश्वासों के प्रति खानदान वालों के इस मोह से मैं पूर्वपरिचित थी.
अलमारी बंद कर पायताने की ओर बैठती हुई मैं ने जिज्ञासा से फिर पूछा, 'लेकिन मौसीजी, हमारे खानदान में शादी के समय विदाई करना अच्छा क्यों नहीं समझा जाता, इस का भी तो कोई कारण अवश्य होगा?'
'हां, कारण भी है, तुम्हारे ससुर के चचेरे चाचा की सौतेली बहन हुआ करती थीं. विवाह के समय ही उन का गौना कर दिया गया था. बेचारी दोबारा मायके का मुंह नहीं देख पाईं. साल की कौन कहे, महीनेभर में ही मृत्यु हो गई.''
अब क्या कहूं, सास का खयाल न होता तो ठठा कर हंस पड़ती. तर्कशास्त्र की अवैज्ञानिक परिभाषा याद हो आई. किसी घटना की पूर्ववर्ती घटना को उस कार्य का कारण कहते हैं. आज वैज्ञानिक धरातल पर भी यह परिभाषा किसी न किसी रूप में जिंदा है. परंतु मुंहजोरी से कौन छेड़े मधुमक्खियों के छत्ते को. मैं सहज स्वर में बोली, 'लेकिन मौसीजी, उन से पहले जो विवाह के समय ही ससुराल जाती थीं क्या उन की भी मृत्यु हो जाया करती थी?'
'अरे, नहीं,' अपने दाहिने हाथ को हवा में लहराती हुई मौसीजी बोलीं, 'उन के तो नातीपोते भी अब नानादादा बने हुए हैं.' प्रसन्नता का उद्वेग मुझ से संभल न सका, 'फिर तो कोई बात ही नहीं है, सब ठीक हो जाएगा.'
'कैसे नहीं है कोई बात?' मौसीजी गुर्राईं, 'गांवभर में हमारे खानदान का नाम इसीलिए लिया जाता है 'दूरदूर के लोग जानते हैं कि हमारे यहां शादी से भी बढ़चढ़ कर गौना होता है. देखने वाले दीदा फाड़े रह जाते हैं. तेरी फूफी सास के गौने में परिवार की हर लड़की को 2-2 तोले की सोने की जंजीर दी गई थी और ससुराल वाली लड़कियों को जरी की साड़ी पहना कर भेजा गया था.' तब की बात कुछ और थी, मौसीजी. तब हमारी जमींदारी थी. आज तो 2 रोटियों के पीछे खूनपसीना एक हो जाता है. महीनेभर नौकरी से बैठ जाओ तो खाने के लाले पड़ जाएं. फिर गौना का खर्च हम कहां से जुटा पाएंगे?'
इसे अपना अपमान समझ कर मौसीजी तमतमा कर उठ खड़ी हुईं, 'ठीक है, कर अपनी बेटी का ब्याह, न हो तो किसी ऐरेगैरे का हाथ पकड़ा कर विदा कर दे, सारा खर्च बच जाएगा. आने दे सुधीर को, अब मैं यहां एक पल भी नहीं रह सकती. जहां बहूबेटियों का कानून चले वहां ठहरना दूभर है.' मौसीजी के नेत्रों से अंगार बरस रहे थे. वे बड़बड़ाती हुईं अपने कमरे की ओर बढ़ीं तो मैं एकबारगी सकते में आ गई. मैं लपक कर उन के कमरे में पहुंची. वे अपनी साड़ी तह कर रही थीं. साड़ी उन के हाथ से खींच कर याचनाभरे स्वर में मैं बोली, 'मौसीजी, आप तो यों ही राई का पर्वत बनाने लगीं. मेरी क्या बिसात कि मैं कानून चलाऊं?'

'अरे, तेरी क्या बिसात नहीं है? न सास है, न ननद है, खूब मौज कर, मैं कौन होती हूं रोकने वाली?' उन की आवाज में दुनियाजहान की विवशता सिमट आई. उन की आंखों में आंसू आ गए थे. लगा किसी ने मेरा सारा खून निचोड़ लिया हो. मैं विनम्र स्वर में बोली, 'मौसीजी, आज तक कभी हम लोगों ने आप की बात नहीं टाली है. मैं हमेशा आप को अपनी सास समझ कर आप से सलाहमशविरा करती आई हूं. फिर भी आप''
परंतु मौसीजी का गुस्सा शांत नहीं हुआ. मैं उन का हाथ पकड़ कर उन्हें आंगन में ले आई और उन्हें आश्वस्त करने का प्रयत्न करने लगी. ये शाम को आए. मौसीजी बैठी हुई थीं. दोपहर का सारा किस्सा मैं ने सुना डाला. मौसीजी का क्रोध सर्वविदित था. ये हारे हुए जुआरी के स्वर में बोले, 'तब?'
'तब क्या?' मैं बोली, '50 हजार रुपए मौसीजी से बतौर कर्ज ले लीजिए. 60-70 हजार रुपए चाचाजी से ले लेना. मिलाजुला कर किसी तरह कर दो गौना. मैं और क्या कहूं अब?'

'बेटी मेरी है, उन्हें क्या पड़ी है?'

'क्यों नहीं पड़ी है?' मेरा रोष उमड़ आया, 'जब बेटी के ब्याह की हर रस्म उन लोगों की इच्छानुसार होगी तो खर्च में भी सहयोग करना उन का फर्ज बनता है.' संभवतया मेरे व्यंग्य को इन्होंने ताड़ लिया था. बिना उत्तर दिए तौलिया उठा कर बाथरूम में घुस गए. रात में भोजन करने के बाद ये और मौसीजी बैठक में चले गए. बच्चे अपने कमरे में जा चुके थे. पप्पू को सुलाने के बहाने मैं भी अपने कमरे में आ कर पड़ी रही. दिमाग की नसों में भीषण तनाव था. सहसा मैं चौंक पड़ी. मौसीजी का स्वर वातावरण में गूंजा, 'अरे सुधीर, तेरी बहू कह रही थी कि गौना नहीं होगा. अब बता भला, जब विवाह में विदाई करना हमारे यहां फलता ही नहीं है तब भला गौना कैसे नहीं होगा?'
'अब तुम से क्या छिपाना, मौसी?' यह स्वर इन का था, 'मैं सरकारी नौकर जरूर हूं, लेकिन खर्च इतना ज्यादा है कि पहले ही शादी में 1 लाख रुपए का कर्ज लेना पड़ गया. 2 और बेटियां ब्याहनी हैं सो अलग. 20-30 हजार रुपए से गौने में काम चलना नहीं है, और इतने पैसों का बंदोबस्त मैं कर नहीं पा रहा हूं.' मौसीजी के मीठे स्वर में कड़वाहट घुल गई, 'अरे, तो क्या बेटी को दफनाने पर ही तुले हो तुम दोनों? इस से तो अच्छा है उस का गला ही घोंट डालो. शादी का भी खर्च बच जाएगा.'
'अरे नहीं, मौसीजी, तुम समझीं नहीं. गौना तो मैं करूंगा ही. देखो न, विवाह से पहले ही मैं ने गौने का मुहूर्त निकलवा लिया है. अगले साल बैसाख में दिन पड़ता है.'
'सच?' मौसीजी चहक पड़ीं.
'और नहीं तो क्या? 50 हजार रुपए तुम दे दो, 60-70 हजार रुपए चाचाजी से ले लूंगा. कुछ यारदोस्तों से मिल जाएगा, ठाठ से गौना हो जाएगा.'
'क्या, 50 हजार रुपए मैं दे दूं?' मौसीजी इस तरह उछलीं मानो चलतेचलते पैरों के नीचे सांप आ गया हो.
'अरे, मौसी, खैरात थोड़े ही मांग रहा हूं. पाईपाई चुका दूंगा.'
'वह तो ठीक है, लेकिन इतने रुपए मैं लाऊंगी कहां से? मेरे पास रुपए धरे हैं क्या?' मेरी आंखें उल्लास से चमकने लगीं. भला मौसी को क्या पता था कि परंपरा की दुहाई उन की भी परेशानी का कारण बनेगी? मैं दम साधे सुन रही थी. इन का स्वर था, 'अरे, मौसी, दाई से कहीं पेट छिपा है? तुम हाथ झाड़ दो तो जमीन पर नोटों की बौछार हो जाए. हर कमरे में चांदी के रुपए गाड़ रखे हैं तुम ने, मुझे सब मालूम है.' 'अरे बेटा, मौत के कगार पर खड़ी हो कर मैं झूठ बोलूंगी? लोग पराई लड़कियों का विवाह करवाते हैं, और मैं अपनी ही पोती के ब्याह पर कंजूसी करूंगी? लौटाने की क्या बात है, जैसे मेरा श्याम है वैसे तू भी मेरा बेटा है.' मेरी हंसी फूट पड़ी. लच्छेदार शब्दों के आवरण में मन की बात छिपाना कोई मौसीजी से सीखे. भला उन की कंजूसी से कौन नावाकिफ था. क्षणिक निस्तब्धता के बाद इन की थकी सी आवाज फिर उभरी, 'तब तो मौसी, अब इस परंपरा का गला घोंटना ही होगा. न मैं इतने रुपए का जुगाड़ कर पाऊंगा और न ही गौने का झंझट रखूंगा. बोलो, तुम्हारी क्या राय है?' 'जो तुम अच्छा समझो,' जाने किस आघात से मौसीजी की आवाज को लकवा मार गया और वह गोष्ठी समाप्त हो गई. दूसरे दिन चाचाजी का भी सदलबल पदार्पण हुआ. परंपरा और रस्मों के खंडन की बात उन तक पहुंची तो वे भी आगबबूला हो उठे, 'सुधीर, यह क्या सुन रहा हूं? मैं भी शहर में रहता हूं. मेरी सोसाइटी तुम से भी ऊंची है. लेकिन हम ने कभी अपने पूर्वजों की भावना को ठेस नहीं पहुंचाई. तुम लोग लड़की की जिंदगी से खिलवाड़ कर रहे हो.'
'चाचाजी, आप गलत समझ रहे हैं,' ये बोले थे, 'गौने के लिए तो मैं खूब परेशान हूं. लेकिन करूं क्या? आप लोगों की मदद से ही कुछ हो सकता है.'
चाचाजी के चेहरे पर प्रश्नचिह्न लटक गया. उन की परेशानी पर मन ही मन आनंदित होते हुए ये बोले, 'मैं चाहता था, यदि आप 80 हजार रुपए भी बतौर कर्ज दे देते तो शेष इंतजाम मैं खुद कर लेता और किसी तरह गौना कर ही देता. आप ही के भरोसे मैं बैठा था. मैं जानता हूं कि आप पूर्वजों की मर्यादा को खंडित नहीं होने देंगे.' चाचाजी का तेजस्वी चेहरा सफेद पड़ गया. उन के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं. थूक निगलते हुए बोले, 'तुम तो जानते ही हो कि मैं रिटायर हो चुका हूं. फंड का जो रुपया मिला था उस से मकान बनवा लिया. मेरे पास अब कहां से रुपए आएंगे?' सुनते ही ये अपना संतुलन खो बैठे. क्रोधावेश में इन की मुट्ठियां भिंच गईं. परंतु तत्काल अपने को संभालते हुए सहज स्वर में बोले, 'चाचाजी, जब आप लोग एक कौड़ी की सहायता नहीं कर सकते, फिर सामाजिक मर्यादा और परंपरा के निर्वाह के लिए हमें परेशान क्यों करते हैं? यह कहां का न्याय है कि इन खोखली रस्मों के पीछे घर जला कर तमाशा दिखाया जाए? मुझ में गौना करने की सामर्थ्य ही नहीं है.' इतना कह कर ये चुप हो गए. चाचाजी निरुत्तर खड़े रहे. उन के होंठों पर मानो ताला पड़ गया था. थोड़ी देर पहले तक जो विमला के परम शुभचिंतक बने हुए थे, अब अपनीअपनी बगलें झांक रहे थे. अब कोई व्यक्ति मेरी बेटी के प्रति सहानुभूति प्रकट करने वाला नहीं था. आज विमला भरीगोद लिए सहीसलामत अपने मायके लौट रही है. अंधविश्वास और खोखली रस्मों की निरर्थकता पाखंडप्रेमियों को मुंह चिढ़ा रही है. शायद वे भी कुछ ऐसा ही निर्णय लेने वाले हैं.

नीला रंग का रहस्य

रंगों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। नीला रंग कई प्रकार का होता है। जैसे आसमानी नीला या गहरा नीला आदि। इसके भी सोच समझ कर ही उपयोग करना चाहिए। खालिस नीला रंग उपयोग ना करें। नीले के साथ पीला, सफेद और हल्के लाल रंग का उपयोग कर सकते हैं किसी ज्योतिष से पूछकर। नीले रंग का सही समय पर और सही तरीके से उपयोग करेंगे तो यह जीवन में सफलता देगा। आओ जानते हैं नीले रंग की खासियत और फायदे। नीले रंग का प्रयोग करते समय क्या सावधानी बरतनी चाहिए। यह रंग शनि और राहू से संबंधित है। श्रीकृष्ण और भगवान शिव की आभा का रंग नीला माना जाता है। इससे सम्मोहन और आकर्षण पैदा होता है। यह रंग जहर और मृत्यु का रंग भी है। यह रंग नींद को हराता है। इस रंग का सही तरीके से उपयोग करेंगे तो आपमें सकारात्मकता का विकास होगा लेकिन ज्यादा प्रयोग किया तो यह आपकी बुद्धि खराब कर देगा और व्यक्ति खुद से ही प्रभावित रहेगा।

विशेषता

1— संपूर्ण जगत में नीले रंग की अधिकता है। धरती पर 75 प्रतिशत फैले जल के कारण नीले रंग का प्रकाश ही फैला हुआ है तभी तो हमें आसमान नीला दिखाई देता है। नीला रंग जल तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए जल तत्व के सारे गुण इसमें समाहित हैं।

2— कहते हैं कि नीले रंग से बैक्टीरिया और मच्छर दूर रहते हैं। भारत में कई घरों के बाहर नीले रंग की पुताई संभवतः इसीलिए की जाती होगी।

3— नीला रंग अध्यात्म और भाग्य से संबंध रखता है। मानते हैं कि नीला रंग आत्मा का रंग है। नीले रंग के प्रकाश के रूप में आत्मा ही दिखाई पड़ती है और पीले रंग का प्रकाश आत्मा की उपस्थिति को सूचित करता है।

4— जब व्यक्ति ध्यान करने लगता है तो अंधेरे में कहीं नीला और फिर कहीं पीला रंग दिखाई देने लगता है। यदी आप गुलाबी रंग देखें तो आपको उसमें लाल, सफेद और नीला रंग दिखाई देगा। जब व्यक्ति ध्यान करता है तो उसे कुछ दिनों बाद सबसे पहले यही रंग दिखाई देता है।

फायदे

1— एंथोसायनिन से भरपूर नीले या बैंगनी रंग कि फल और सब्जियां आपकी त्वचा को स्वस्थ और जवान बनाए रखने में मदद करता है। यह हृदय रोगों के लिए भी फायदेमंद होता है और कैंसर की संभावना को कम करने में सहायक है। इसके लिए आप जामुन, काले अंगूर, आलू बुखारा, ब्लैकबेरी, ब्लूबेरी, बैंगन और इस रंग की अन्य पत्तेदार सब्जियों को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। वैसे हमारी सलाह है कि नीले या बैंकनी रंग की सब्जियां सोच-समझकर ही खाएं।

2— फेंगशुई के अनुसार नीले रंग का उचित तरीके से प्रयोग किया जाए तो यह घर और उसमें रहने वाले सदस्यों को स्वास्थ्य लाभ कराता है, चिंता से मुक्ति कर देता है और आर्थिक एवं बौद्धिक प्रगति प्रदान करता है। नीला रंग सकारात्मकता का प्रतीक माना जाता है। यह रंग स्वास्थ्य, विचार, विश्वास, दयाभाव की तरफ सकारात्मक संकेत देता है।

3— हल्का नीला रंग उन लोगों के लिए विशेष लाभदायक सिद्ध होता है, जो सृजनात्मक कार्यों से जुड़े हैं। यह रंग नए आइडिया को प्रोत्साहित करता है। यह रंग व्यक्ति में सीखने और खोजने की इच्छा जागृत करता है।

4— गहरा नीला रंग शयनकक्ष में उपयोग किया जाता है। इससे तनाव मुक्त, गहरी और सुकूनभरी नींद आती है।

5— यह रंग ब्लड प्रेशर के मरीजों के ब्लड प्रेशर को सामान्य रखने में सहयोगी सिद्ध होता है।

6— अगर आसपास के वातावरण में नीले रंग का प्रयोग किया जाए तो यह इच्छापूर्ति में मदद करता है। यह ठहरे हुए व्यवसाय, करियर या निजी संबंधों को फिर से सक्रिय करने में सहायक है।

भगवान सूर्य नारायण के पुत्र और पुत्रियाँ के बारे मे जानकारी

भगवान सूर्य नारायण के परिवार में 5 पुत्र और 2 पुत्रीयाँ थीं।

उनके 5 पुत्रों के नाम कुछ इस प्रकार है
1) वैवस्वत मनु देव 2) यम धर्मराज देव
3) शनि देव 4) भाग्य देव
5) अश्विनी कुमार देव
उनकी 2 पुत्रीयों के नाम कुछ इस प्रकार है
1) यमुना देवी 2) तापती देवी
अब हम इनके पुत्रों के कर्मों के बारे में जानते हैं -

1) वैवस्वत मनु : ये श्राद्ध देव हैं। ये पितृ लोक के अधिपति हैं। ये ही पितृों को तृप्त करते हैं। इन्हीं ने भूलोक पर सृजन का कार्य किया था।

2) यम धर्मराज : आमतौर पर लोग इन्हें सिर्फ ₹यमराज₹ के नाम से ही जानते हैं पर ये समस्त देवताओं के मध्य ₹यम धर्मराज₹ के नाम से पुकारें जाते हैं। इन्हें मृत्यु का देवता भी कहा जाता हैं। जीवन और मृत्यु इन्हीं के नियंत्रण में हैं। ये काल रूप माने जाते हैं।

3) शनि देव :- ये न्याय प्रिय हैं स्वभाव से। ये कभी किसी के साथ अन्याय नहीं होने देते हैं और इसीलिए इन्हें ₹दंडाधिकारी₹ भी कहा जाता है। ये भगवान सूर्य की दूसरी पत्नी ₹छाया ₹ से उत्पन्न हुए थे।

4) भाग्य देव :- इनकी पितृभक्ति से प्रसन्न हो कर भगवान सूर्य नारायण ने इन्हें वरदान दिया कि ये जिससे चाहे कुछ भी ले सकते हैं और जिनको चाहे कुछ भी दे सकते हैं। ये भगवान सूर्य की पहली पत्नी ₹संज्ञा₹ से उत्पन्न हुए थे।

5) अश्विनी कुमार :- ये देवताओं के वैद्य हैं। इनके पास शरीर से जुडी हर समस्या का समाधान है।

ये भी भगवान सूर्य की पहली पत्नी ₹संज्ञा₹ से उत्पन्न हुए थे।

अब हम इनकी पुत्रीयों के कर्मों के बारे में जानते हैं

1) यमुना देवी : यह नदी शांत नदी है। इस नदी का वेग भी सामान्य है। इस नदी में स्नान करने से यम की प्रताड़ना से मुक्ति मिलती हैं।

2) तापती देवी :- यह नदी यमुना देवी से स्वभाव में विपरीत है। इस नदी का वेग तीव्र है और स्वभाव से प्रचंड है। इस नदी में स्नान करने से पितृगड़ तृप्त होते हैं और शनि के साड़े साती से निजात मिलती हैं। और दोनों ही मोक्षदायनी नदी है। आज विश्व के ज्यादातर ब्राह्मणों की अजिवीका के मुख्य कारण ₹भगवान सूर्य नारायण ₹ ही हैं जिन्होंने यजुर्वेद की रचना कर न सिर्फ ₹याज्ञवल्क मुनि ₹ को कृतज्ञ किया अपितु सम्पूर्ण ब्राह्मणों को भी कृतज्ञ किया है। आज अगर ब्राह्मण अपना कर्म करा कर गर्व की अनुभूति करता है तो निश्चित रूप से उसके इस गर्व का मूल कारण ₹ भगवान भास्कर ₹ ही हैं।

सजा नहीं, सबक – तेलंगाना सरकार का प्रेरणादायक संदेश

[क्या लोकप्रियता का मतलब कानून से ऊपर होना है?]

एक ऐसी दुनिया जहां सितारे सिर्फ पर्दे की शोभा नहीं, बल्कि करोड़ों दिलों की उम्मीद बनते हैं, वहां अचानक एक साहसिक कदम ने सबको चौंका दिया। दक्षिण भारतीय सिनेमा के चमकते सितारे – विजय देवरकोंडा, राणा दग्गुबाती, प्रकाश राज – जो कभी ग्लैमर की चकाचौंध में डूबे थे, आज सट्टेबाजी ऐप्स के प्रचार के काले खेल में फंसकर कानून की चौखट पर खड़े हैं। यह सिर्फ एक कानूनी कार्रवाई नहीं, बल्कि समाज को आइना दिखाने वाली एक सकारात्मक पहल है, जो ग्लैमर के पीछे छिपे सच को उजागर कर रही है। तेलंगाना सरकार की यह मुहिम न सिर्फ सितारों की जवाबदेही तय कर रही है, बल्कि देश की अन्य राज्य सरकारों से भी ऐसी ही साहसी पहल की उम्मीद जगा रही है। क्या यह वो शुरुआत है, जो स्टारडम को नैतिकता के पैमाने पर तौलेगी?

एक अनजान चिंगारी ने उस दिन आग सुलगा दी, जब एक आम इंसान ने साहस का ऐसा परचम लहराया कि बड़े-बड़े सितारों की चमक फीकी पड़ गई। 32 साल के बिजनेसमैन फहद अहमद ने अपनी शिकायत के जरिए एक ऐसी चिंगारी सुलगाई, जिसने तेलंगाना पुलिस को झकझोर दिया, और मियापुर थाने में दर्ज एफआईआर ने पूरे देश में सनसनी का तूफान खड़ा कर दिया। आरोप है कि इन सितारों और इंफ्लुएंसर्स ने अपने प्रभाव का गलत इस्तेमाल कर लोगों को सट्टेबाजी के जाल में फंसाया। सोशल मीडिया पर चमचमाते विज्ञापन, बड़े-बड़े वादे और स्टारडम की चाशनी में लिपटे ऑफर – यह सब एक ऐसा मायाजाल था, जिसमें फंसकर कई लोगों ने अपनी मेहनत की कमाई गंवा दी। लेकिन इस कार्रवाई ने साबित कर दिया कि कानून की नजर में कोई छोटा-बड़ा नहीं। यह एक सकारात्मक संदेश है – स्टारडम का मतलब जनता को ठगने की छूट नहीं।

इस मामले में 25 नाम सामने आए – 6 फिल्मी सितारे और 19 इंफ्लुएंसर्स। विजय देवरकोंडा, राणा दग्गुबाती, मांचू लक्ष्मी, प्रणिता, निधि अग्रवाल, अमृता चौधरी, नयनी पावनी, पांडु, नेहा पवन, पावनवती, इमरान खान, हर्ष साई, बेबी सन्नी यादव, श्यामला, विष्णुप्रिया, टेस्टी तेजा और रितु चौधरी जैसे नामों की लंबी फेहरिस्त ने सबको हैरान कर दिया। ये वो चेहरे हैं, जिनके पीछे फैंस की दीवानगी थी, लेकिन अब पुलिस की जांच इनके हर कदम को परख रही है। यह जांच सिर्फ सजा देने के लिए नहीं, बल्कि समाज में जागरूकता लाने के लिए भी है। यह सवाल उठाती है – क्या प्रभावशाली लोग अपने असर की जिम्मेदारी समझते हैं? तेलंगाना की यह पहल एक मिसाल बन सकती है।

तेलंगाना सरकार का रुख इस मामले में प्रेरणादायक है। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने साफ कहा – फिल्म इंडस्ट्री का साथ देंगे, लेकिन कानून तोड़ने की इजाजत किसी को नहीं। यह संतुलित दृष्टिकोण न सिर्फ इंडस्ट्री को सहारा देता है, बल्कि गलत करने वालों को सबक भी सिखाता है। पहले अल्लू अर्जुन की गिरफ्तारी ने सुर्खियां बटोरी थीं, लेकिन इस बार की कार्रवाई एक बड़े बदलाव की ओर इशारा करती है। यह सिर्फ सजा का मसला नहीं, बल्कि समाज को बेहतर बनाने की कोशिश है। अन्य राज्य सरकारों को भी इससे प्रेरणा लेनी चाहिए – क्या वे भी अपने नागरिकों के हित में ऐसा साहस दिखा सकती हैं? यह वक्त की मांग है कि हर राज्य इस तरह के काले खेल के खिलाफ आवाज उठाए।

इस कार्रवाई का असर दूर तक जाएगा, और यह प्रभाव सकारात्मक है। तेलुगू फिल्म इंडस्ट्री की छवि पर सवाल उठे हैं, लेकिन यह एक मौका भी है – खुद को सुधारने का, जवाबदेही तय करने का। फैंस के बीच गुस्सा है, सोशल मीडिया पर बहस छिड़ी है – क्या उनके सितारे उनकी भावनाओं के हकदार हैं? लेकिन यह गुस्सा बदलाव की नींव बन सकता है। कानून विशेषज्ञ कहते हैं कि अगर आरोप साबित हुए, तो सजा के साथ-साथ इन सितारों की लोकप्रियता को भी झटका लगेगा। लेकिन यह झटका जरूरी है – यह सितारों को याद दिलाएगा कि उनका प्रभाव सिर्फ मनोरंजन तक सीमित नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने की ताकत रखता है। अन्य राज्यों को भी इस दिशा में कदम उठाने चाहिए, ताकि यह संदेश हर कोने तक पहुंचे।

यह मामला सिर्फ कोर्ट की चारदीवारी तक नहीं रुकेगा। यह स्टारडम और नैतिकता के बीच की जंग है, लेकिन इसे सकारात्मक नजरिए से देखें तो यह एक नई शुरुआत है। तेलंगाना की यह पहल बताती है कि सरकारें सिर्फ सजा देने के लिए नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करने के लिए भी काम कर सकती हैं। अगर अन्य राज्य सरकारें भी इस राह पर चलें – ऑनलाइन ठगी, सट्टेबाजी और गलत प्रचार के खिलाफ सख्त कदम उठाएं – तो यह देश के लिए एक सुनहरा अध्याय होगा। यह सितारों के लिए भी सबक है कि उनकी चमक तभी बरकरार रहेगी, जब वे अपने फैंस के भरोसे को कायम रखें। यह कार्रवाई सजा से ज्यादा सुधार की बात करती है।

जब सितारे आसमान से जमीन पर आते हैं, तो उनकी चमक नई राहें रोशन करती है। तेलंगाना की यह मुहिम न सिर्फ एक काले सच को बेनकाब कर रही है, बल्कि समाज में भरोसा और जिम्मेदारी की नई उम्मीद जगा रही है। यह सितारों के लिए चुनौती है कि वे अपनी चमक को सही मायनों में साबित करें, और सरकारों के लिए प्रेरणा है कि वे अपने नागरिकों के हित में साहसिक कदम उठाएं। अगर हर राज्य इस राह पर चले, तो यह न सिर्फ सट्टेबाजी जैसे अपराधों पर लगाम लगाएगा, बल्कि स्टारडम को एक नई, साफ-सुथरी पहचान देगा। वक्त का पहिया घूम रहा है, और यह सकारात्मक बदलाव का वक्त है। बस उस सुबह का इंतजार है, जब सच की रोशनी हर कोने को नई दिशा देगी, और सितारे सिर्फ चमकने नहीं, बल्कि रास्ता दिखाने के लिए जाने जाएंगे। क्या आप भी इस बदलाव के साक्षी बनने को तैयार हैं?

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

उसकी आंखों में लाली चमक रही थी, उसने रोते रोते कहा, साहब।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह 'सहज'

और ये भी सच है कि मुहब्बत की आंखें नहीं हुआ करती है।मुहब्बत जब हो जाती है तो इंसानी वजूद पर दिल दिमाग़ से आगे निकल जाता है।अंजली बेहद हसीन और दानिशमंद थी मै रफ़्ता रफ़्ता अंजली की मुहब्बत में गिरफ़्तार होता चला गया।और वो भी मुझको अपना समझने लगी।

अंजली और शामली इस वाक़्ये को कई वर्ष गुज़र चुके हैं।

लेकिन मैं आज भी शामली को नहीं भुला पाया हूं।रही बात अंजली की तो वो मेरे कॉलेज में मेरे साथ ही पढ़ाई कर रही थी।और मेरी बड़ीअच्छी दोस्त भी वही थी।आप समझ सकते हैं कि दोस्तीऔर मुहब्बत के बीच कितना फ़ासला होता है।दोस्ती को मुहब्बत की आग आख़िरकार पिघला ही देती है।और दोस्ती मुहब्बत में तब्दील हो कर रहती है।और ये भी सच है कि मुहब्बत की आंखें नही हुआ करती है।मुहब्बत जब हो जाती है तो इंसानी वजूद पर दिल दिमाग़ से आगे निकल जाता है।अंजली बेहद हसीन और दानिशमंद थी।मै रफ़्ता रफ़्ता अंजली की मुहब्बत में गिरफ़्तार होता चला गया।और वो भी मुझको अपना समझने लगी।और फ़िर ज़िदगी का साथ निभाने की कसमें हमने खाई।मुलाकातों का सिलसिला बढ़ता ही चला गया।और फिर उन दिनों मेरी एक कहानी मैगजीन मे शाया हुई तो उसको पढ़कर अंजली की नाराज़गी सामने आई।वजह देखिए अफ़साने के किरदार जिसे एक कॉलेज की लड़की जिसको मैने एक क्रेरेक्टर बना कर पेश किया था दुसरा किरदार मैने खुद अपने आप को लेकर लिखा था।जिसको लेकर बदगुमानी अंजली दिखा रही थी।मैने इस मुतालिक बात जब भी करना चाही अंजली ने इम्तिहान की मसरुफ़ियत बता कर बात को टाल दिया इम्तिहान भी हो गए कॉलेज भी बंद हो गये।अंजली अपने घर लौट गयी।मैंने बहुत कोशिशें की अंजली से मिलकर मैटर को हल किया जाये मगर शायद ख़ुदा को भी यही मंज़ूर था तो मैंने भी इसी में अपनी ख़ुशी समझकर अपना रास्ता लिया और मै भी अपने घर आ गया।और अपने आप को अल्फ़ाज़ों की दुनिया में मशग़ूल कर दिया।मन तो नहीं लग रहा था कहीं न कहीं अंजली का ख़्याल भी था।एक रोज़ मैं अपना मुख़्तसर सा सामान लेकर घर से दूर मेहरा गांव के डॉकबंगले आ गया।वहां कुछ दिन रहकर मैने आराम भी किया और लिखने के काम को भी अंजाम देता रहा।

यहां डाक बंगले की ऊंचाई से मेहरा गांव का मंज़र काफ़ी दिलकश नज़र आता था।

सो मैं ने एक रोज़ डॉकबंगले क चपरासी जो वहां की जिम्मेदारी देखता था उससे कहा कि हमे गांव की सैर कराओ।

वो मान गया फ़िर एक रोज़ शाम को हम पगडंडी से होकर नीचे गांव की तरफ़ चल दिए।

जहां चौकीदार हरिराम ने मुझे एक चारपाई पर बैठ जाने का ईशारा किया।

और वहीं वो अंदर एक झोंपड़ी के भीतर चला गया।वापसी में आया तो एक बुज़ुर्ग शख़्स भी साथ था।कुछ देर ईधर उधर की बात के साथ मेरे बारे मे हरिराम ने बताया और बताया कि दादा पहले मेरी जगह यहीं काम करते थे।फ़िर मैंने देखा कि एक पहाड़ी ख़ूबसूरत दोशीज़ा चाय लेकर वहां नमुदार हुई। जिसे देखकर लगा कि सुंदरता तो सिर्फ़ यही है।मेरे हाथ पैरों मे बिजली सी दौड़ गयी।

हम वापस डाक बंगले में आगये थे।

लेकिन मेरा दिल वहीं रह गया था।फ़िर हुआ यूंकि कुछ दिनों बाद हरिराम कहीं बाहर चला गया था।उसे कहीं कुछ ज़रूरी काम दरपेश आगया था।और मेरा खाना वो लड़की अपने दादा के साथ आकर बनाकर चली जाया करती थी।एक हफ़्ते तक हरिराम नहीं लौटा इस दौरान वो लड़की और दादा बराबर आते रहे।लड़की ने अपना नाम शामली बताया था।एक हफ्ते में शामली मुझसे ऐसे घुल मिल गई मानो वो मुझे वर्षों से पहचानती हो।शामली बहुत ही खुश मिज़ाज़ किस्म की लड़की थी।बाते तो वो बहुत करती थी।मुझे उसको देखना उससे बातें करना बड़ा ही अच्छा लगता था।इसको देखने मेरे दिल को बड़ा सुकुन मिलता था।इन दिनों में लिखता कम उसी के बारे में सोचता रहता था।इसी बीच मैं मैं तीन चार दफ़ा शामली के साथ उसके घर भी हो कर आया था।शामली मुझसे बहुत बातें करती माने मेरा उसका तॉल्लुक नया न होकर काफ़ी पुराना हो वो मुझको एक दो बार पास की नदी की तरफ़ भी लेकर गयी जहां का मंजर दिल को बहुत अच्छा सा लगा मैने उससे रज़ामंदी लेकर उसकी तस्वीरें भी निकाली मैं शामली में दिलचस्पी लेने लगा था।और शायद वो भी मेरे इंतज़ार में रहने लगी थी।मैंअब उसी के ख़्याल में डूबता जा रहा था।और फ़िर एक रोज़ हरिराम वापस लौट आया था।मेंने पूछा कब आये तो उसने सपाट सा जवाब दिया कल आ गया था।उसकी बेरुख़ी साफ़ ज़ाहिर थी।मुझे उसका लहज़ा समझ में आ गया कि कहीं न कहीं कोई नाराज़गी ज़रूर है। पूछने पर उसने वजह बताई साहब आप और शामली कहां कहां घूमने गए थे कह कर वो ख़ामोश होगया।कुछ देर के लिए सन्नाटा सा पर गया था।उसने कहा शामली ने मुझे सब बता दिया है साहब।लेकिन हरिराम बात क्या है कुछ तो तो बताओ। शामली ने क्या बताया मैं ख़ामोश था।वो भी ख़ामोशी से काम करता रहा। वोउखे कुछ उखड़ा उखड़ा सा लग रहा था फ़िर उसके बाद शामली नज़र नहीं आई।मैं बेचैन सा बंगले से बार बार उस गांव की तरफ़ देखता रहा।शामली कहीं भी नज़र नहीं आई।मै रात भर सो नहीं पाया मैं समझ नही पाया कि बात आख़िर क्या है। फ़िर दूसरे दिन जब हरिराम सुबह बंगले पर आया तो ऐसा लग रहा था मानो वो कुछ बोलना चाह रहा है, मगर बोल नहीं पा रहा है।मैं उसके क़रीब जाकर उसके कंधे पर हाथ रखकर बैठ गया।मैने कहा हरिराम बोलो जो भी कहना हो साफ़ साफ़ कहो, मुझे भी तो मालूम हो हक़ीक़त क्या है।वो कुछ नहीं बोला।मैंने उससे बहुत इसरार किया तो हरिराम ने बताया साहब शामली से मेरा विवाह होने वाला है।मैंने कहा बहुत ख़ुब हरी शामली बहुत समझदार और अच्छी लड़की है।मैं हरिराम से बात ज़रूर कर रहा था मगर मेरा दिमाग़ कहीं और ही था।

मेरे समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।तो क्या!मैं ने ख़ुद से पूछा क्या मैं वाक़ई गुनाह की तरफ़ बढ़ रहा था नहीं, नहीं एसा नहीं हो सकता।लेकिन शामली भी तो मुझसे शायद मुहब्बत करने लगी थी नहीं, नहीं, ये कैसे हो सकता है।फिर हरिराम वापस लौट गया मैं आज रात भी उदास सा बिस्तर पर करवटें बदलता रहा।सुबह फिर मैं मेहरा गांव की तरफ़ निकल गया।वहां हरिराम मिलगाया कहने लगा साब आप इधर मैंने कहा शामली से मिलना है।मेरा मन कर रहा है कि मैं जल्दी ही वापस अपने शहर लोट जाऊं।हरी मुस्कुराया,उसका चेहरा खिल उठा था, लेकिन फिर भी मेरी कश मकाशदोनो दिमाग के बीच जारी थी ,हम शामली की झोंपड़ी के सामने थे, हरी ने आवाज़ दी, शामली, शामली, शामली नहीं आई दादा ने बाहर आकर कहा शामली कहीं बाहर गई है।

हम वापस डाक बंगले में आ गए थे, हरी ने कहा साब आज भोजन में क्या बना दूं, मैंने कहा हरी आज भुख नहीं है रहने दो।मैंने हरी राम से कहा की शामली को बता देना कि में शायद कल वापस लोट जाऊंगा सुबह।हो सके तो मुझसे मिले उसने और दादा ने और तुमने मुझे बड़े अच्छे से मेरी मदद की है।वरना मुझे तो खाना पकाना आता ही नहीं है।सारी रात सो नहीं पाया था, और सुबह हो गई।मेरे घर सबको पता था कि मैं यहां मेहरा गांव में हूं। सुबह मैं नाश्ता करने के लिए तैयार ही था कि सामने आ कर एक कार रुकी उसमें से अंजली उतरते हुए दिखी।मुझको यक़ीन नहीं हो रहा था कि मैं क्या देख रहा हूँ।माज़ी की चुभन बड़ी तकलीफ़ देह होती है वो बड़े अक़ीदत के साथ मेरे पास आकर मुझसे लिपट कर रोने लगी।आंखों में वही चमक जो कॉलेज के दिनों में हुआ करती थी।पता नहीं शामली वहां कब से खड़ी ये सब देख रही थी।वो मेरे सामने से गुज़र कर नीचे पगडंडी से होकर उसकी झोंपड़ी की तरफ़ बहुत तेज़ी से जा रही थी मानो दौड़ ही रही हो।मेरा ज़हन बर्फ़ की तरह ठंडा पड़ गया था।समझ नहीं पाया ये क्या घटित होता जा रहा है।मेरा दिल चाह कहीं था कि शामली वापस आ जाए।मुझे लगा कि अब मैं शामली से कभी भी नहीं मिल सकूंगा।अब फ़ैसला भी तो हो चुका था, मुझको वापस अंजली के साथ जाना था न कोई शिकवा था न कोई शिकायत फिर भी।मुहब्बत के तकाज़ो.को वक्ती तौर पर दबाया तो जा सकता है मगर आसानी से भुलाया नहीं जा सकता है।अंजली की मुहब्बत का जज़्बा होते देखते हुए भी शामली की फ़िक्र और हमदर्दी मुझे सताये जा रही थी।कार आगे बढ़ने लगी थी हरिराम ने ख़ुशी से सामान कार में रख दिया था।मैने हरि को कुछ रुपए दिये और अलग से कहा कि ये कुछ पैसे है शामली और उसके दादा के दे देना।कोई ग़ल्ती मुझसे हो गई हो तो मुआफ़ कर देना हरिराम मुस्कुराया कहने लगा नहीं साहब एसा न बोलो कार थोड़ी आगे बढ़ी ही थी कि शामली दौड़ कर आती हुयी नज़र आई वो हांफ़ रही थी।उसके हाथ में मेरा दिया हुआ शाल था मैं जल्दी से गाड़ी से उतर गया उसने भी फ़ुर्ती से मेरे हाथ में शाल रखकर कहा साहब वैसा का वैसा ही रखा है।साहब इसकी घड़ी भी हमने नहीं तोड़ी साहब।उसकी आंखों में लाली चमक रही थी,उसने रोते रोते कहा साहब हम पहाड़ी अनपढ़ लोग हैं।हमको शहरी चीज़ें रास नहीं आती साहब और वहां से रोते हुए भाग गई।

हरि जो बहुत ख़ुश नज़र आ रहा था उसने दौड़कर शामली को पकड़ कर संभाला मैं देख रहा था कि अब दोनों पगडंडियों पर साथ साथ आगे बढ़े जा रहे थे।और हमारी कार भी तेज़ी से आगे बढ़ रही थी।कार मैं नहीं अंजली ड्राइव कर रही थी।अंजली बेख़बर थी मेरे अंदर के इस तुफ़ान से।

गणेश शंकर विद्यार्थी – पत्रकारिता के स्वर्णिम शिखर पर अमर बलिदान

25 मार्च : गणेश शंकर विद्यार्थी पुण्यतिथि]

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास एक ऐसी अजेय महागाथा है, जो अदम्य वीरता, असीम बलिदान और साहस की मिसालों से भरा पड़ा है। इस गौरवमयी गाथा का हर अध्याय उन असंख्य शूरवीरों की अमिट दास्तान बयां करता है, जिन्होंने अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान देकर मातृभूमि को स्वाधीनता का स्वर्णिम मार्ग प्रशस्त किया। किंतु कुछ व्यक्तित्व ऐसे उभरकर सामने आते हैं, जो न केवल स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत थे, बल्कि समाज के संरक्षक, जन-जागृति के दीपस्तंभ और सत्य के अटल उपासक भी थे। ऐसा ही एक प्रेरणादायी नक्षत्र थे – गणेश शंकर विद्यार्थी। उनके हाथों में भले ही तलवार न रही हो, पर उनकी कलम में वह प्रखरता थी, जो ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचारों के दुर्ग को ध्वस्त करने की अपार शक्ति से लबरेज थी। उनकी ओजस्वी लेखनी ने स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को प्रचंड करने के साथ-साथ समाज में समता, एकता और सौहार्द की अखंड नींव भी स्थापित की। 25 मार्च को उनकी पुण्यतिथि पर, जब हम उनके तेजस्वी जीवन को स्मरण करते हैं, तो यह महज एक श्रद्धांजलि नहीं, अपितु एक दृढ़ संकल्प है – उनके द्वारा आलोकित पथ पर अग्रसर होकर हम देश और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को पूर्ण निष्ठा से निभाएंगे।

गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म 26 अक्टूबर 1890 को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) में एक साधारण परिवार में हुआ, किंतु उनकी असाधारण प्रतिभा ने उन्हें इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में अमर कर दिया। उनके पिता जय नारायण, एक शिक्षक, साहित्य और शिक्षा के प्रति अपनी अटूट निष्ठा से गणेश के कोमल मन में ज्ञान और जागृति की प्रथम ज्योति प्रज्वलित करने वाले प्रेरणा स्रोत बने। बचपन से ही उनकी तीक्ष्ण बुद्धि और अनंत जिज्ञासा उन्हें अपने समकालीनों से विशिष्ट बनाती थी। आर्थिक अभावों और सीमित संसाधनों की कठोर चुनौतियों के मध्य भी, उन्होंने शिक्षा को अपना ध्येय बनाया और समाज की गहरी जड़ों में व्याप्त कुरीतियों को न केवल समझा, बल्कि उन्हें उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया। किशोरावस्था में ही उनके हृदय में अन्याय के विरुद्ध विद्रोह की एक सशक्त चिंगारी सुलग उठी थी। यह चिंगारी कालांतर में उनकी ओजस्वी कलम और निःस्वार्थ कर्म में एक प्रचंड अग्नि बनकर धधक उठी, जिसने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिलाकर रख दिया और जन-जन के भीतर स्वतंत्रता की अलख जगा दी।

गणेश शंकर विद्यार्थी का नाम भारतीय पत्रकारिता के स्वर्णिम इतिहास में एक अडिग मील का पत्थर है, जिसने सत्य और स्वाधीनता के संघर्ष को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। 1913 में जब उन्होंने 'प्रताप' समाचार पत्र की नींव रखी, तो यह केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रचंड क्रांतिकारी हथियार बनकर उभरा। उनकी लेखनी सत्य की प्रखर ज्वाला थी, जो ब्रिटिश शासन के कपट और अत्याचारों के काले आवरण को चीरकर सच्चाई को उजागर करती थी। 'प्रताप' के प्रत्येक पन्ने पर उनकी कलम ने किसानों, मजदूरों और शोषित समाज की दबी-कुचली आवाज को एक गर्जन में बदल दिया। उनके शब्द, ₹जब तक समाज का एक भी प्राणी शोषण की बेड़ियों में जकड़ा है, तब तक स्वतंत्रता का स्वप्न अधूरा है,₹ उनकी दूरदर्शी सोच और अटल संकल्प का प्रतीक बन गए। वे केवल राजनैतिक आजादी के सिपाही नहीं थे, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता के लिए एक अथक योद्धा थे, जिनकी पत्रकारिता ने न सिर्फ इतिहास लिखा, बल्कि उसे गढ़ा भी।

'प्रताप' के तीक्ष्ण लेखों ने ब्रिटिश शासकों के मन में ऐसी बेचैनी पैदा की कि उनकी नींद हराम हो गई। इन लेखों की प्रखरता ने न केवल उनके झूठे मुखौटे को उघाड़ा, बल्कि उनकी सत्ता को चुनौती दी, जिसके चलते अखबार पर बार-बार प्रतिबंधों का पहाड़ टूटा और गणेश शंकर विद्यार्थी को जेल की सलाखों के पीछे कठोर यातनाएं सहनी पड़ीं। लेकिन जेल की ऊंची दीवारें और अंधेरी कोठरियां उनकी अडिग लेखनी को बेड़ियों में नहीं जकड़ सकीं। हर बार जब वे कैद से आजाद हुए, उनकी कलम पहले से भी अधिक तेजस्वी होकर उभरी, जो जनता के हृदय में स्वतंत्रता की आग को और प्रचंडता से भड़काती थी। उनकी यह नन्हीं-सी और अद्वितीय साहसिकता उन्हें जनता का ऐसा प्रिय नायक बनाया, जिसका नाम आज भी सम्मान से गूंजता है।

गणेश शंकर विद्यार्थी स्वतंत्रता संग्राम के हर महत्वपूर्ण मोड़ पर एक अटल योद्धा की तरह खड़े रहे। चाहे वह महात्मा गांधी का असहयोग आंदोलन हो या सविनय अवज्ञा आंदोलन, उनकी ओजस्वी लेखनी और प्रेरक भाषणों ने जन-सैलाब में क्रांति का ऐसा जोश भरा कि वह अंग्रेजी हुकूमत के लिए एक तूफान बन गया। वे सांप्रदायिक एकता के सबसे प्रबल प्रहरी थे, जिनका अटूट विश्वास था कि भारत की स्वाधीनता का स्वर्णिम सपना तभी साकार होगा, जब हिंदू और मुसलमान एकजुट होकर, कंधे से कंधा जोड़कर इस पवित्र युद्ध में जुट जाएंगे। अपने लेखों और कर्मों के जरिए उन्होंने बारंबार यह संदेश प्रखरता से दोहराया कि धार्मिक विभाजन देश की एकता का सबसे घातक शत्रु है, और इसे जड़ से उखाड़ फेंकना ही आजादी की सच्ची नींव रखेगा।

25 मार्च 1931 का वह काला दिन भारतीय इतिहास के माथे पर एक अमिट दाग की तरह अंकित है, जिसने देश की आत्मा को झकझोर कर रख दिया। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की फांसी के बाद देशभर में आक्रोश का ज्वालामुखी फट पड़ा था। इसी उथल-पुथल के बीच कानपुर में सांप्रदायिक दंगों की आग भड़क उठी, और चारों ओर हिंसा का भयानक नृत्य शुरू हो गया। इस संकट की घड़ी में, जब हर ओर अराजकता का साम्राज्य था, गणेश शंकर विद्यार्थी ने अपनी जान की परवाह को तिलांजलि देकर शांति का संकल्प लिया। वे निर्भीकता से हिंसा की चपेट में आए इलाकों में पहुंचे, लोगों से शांति की गुहार लगाई, और उन्मादी दंगाइयों को समझाने का हर संभव प्रयास किया। किंतु उस विक्षिप्त भीड़ ने उनकी पुकार को अनसुना कर दिया और उन पर क्रूर हमला बोल दिया। इसी हमले में उन्होंने अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दे दिया। उनकी यह शहादत महज एक जीवन का अंत नहीं थी, बल्कि सांप्रदायिक एकता और मानवता के लिए एक अमर दीपस्तंभ बन गई, जो युगों तक प्रेरणा की ज्योति जलाए रखेगी।

गणेश शंकर विद्यार्थी की शहादत ने समूचे राष्ट्र को हिलाकर रख दिया, मानो देश की आत्मा पर एक गहरा आघात लगा हो। उनकी मृत्यु के बाद भी उनके ओजस्वी विचार और अडिग आदर्श एक प्रेरक ज्योति बनकर जीवित रहे, जो आज भी मार्गदर्शन करते हैं। उनकी अमर स्मृति को सम्मान देने के लिए कानपुर विश्वविद्यालय का नाम 'छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय' रखा गया, और भारत सरकार ने 'गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार' की स्थापना की, जो पत्रकारिता के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए प्रदान किया जाता है। उनका जीवन हमें यह गहन संदेश देता है कि सच्ची देशभक्ति केवल रणभूमि की वीरता में ही नहीं, बल्कि समाज के उत्थान और मानवता की सेवा के लिए किए गए अथक प्रयासों में भी समाहित है।

गणेश शंकर विद्यार्थी का जीवन एक प्रज्वलित मशाल है, जो युगों के अंधेरे को चीरकर हमें सत्य और प्रकाश की ओर ले जाती है। उनकी पुण्यतिथि का हर पल हमें यह स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता और शांति का मूल्य अनमोल है, जिसे असंख्य बलिदानों से अर्जित किया गया। उनकी कलम से फूटी हर स्याही की बूंद आज भी हमारे हृदय में एक क्रांतिकारी ज्वाला प्रज्वलित करती है—अन्याय के खिलाफ निर्भीकता से आवाज उठाने, समाज में सौहार्द की नींव को मजबूत करने और सत्य के पथ पर अडिग रहने की प्रेरणा देती है। उनका बलिदान एक शाश्वत संदेश है कि जो सत्य और न्याय के लिए अपने प्राण न्योछावर करते हैं, वे कभी विस्मृति के गर्त में नहीं समाते—वे समय की सीमाओं को लांघकर अमरत्व को प्राप्त करते हैं। उनके सपनों का भारत—एकजुट, स्वाधीन और समृद्ध भारत—हमारे सामने एक जीवंत लक्ष्य है, जिसे साकार करने के लिए हमें अपनी संपूर्ण शक्ति और समर्पण से जुटना होगा। गणेश शंकर विद्यार्थी की यह गाथा केवल इतिहास की पंक्तियों तक सीमित नहीं, बल्कि हमारे भविष्य का वह जीवंत मार्गदर्शक है, जो हमें हर कदम पर प्रेरित और दिशाबोध करता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आईईडी ब्लास्ट में शहीद हुए जवान को राज्यपाल,मुख्यमंत्री ने दी श्रद्धांजलि

कार्तिक कुमार परिच्छा,स्टेट हेड
झारखंड

रांची , झारखंड के राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने रांची के धुर्वा स्थित 133वीं सीआरपीएफ बटालियन के कैंपस में पहुंचकर शहीद जवान के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित किया। राज्यपाल ने कहा कि जवान सुनील कुमार मंडल का अदम्य साहस और सर्वोच्च बलिदान सदैव स्मरणीय रहेगा। आने वाली पीढ़ियों के लिए वह प्रेरणा बने रहेंगे।

उन्होंने शहीद के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि इस दुखद घड़ी में पूरा राष्ट्र उनके साथ खड़ा है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद मीडिया से बात करते हुए कहा कि नक्सलियों के खिलाफ लगातार ऑपरेशन चल रहा है और इसमें व्यापक सफलता भी मिली है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन के दौरान शहीद हुए जवान की शहादत को हम व्यर्थ नहीं जाने देंगे।

सीआरपीएफ के सुनील कुमार मंडल और एक अन्य जवान झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम (चाईबासा) जिले के छोटानागरा थाना क्षेत्र में शनिवार को नक्सलियों द्वारा बिछाए आईईडी की चपेट में आने से बुरी तरह जख्मी हुए थे। दोनों को एयरलिफ्ट कर रांची लाया गया था, जहां सुनील कुमार मंडल ने दम तोड़ दिया था।

विस्फोट की यह घटना उस वक्त हुई थी, जब सुरक्षा बलों का दस्ता जंगलवर्ती इलाके में नक्सलियों के खिलाफ सर्च ऑपरेशन पर था। चाईबासा के दुरूह जंगलों और पहाड़ियों में पनाह लेकर हिंसक वारदातें अंजाम देने वाले माओवादी नक्सलियों के खिलाफ पुलिस और सुरक्षाबलों की ओर से लगातार अभियान चलाया जा रहा है।

सुरक्षाबलों को नुकसान पहुंचाने और अपने ठिकानों तक पहुंचने से रोकने के लिए नक्सलियों ने पूरे इलाके में जमीन के नीचे जगह-जगह आईईडी लगा रखे हैं, जिन पर जवानों के पांव पड़ते या हल्का प्रेशर बनते ही विस्फोट हो जाता है।

इस मार्च महीने में आईईडी विस्फोट की तीन घटनाएं हुई हैं, जिसमें एक सब इंस्पेक्टर की शहादत के अलावा पांच अन्य जवान-अफसर घायल हुए हैं ।जो गंभीर विषय है । वैसे झारखंड का चाईबासा जिला में सरकारी योजनाएं अक्सर फ्लाप होता आया है परिणाम यहां नक्सल उदंड है ।

देश न भूले भगत को

तन-मन अर्पित कर चला, रक्षा में बलिदान।
इतिहासों में गूंजता, आज भगत जय-गान।।

भगत सिंह, सुखदेव क्यों, खो बैठे पहचान?
पूछ रही माँ भारती, बोलो हिंदुस्तान।।

भगत सिंह, आज़ाद ने, फूंका था शंख नाद।
आज़ादी जिनसे मिले, रखो हमेशा याद।।

बोलो सौरभ क्यों नहीं, भारत हो लाचार।
भगत सिंह कोई नहीं, बनने को तैयार।।

भगत सिंह, आज़ाद से, हो जन्मे जब वीर।
रक्षा करते देश की, डिगे न उनका धीर।।

मरते दम तक हम करें, एक यही फरियाद।
देश न भूले भगत को, याद रहे आज़ाद।।

यौवन जिसने वार दी, मातृभूमि के नाम।
उस सपूत को आज भी, करता जगत प्रणाम।।

भारत माता के हुआ, मन में आज मलाल।
पैदा क्यों होते नहीं, भगत सिंह से लाल।।

रोया सारा व्योम जब, तड़पे सारे देव।
फांसी झूले जब गए, भगत, राज, सुखदेव।।

भगत सिंह, आज़ाद हो, या हो वीर अनाम।
करें समर्पित हम उन्हे, सौरभ प्रथम प्रणाम।।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

माटी अब भी पूछती

पैदा क्यों होते नहीं, भगत सिंह से वीर,
माटी अब भी पूछती, कब जागेगी पीर?

स्वप्न सिसकते रह गए, कहाँ गई वह बात,
चिंगारी तो जल रही, राख हुई सौगात।

नारे मंच पर गूंजते, हुई ज़ुबां है मौन,
जोश बिखरकर रह गया, जज़्बा लाये कौन।

होते हैं भाषण बहुत, पर खामोश ज़मीर,
शब्द बचे हैं युद्ध के, गए कहाँ रणधीर?

भारत माता पूछती, कौन बने कुर्बान,
लाल हुए थे जो कभी, लगते अब अनजान?

सबके हित की बात का, बुझने लगा उबाल,
सत्ताओं की साँकलें, बाँध रहीं भूचाल।

सत्ताओं की साँकलें, बाँध रहीं तक़दीर,
ख़ुद को ख़ुद से हारकर, भारत खड़ा अधीर।

-प्रियंका सौरभ

जहांगीरपुरी में श्रीमद् भागवत कथा से पहले निकाली गई विशाल कलश यात्रा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्लीः दिल्ली के जहांगीरपुरी इलाके में श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ से पहले कलश यात्रा निकाली गई। यह कलश यात्रा जहांगीरपुरी जे ब्लॉक गुरूदारे के सामने वाले पार्क से आरंभ हुई और क्षेत्र के कई गलियों से होते हुए वापस कथा स्थल पर आकर सम्पन्न हुई।

आपको बातदें कि इस कथा का आयोजन जहांगीरपुरी आई जे ब्लॉक आरडब्ल्यूए के द्वारा किया जा रहा है। इस मौके पर आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष एमएल भास्कर, नवीन कुमार, अनिल कुमार सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

इस मौके पर कथा व्यास प्रमोद कृष्ण भारद्वाज शास्त्री ने कथा के दौरान उपस्थित भक्तों को श्रीमद् भागवत कथा के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने आगे बताया कि सभी को सत्य की राह पर चलना चाहिए, जो भक्त सत्य की राह पर चलता है, उसका कल्याण अवश्य ही होता है। इस मौके पर आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष एमएल भास्कर ने कहा कि सभी को कथा का श्रवण ध्यानपूर्वक करना चाहिए और जहां पर भी कथा आयोजित हो रही है, वहां पर समय निकालकर अवश्य ही जाना चाहिए। इस मौके पर कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 की धारा 19(5) के मुताबिक जानकारी के विलंब या अस्वीकृति का प्रमाण देना राज्य जन सूचना अधिकारी की जिम्मेदारी

परिवहन विशेष न्यूज

हिसार। सूचना का अधिकार अधिनियम (आरटीआई एक्ट)-2005 एक ऐसा कानून है, जो नागरिकों को सार्वजनिक प्राधिकरणों या सरकारी तंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने का अधिकार देता है। आरटीआई की धारा 19(5) विशेष रूप से अपील की प्रक्रिया में भूमिका निभाती है।

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 19(5) के मुताबिक, किसी अपील में यह साबित करना होगा कि अनुरोध को अस्वीकार करना न्यायोचित था. यह जिम्मेदारी उस अधिकारी की होगी जिसने अनुरोध को अस्वीकार किया था।

धारा 19(5) के अनुसार जब किसी भी आवेदक को सूचना प्राप्त नहीं होती है या उसे गलत तरीके से इनकार किया जाता है तो अपील की स्थिति में यह जिम्मेदारी सम्बन्धित केंद्रीय जन सूचना अधिकारी या राज्य जन सूचना अधिकारी की होती है कि वे यह साबित करें कि सूचना देने में देरी हुई है या उनका इनकार उचित था।

इस प्रावधान का महत्वः-

पारदर्शिता बढ़ानाः-

केंद्रीय जन सूचना अधिकारी या राज्य जन सूचना अधिकारी को अपना पक्ष रखने के लिए तथ्यों और नियमों का सहारा लेना पड़ता है, यह प्रक्रिया सरकारी तंत्र में पारदर्शिता को प्रोत्साहित करती है।

जवाबदेही तय करनाः-

धारा 19(5) के अनुसार केंद्रीय जन सूचना अधिकारी या राज्य जन सूचना अधिकारी, आवेदक को मनमाने ढंग से सूचना देने से इनकार न करें। यदि सूचना देने में देरी की है या इनकार किया है तो उन्हें अपने निर्णय को वैध साबित करना होगा।

आवेदक पर बोझ नहींः-

यह प्रावधान यह सुनिश्चित करता है कि आवेदक पर अपनी बात साबित करने का कोई दबाव न हो, इससे आम नागरिकों को न्याय पाने में आसानी होती है।

न्यायिक टिप्पणीः-

13 नवंबर, 2019 को माननीय उच्चतम न्यायालय ने अपने एक निर्णय में उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के कार्यालय को सार्वजनिक प्राधिकरण बताते हुए इसे आरटीआई के दायरे में ला दिया है। यह निर्णय उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सहित पांच न्यायाधीशों की संवैधानिक पीठ ने दिया है। इस पीठ में मुख्य न्यायाधीश जस्टिस रंजन गोगोई, एन.वी. रमन्ना, डी. वाई. चंद्रचूड़, दीपक गुप्ता एवं संजीव खन्ना शामिल थे। इस निर्णय के बाद अब 'सूचना का अधिकार' के तहत आवेदन देकर सीजेआई के कार्यालय से सूचना मांगी जा सकती है। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि गोपनीयता, स्वायत्तता एवं पारदर्शिता में संतुलन जरूरी है।

माननीय उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि न्यायपालिका आरटीआई के दायरे में न तो पहले आती थी न अब। किंतु न्यायपालिका का न्यायिक प्रशासन सार्वजनिक प्राधिकरण होने के कारण आरटीआई के अंतर्गत आता है।

माननीय उच्चतम न्यायालय ने इस विषय पर भी स्पष्ट किया है कि सूचना का अधिकार जनता का मौलिक अधिकार है और इसे केवल असाधारण परिस्थितियों में ही रोका जा सकता है।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड/सीबीएसई बनाम आदित्य बन्धोपाध्याय (2011):- इसमें माननीय उच्चतम न्यायालय ने कहा कि सूचना देने से इनकार करने के लिए अधिकारी को ठोस कारण प्रस्तुत करना होगा।

आर.के. गुप्ता बनाम केन्द्रीय सूचना आयोगः- इसमें न्यायालय ने दोहराया कि अधिकारियों को निष्पक्ष और सत्यता के साथ सूचना प्रदान करनी चाहिए।

निष्कर्षः-

धारा 19(5) आवेदकों को न्याय दिलाने का एक मजबूत प्रावधान है। यह न केवल जनता के अधिकारों की रक्षा करता है

कोई बहुत बड़ा अजूबा नहीं है ग्रोक !

आज पूरा विश्व धीरे-धीरे ही सही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(एआइ) के युग में प्रवेश कर रहा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के इस युग में व्यवसाय और सरकारी संस्थाएँ ग्राहकों के अनुभवों को बेहतर बनाने, प्रतिस्पर्धात्मक लाभ बढ़ाने और समुदायों में सुरक्षा और संरक्षा में सुधार करने के लिए मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) जैसे कम्प्यूट-इंटेंसिव अनुप्रयोगों की ओर तेज़ी से बढ़ रही हैं ।इन दिनों चैटजीपीटी, गूगल जेमिनी, मेटा एआई और डीपसीक जैसे एआइ चैटबॉट के बीच ग्रोक एआइ(आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) इंटरनेट की दुनिया में काफी चर्चा का विषय बना हुआ है। एआइ का यह(ग्रोक) एक नया-नवेला प्लेटफॉर्म है, और इसे इन दिनों भारत में भी बहुत पसंद किया जा रहा है। वास्तव में,ग्रोक एक नया, सरल प्रोसेसिंग आर्किटेक्चर पेश कर रहा है, जिसे विशेष रूप से मशीन लर्निंग अनुप्रयोगों और अन्य कम्प्यूट-गहन कार्यभार की प्रदर्शन आवश्यकताओं के लिए डिज़ाइन किया गया है। पाठकों को बताता चलूं कि ग्रोक को एक्स एआइ नामक एक कंपनी ने विकसित किया है, जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका(यूएसए) में है। वास्तव में,इस चैटबॉट को एलन मस्क के एआइ रीसर्च ऑर्गनाइजेशन (एक्स एआइ) की ओर से बनाया गया है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि सॉफ़्टवेयर-प्रथम मानसिकता से प्रेरित, ग्रोक की चिप वास्तुकला एक नया प्रसंस्करण प्रतिमान प्रदान करती है, जिसमें निष्पादन और डेटा प्रवाह का नियंत्रण हार्डवेयर से कंपाइलर में स्थानांतरित हो जाता है। सभी निष्पादन योजनाएँ सॉफ़्टवेयर में होती हैं, जिससे अतिरिक्त प्रसंस्करण क्षमताओं के लिए मूल्यवान सिलिकॉन स्थान खाली हो जाता है। यह दृष्टिकोण ग्रोग को पारंपरिक, हार्डवेयर-केंद्रित वास्तुशिल्प मॉडल की बाधाओं को मौलिक रूप से बायपास करने की अनुमति देता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ग्रोक की सरलीकृत वास्तुकला चिप से बाहरी सर्किटरी को हटा देती है ताकि प्रति वर्गमिलीमीटर अधिक प्रदर्शन के साथ अधिक कुशल सिलिकॉन डिज़ाइन प्राप्त किया जा सके। इससे कैशिंग, कोर-टू-कोर संचार, सट्टा और आउट-ऑफ-ऑर्डर निष्पादन की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। कुल क्रॉस-चिप बैंडविड्थ और गणना के लिए उपयोग किए जाने वाले कुल ट्रांजिस्टर के उच्च प्रतिशत को बढ़ाकर उच्च कंप्यूट घनत्व प्राप्त किया जाता है ।ग्रोक सिस्टम आर्किटेक्चर की सरलता हाथ अनुकूलन, प्रोफाइलिंग और विशेष डिवाइस ज्ञान की आवश्यकता को समाप्त करती है जो पारंपरिक हार्डवेयर-केंद्रित डिज़ाइन दृष्टिकोणों पर हावी है। इसके बजाय ग्रोक कंपाइलर पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे सॉफ़्टवेयर आवश्यकताओं को हार्डवेयर विनिर्देश को चलाने में सक्षम बनाया जाता है। ग्रोक उत्पाद अगली पीढ़ी की कम्प्यूट तकनीकों के निर्माण के लिए आवश्यक विविध, वास्तविक दुनिया के कम्प्यूटेशन सेट को जल्दी से अनुकूलित करने की सुविधा प्रदान करते हैं। मशीन लर्निंग की तैनाती और निष्पादन को सरल बनाकर, ग्रोक एआई अनुप्रयोगों और अंतर्दृष्टि के लाभों को बहुत व्यापक दर्शकों तक विस्तारित करना संभव बनाता है। संपूर्ण प्रणाली - सॉफ़्टवेयर और हार्डवेयर - ग्रोक की तकनीक का उपयोग करने वाले सभी लोगों के लिए अनुभव को काफी सरल और बेहतर बनाता है ।ग्रोक एआई अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए डीप लर्निंग इंफरेंस प्रोसेसिंग के लिए आदर्श है, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि ग्रोक चिप एक सामान्य-उद्देश्य, ट्यूरिंग-पूर्ण, कंप्यूट आर्किटेक्चर है। यह किसी भी उच्च-प्रदर्शन, कम विलंबता, कंप्यूट-गहन कार्यभार के लिए एक आदर्श प्लेटफ़ॉर्म है ।पाठकों को बताता चलूं कि इसको बनाने के पीछे का उद्देश्य ये है कि ये लोगों के पूछे गए सवालों का जवाब देने और बाकी अन्य कामों को आसान बनाएगा ।यदि कोई भी यूजर ग्रोक से कोई भी सवाल करना चाहता है, तो उसे एक्स पर @ग्रोक को टैग करके पूछ सकते हैं। इसके अलावा, ग्रोक एआइ की आधिकारिक वेबसाइट ग्रोक डाट कॉम पर जाकर भी कोई भी व्यक्ति ग्रोक से अपने कोई भी सवाल पूछ सकते हैं। उल्लेखनीय है कि ग्रोक 3 एआइ मॉडल, अपने पिछले जनरेशन(ग्रोक 2 एआइ मॉडल) से दस गुना तेज और एक बहुत ही पावरफुल एआइ चैटबाट मॉडल है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह सुपीरियर रीजनिंग और बड़े प्रीट्रेनिंग नॉलेज का ब्लेंड कहा जा सकता है। ये चैटबॉट कोडिंग, मैथमेटिक्स, इमेज क्रिएशन, इंस्ट्रक्शन-ड्रिवन टास्क्स और रीजनिंग जैसे कई काम कर सकता है। ये प्रॉब्लम्स सॉल्व करने के साथ-साथ गेम्स भी बना सकता है। सच तो यह है कि यह तकनीकी रूप से बहुत ही सक्षम, संवाद-कला में अद्वितीय(बेबाकी से जबाब देने वाला) मॉडल है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह मानव जैसे तर्क(लोजिक) और ह्यूमर के साथ जवाब देता है। यहां तक कि यह स्लैंग और अभद्र भाषा का इस्तेमाल करने से भी परहेज नहीं कर रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में ग्रोक द्वारा अभद्र भाषा के इस्तेमाल की हरकत के कारण बात इतनी ऊपर तक पहुंच गई कि आईटी मंत्रालय ने ग्रोक एआइ को बनाने वाली कंपनी एक्स (जिसे पहले ट्विटर के नाम से जाना जाता था) को जवाब तलब किया है। पाठकों को बताता चलूं कि ग्रोक अन्य चैटबॉट से काफी अलग है। वास्तव में, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि ग्रोक को एक्स पर मौजूद डेटा से प्रशिक्षित किया गया है, जिसमें सोशल मीडिया पोस्ट, बातचीत और ट्रेंड्स शामिल हैं। इससे यह इंटरनेट पर ट्रेंडिंग लैंग्वेज और स्लैंग जैसी जानकारियों को समझता है और उसी अंदाज़ में जवाब देता है ।सच तो यह है कि इसे इस तरह से डिजाइन/निर्माण किया गया है कि यह यूजर्स के साथ मजाकिया और संवादात्मक तरीके से बात करे। दूसरे शब्दों में कहें तो, यह मजाकिया (ह्यूमर) और बग़ावत वाले लहजे में जबाब देता है ।इसे हम कुछ यूं समझ सकते हैं। मतलब कि अगर यूजर सीधा सवाल पूछता है, तो जवाब भी सीधा होता है, लेकिन अगर यूज़र अनौपचारिक या तीखी भाषा इस्तेमाल करता है, तो ग्रोक भी उसी लहजे में जवाब दे सकता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ग्रोक, यूजर्स के सवालों का जवाब देने के लिए दो मोड्स का इस्तेमाल करता है। इसमें पहला 'रेगुलर मोड' है, जिसमें यह संयमित और सामान्य भाषा में जवाब देता है। वहीं 'अनहिंज्ड मोड' में यह बिना फ़िल्टर के जवाब देता है, जो कभी-कभी चौंकाने(आपत्तिजनक/अनफिल्टर्ड) वाला हो सकता है। वास्तव में, यह इसका अनहिंज्ड मोड ही वजह है कि ग्रोक यूजर्स को रिप्लाई में कई बार अपशब्द(अनफिल्टर्ड लैंग्वेज) तक कह देता है। ग्रोक अपनी सर्वांगीण क्षमताओं के कारण यूजर्स के बीच इन दिनों खास चर्चा का विषय बना हुआ है। एक्स एआई ने ग्रोक को इस विचार के साथ विकसित किया है कि यह मानवता के लिए सहायक सिद्ध हो सके। कंपनी का मिशन है कि वह ब्रह्मांड के मूलभूत सवालों जैसे कि जीवन का उद्देश्य, ब्रह्मांड की उत्पत्ति, और अंतरिक्ष में हमारी स्थिति को समझने में मदद करे। वास्तव में,ग्रोक एआइ एक बड़ा भाषा मॉडल है, जिसे टेक्स्ट बनाने, बदलने या उसका विश्लेषण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह इंटरनेट सर्च कार्यक्षमता और छवि निर्माण सहित उन्नत जनरेटिव एआई क्षमताएँ भी प्रदान करता है, जो इसे विभिन्न कार्यों के लिए एक बहुमुखी उपकरण बनाता है ।ग्रोक का एक अनूठा और मौलिक लाभ यह है कि इसे एक्स प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से दुनिया का वास्तविक समय का ज्ञान है। यह उन मसालेदार सवालों के भी जवाब देने में सक्षम है, जिन्हें अधिकांश अन्य एआइ सिस्टम द्वारा खारिज कर दिया जाता है ।ग्रोक वर्तमान घटनाओं के बारे में वास्तविक समय के उत्तर देने के लिए एक्स का लाभ उठाता है। ग्रोक एक्स एआइ के ऑरोरा, जो एक अलग वीडियो मॉडल है, का उपयोग करके छवियां उत्पन्न करता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि ऑरोरा एक ऑटोरिग्रैसिव इमेज जेनरेशन मॉडल है।ऑटोरिग्रैसिव सांख्यिकीय तकनीक को संदर्भित करता है, जिसका उपयोग मॉडल यह अनुमान लगाने के लिए करता है कि अनुक्रम में आगे कौन सी सामग्री आने की सबसे अधिक संभावना है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ग्रोक और चैटजीपीटी या लामा जैसे अन्य जनरेटिव एआई उत्पादों के बीच एक बड़ा अंतर यह है कि ग्रोक पूरी तरह से एक्स सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के भीतर काम करता है। ग्रोक उत्पादकता से संबंधित सवालों के जवाब दे सकता है, टेक्स्ट का विश्लेषण कर सकता है और गणित और कोडिंग समस्याओं को हल कर सकता है। यह कई अन्य कार्य भी कर सकता है जो जनरेटिव एआई व्यवसाय के लिए कर सकता है। हालाँकि, इसका डेटा एक्स प्लेटफ़ॉर्म के भीतर ही रहता है। वास्तव में ग्रोक का लक्ष्य उपयोगकर्ताओं को एक बाहरी, नया दृष्टिकोण प्रदान करना है, जो सामान्य मानवीय सोच से परे हो। ग्रोक की खास बात यह है कि यह जटिल सवालों के जवाब में भी स्पष्टता और संक्षिप्तता बनाए रखता है। जैसा कि ऊपर बता चुका हूं कि इसकी शैली संवादात्मक शैली है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि ग्रोक की जानकारी लगातार अपडेट होती रहती है, जिससे यह नवीनतम घटनाओं और खोजों के बारे में भी बता सकता है। इसकी बहुभाषी क्षमता के कारण यह हिंदी सहित कई भाषाओं में आसानी से संवाद कर सकता है, जिससे यह वैश्विक उपयोगकर्ताओं के लिए सुलभ है। भारत में भी यह इसीलिए लोकप्रिय हो रहा है, क्यों कि यहां अधिकतर हिंदी का प्रयोग किया जाता है। ग्रोक उपयोगकर्ताओं द्वारा अपलोड की गई सामग्री, जैसे कि चित्र, कोई पीडीएफ और कोई टेक्स्ट फाइल्स, आदि को आसानी से समझ सकता है। ग्रोक न केवल नवीनतम वैज्ञानिक अनुमानों के आधार पर जवाब देने में सक्षम है, अपितु यह जवाबों को रोचक तरीके से प्रस्तुत करने की अभूतपूर्व क्षमताएं रखता है ।यह असामान्य(एब्नार्मल), फिलासीफिकल (दार्शनिक) सवालों तक के जवाब देने में सक्षम है। बहरहाल कहना ग़लत नहीं होगा कि हालांकि, ग्रोक एक बेहद शक्तिशाली ए आइ है, लेकिन इसकी अपनी कुछ सीमाएँ भी हैं। उदाहरण के लिए, यह स्वतंत्र रूप से नैतिक निर्णय नहीं ले सकता है। वास्तव में सच तो यह है कि मशीन में इंसान की भांति स्वाभाविक बुद्धिमत्ता और ज्ञान का अभाव होता है। एक इंसान अपनी बुद्धिमत्ता, ज्ञान, और समझ से संज्ञान में होता है। इंसान नई सांदर्भिक स्थितियों का सामना करने के लिए अपने अनुभव और सीख से सीधे निर्णय ले सकता है, वहीं मशीन कितनी ही आधुनिक क्यों न हो जाए, मशीन आखिर मशीन ही होती है ।साथ ही, पाठकों को बताता चलूं कि ग्रोक केवल वही चित्र संपादित कर सकता है, जो उसने पहले उत्पन्न किए हों। हाल फिलहाल, ग्रोक के बारे में यह बात कही जा सकती है कि यह लगातार उन्नत किया जा रहा है ।आने वाले समय में यह अधिक भाषाओं तक अपनी पहुंच बना सकेगा, और अधिक अच्छे से चीजों का विश्लेषण कर सकेगा, टेक्स्ट, पीडीएफ को और अधिक बेहतरी से समझ सकेगा, ऐसी उम्मीदें की जा सकतीं हैं ।आने वाले समय में यह मानवीय भावनाओं को भी और अधिक बेहतरी से समझ सकेगा, लेकिन यह मानव का हूबहू विकल्प नहीं हो सकता है ।आने वाले समय में, शिक्षा, अनुसंधान, और यहाँ तक कि व्यक्तिगत सहायता के क्षेत्र तक में भी यह क्रांति ला सकता है। यहां यह भी कहना ग़लत नहीं होगा कि ग्रोक आज ग्रोथ लालबुझक्कड़ की तरह लोगों के सवालों का धड़ाधड़ जवाब दे रहा है, लेकिन यह कोई अजूबा नहीं है। दरअसल, आज सोशल मीडिया पर हम सभी ने जाने अनजाने में बहुत सा डाटा शेयर कर दिया है और ग्रोक वही सब रिकार्डेड बातें/मैटीरियल एआइ एल्गोरिद्म की सहायता से हमें अविलम्ब बता रहा है। सच तो यह है कि आज हम भारतीयों की नहीं अपितु संपूर्ण विश्व की महत्वपूर्ण जानकारियां तकनीक में एडवांस लोगों के पास उपलब्ध हैं। अंत में यही कहूंगा कि यह ठीक है आज हम तकनीक के क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ते चले जा रहे हैं, लेकिन तकनीक का सही इस्तेमाल किया जाना बहुत आवश्यक है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट

मैंने एसा मुक़द्दर नहीं देखा,

बरसों गुज़र चुके हैं मैंने तेरा चेहरा नहीं देखा,
नींद तो आती है मगर ख़्वाब दुजा नहीं देखा।
किनारे से अंदाज़ए तुफ़ां नहीं होता सुन तो लो,
नादान है जिसने ईश्क़ का दरिया नहीं देखा।
उदासियों की दोस्ती ग़मों से होने लगी अब तो,
किसी हसीन शै को फ़िर मुस्कुरा के नहीं देखा।
तुफ़ां की कश्मकश से किनारे तो आ लगी कश्ती,
साहिल पे कोई डुबे मैंने एसा मुक़द्दर नहीं देखा।
मुद्दत से लिखरहा है,जिसके लिए बेख़बर है वो,
तुझ जैसा मुश्ताक़, हमने सुख़नवर नहीं देखा।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज़
हरदा मध्यप्रदेश

सोनयोदिया में दो मंत्रियों के खिलाफ प्रदर्शन, लोगों ने डिप्टी कलेक्टर को हिरासत में लिया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड
ओड़िशा

भूबनेश्वर : राजस्व मंत्री ने मयूरभंज जिले के बांगिरीपोशी और बिशोई ब्लॉकों के कुछ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा नहीं किया था, इसलिए कुछ बदमाशों के एक समूह ने सोनायोदिया रेलवे क्रॉसिंग के पास मंत्री को ले जा रहे वाहन पर हमला कर दिया। उन्होंने वाहन में तोड़फोड़ की और स्थानीय डिप्टी कलेक्टर को हिरासत में ले लिया ।घटनास्थल पर तनाव व्याप्त है। गुस्साए लोगों ने पुलिस पर भी हमला किया है। एक रूढ़िवादी व्यक्ति का सिर पत्थर फेंककर फोड़ दिया गया। बिसोई क्षेत्र के 18 गांव और बांगिरीपोशी क्षेत्र के 39 गांव मूसलाधार बारिश और ओलावृष्टि से प्रभावित हुए हैं। लेकिन मंत्री के दो-तीन गांवों का दौरा करने और वापस लौटने से प्रभावित लोग आक्रोशित हो गए। वहां उत्साह का माहौल था क्योंकि सहायता प्राप्त हुए तीन दिन हो चुके थे। एसपी ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**